वैज्ञानिक चिंतन की आवाज़

तर्कशील पथ

TARKSHEEL

मार्च 2019



106वीं भारतीय विज्ञान कांग्रेस में (4)



मन की बीमारियां : भूतबाधा, देवी सवारना (19)



महिला दिवस की सार्थकता (24)



शहीद भगत सिंह के आस्तिक होने का प्रचार क्यों? (14)

₹20

किसी भी राज्यसत्ता के लिए यह बेहद लाभदायक बात होती है कि उसकी प्रजा धर्म के अंधविश्वास में फंसी रहें : मार्कस वारो

(23 मार्च शहीदी दिवस पर विशेष)

तो हमें देश की सुरक्षा से खतरा है

पाश

यदि देश की सुरक्षा यही होती है
कि बिना ज़मीर होना
जिंदगी के लिए शर्त बन जाये
आंख की पुतली में
हाँ के सिवाय कोई भी शब्द
अश्लील हो
और मन बदकार पलों के सामने
दण्डवत झुका रहे
तो हमें देश की सुरक्षा से खतरा है।

हम तो देश को समझे थे घर-जैसी पवित्र चीज़
जिसमें उमस नहीं होती
आदमी बरसते मेंह की गूँज की तरह
गलियों में बहता है
गेहूं की बालियों की तरह खेतों में झूमता है
और आसमान की विशालता को अर्थ देता है
हम तो देश को समझे थे आलिंगन-जैसे
एक एहसास का नाम
हम तो समझते थे काम-जैसा कोई नशा
हम तो देश को समझते थे कुरबानी-सी वफ़ा
लेकिन गर देश
आत्मा की बेगार का कोई कारखाना है
गर देश उल्लू बनने की प्रयोगशाला है
तो हमें उससे खतरा है।

तर्कशील पथ पत्रिका हेतु शुल्क स्टेट बैंक ऑफ इडिया, शाखा मॉडल टाऊन, अम्बाला शहर (हरियाणा) में रैशनलिस्ट सोसायटी हरियाणा के नाम से खाता सं. 30191855465 IFSC: SBIN 0002420 में जमा करा सकते है। शुल्क Paytm के माध्यम से मोबाईल नम्बर 9416036203 पर या कोड को स्कैन करके भी भेजा जा सकता है। शुल्क भेजने के बाद इसी मोबाइल नम्बर पर अपना पता SMS या WhatsApp करें।

Reg.No.HARHIN/2014/60580

संपादक : बलवन्त सिंह - 94163-24802

संपादक सहयोग :-

गुरमीत अम्बाला - 94160-36203
बलबीर चन्द लौंगोवाल - 98153-17028
हेम राज स्टेनो - 98769-53561

पत्रिका शुल्क :-

द्विवार्षिक : 200/- रू.
विदेश : वार्षिक : 25 यू.एस.डॉलर

पत्रिका वितरण :

गुरमीत अम्बाला
Email: tarksheeleditor@gmail.com

रचनाएं, पत्र व्यवहार व शुल्क भेजने के लिए पता:

बलवन्त सिंह (प्रा.)
म.नं. 1062, आदर्श नगर,
नजदीक पूजा सीनियर सैकण्डरी स्कूल, पिपली।
जिला कुरूक्षेत्र - 136131 (हरियाणा)
Email: tarksheeleditor@gmail.com

तर्कशील सोसायटी की गतिविधियों से जुड़ने के लिए

www.facebook.com/tarksheelindia
पेज को लाईक करें।

पत्रिका के प्रमुख लेखों को निम्न ब्लॉग पर भी पढ़ा जा सकता है-

http://tarksheelblog.wordpress.com
पत्रिका को पढ़ने के लिए लॉग ऑन करें:
www.tarksheel.org
Tarksheel on Whatsapp : 9416036203
Tarksheel Mobile App :
Readwhere.com
Tarksheel on Twitter:
@gurmeeteditor

मई 2019 अंक में विशेष

नंदनी जाधव का महाराष्ट्र अंध श्रद्धा निर्मूलन समिती में अतुलनीय योगदान

महाराष्ट्र अंध श्रद्धा निर्मूलन समिती की राज्य स्तरीय नेत्री नंदनी जाधव के साथ की गई मुलाकात तर्कशील पाठकों, कार्यकर्ताओं एवं स्नेह करने वालों के लिए एक प्रेरक एवं ज्ञानवर्धक जानकारी लिए होगी। नंदनी जाधव अनिस की महिला कार्यकर्ता है, जो डा. नरेन्द्र दाभोलकर की शहादत के बाद समिति में पूर्णकालिक कार्यकर्ता के रूप में जुड़ी।

संकेतिका

मीटिंग की सूचना

तर्कशील सोसायटी हरियाणा की आगामी द्विमासिक मीटिंग, दिनांक **19 मई, 2019** को दिन रविवार, कैथल में प्रातः 10.00 से 3.00 बजे तक होगी।

नोटः तिथि, स्थान व समय के बारे में सभी साथी फोन संपर्क करके सुनिश्चित कर लें।

सम्पर्क सूत्रः
d".kjk lS %*92552 75781*

नोट : किसी भी तरह की कानूनी कारवाई सिर्फ जगाधरी यमुनानगर (हरियाणा) की अदालत में ही हो सकेगी।

सम्पादकीय

पुलवामा में एक आतंकवादी हमले में मारे गये चालीस सीआरपीएफ जवानों की मृत्यु का समाचार अति दुखदायी है। पूरे भारत को इस घटना ने झंझोड़ कर रख दिया है। यह कारनामा करने वालों की जितनी भी निंदा की जाये उतनी ही कम है। सभी जवान मेहनती श्रेणी, निम्न-मध्यवर्गीय किसानों, मजदूरों, मुलाज़मों, दुकानदारों आदि के बच्चे थे। किसी भी बड़े अरबपति, सियासी नेता या कार्पोरेट का बच्चा कभी फौज में भर्ती नहीं होता। पेट की जरूरत हमारे बच्चों को इस आग में कूदने के लिए मजबूर करती है, जहां देश की सुरक्षा के नाम पर सदैव उन पर मौत मंडराती रहती है। दोषियों को सख्त सजायें मिलनी अतिजरूरी है परंतु यह सजायें सिर्फ दोषियों को ही मिले, यह जरूरी है। इस अति दुखांतक घटना की आड़ में अपने सियासी मनसूबों के लिए किसी विशेष धर्म, फिरके या किसी विशेष क्षेत्र के खिलाफ जहरीला प्रचार भी देश के हित में नहीं है। सत्तासीन राजनीतिक दलों की हर अच्छी-बुरी घटना को सही परिपेक्ष्य में देखने के स्थान पर सिर्फ अपने सियासी उद्देश्यों को अपने हितों के अनुकूल ढाल कर पेश करना, प्रचारना व लोगों को उक्साने का कार्य इस समय देश में शीर्ष पर है।

पुलवामा की घटना के बाद फासीवादी ताकतों द्वारा देश के विभिन्न हिस्सों में पढ़ रहे कश्मीरी छात्रों का जीना दूभर कर दिया था। यह भारत के तथाकथित लोकतंत्र पर एक बड़ा प्रश्नचिह्न है। इन ताकतों द्वारा देश को एक सांप्रदायिक जंग में झोंका जा रहा है। तथाकथित राष्ट्रवाद के नाम पर आज देश में धार्मिक अल्पसंख्यक, बुद्धिजीवी व संघर्षशील लोगों का जीना हराम कर रखा है। सत्ता के साये में बैठे सांप्रदायिक संगठनों की ओर से लगातार कई दशकों से इस सांप्रदायिक प्रचार को योजनाबद्ध ढंग से किया जा रहा है। गौरक्षा, मंदिर निर्माण, धर्म आदि के नाम उक्त राजनीति की जा रही है। पिछले दिनों गाय के मुद्दे पर दिये एक बयान के कारण प्रसिद्ध अदाकार नसीरूद्दीन शाह व उस के बच्चों को मार देने तक की धमकियों का सामना करना पड़ा। उसने केवल इतना कहा था कि गौवध जितना महत्व ही एक मनुष्य को मारने का देना चाहिये। उत्तरप्रदेश के भाजपा मुखिया ने तो उसको पाकिस्तान एजेंट तक की संज्ञा दे दी। जो लोग सांप्रदयिक हिंसा को उत्साहित करते हैं, उनके विरुद्ध कारवाई नहीं की जा रही परंतु जो लोग जन-मुद्दों पर लोगों को जागृत करते हैं, उनको जेल की सलाखों के पीछे धकेला जा रहा है। ऐसे व्यवहार से लोगों का ध्यान मूल आर्थिक व सामाजिक मुद्दों की ओर नहीं जाता। देश में हाशिये से बाहर धकेले गये लोगों की बात करने वाले आज देशद्रोही करार दिये जा रहे हैं। असहमति और देशद्रोह में बहुत अंतर होता है। असहमति के स्वरों को दबाना लोकतंत्र के लिए निर्माण चिह्न नहीं है।

106वीं भारतीय विज्ञान कांग्रेस में अवैज्ञानिक प्रयास

-रविन्द्र पांडे

भारतीय विज्ञान का कांग्रेस का शुभारम्भ प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 3 जनवरी को किया और इसके साथ ही इस विज्ञान कांग्रेस की अवैज्ञानिक करण कि प्रक्रिया शुरू हो गई। वैसे तो भारतीय विज्ञान कांग्रेस किसी परिचय का मोहताज नही हैं। सभी जानते हैं कि भारत के तमाम आग्रणी विज्ञान और तकनीकी की संस्थाए बढ़चढ़ कर इसमें भाग लेती हैं। इन प्रमुख संस्थाओं जैसे डीआरडीओ, इसरो, भाभा आटोमिक रिर्सच सेन्टर, सीएसआइआर और सीएसएआर जैसी संस्थाओं में वैज्ञानिक तथा 15000 से ज्यादा विभिन्न यूनिवर्सिटी के युवा वैज्ञानिक भाग लेते हैं। और इन के बीच में अवैज्ञानिक परम्परा का घुसपैठ करा देना भारतीय विज्ञान कांग्रेस के लिए दुखद व एक धब्बा है। अपने इतिहास को महान सभी मानते हैं चीनी, जापानी, हिन्दुस्तानी, यूनानी, मिस्र, रोम, इराकी, इरानी सभी दावा करते हैं कि उनके पूर्वजों ने एक बहुत अच्छी सभ्यता विकसित कर ली थी और उस समय के हिसाब से वे प्रगतिशील थे या अपने ज्ञान का उपयोग वे रहस्यों को समझने के लिए करते थे। जिन रहस्यों को वो नही समझ सकते उनके बारे में मिथ्य गढ़ लेते थे, जैसे धरती शेष नाग के फन पर खड़ी हैं, या बैल के सींग पर। वैसे ही प्राकृति के हर दैवीय चीजों को किसी देवता से गढ लेते थे जैसे नदियां सभी देवीयों के समान थी। वर्षा, प्रातः काल, भीष्ण तूफान, गर्जन आदि सभी देवता थे। समुद्र भी उनके लिए एक देवता था और कुछ महामारी को भी देवी-देवता का नाम दे दिया था। पर आज के युग में परमाणु से लेकर के अन्तरिक्ष तक को बहुत से प्रयोगों से जाना जा चुका हैं। राहु केतु कि कल्पना के बजाय अब विज्ञान चन्द्र ग्रहण और सुर्य ग्रहण को भौगोलिक घटना मानता है बल्कि ये भी खोज कर चुका है सूर्य के ऊपर और ग्रहों की छाया भी पड़ती हैं जैसे शुक्र ग्रह की और ये अन्य खगोलीए धटनाएं हैं तथा मनघड़ंत कहानियों की जगह अब विज्ञान की गणनाओं ने ले ली है।

भारतीय वैज्ञानिक समाज अब एक दोराहे पर खड़ा है कि विज्ञान के प्रयोंगों को मानते हुए आगे की ओर बढ़ा जाये या फिर अपने पुरानी गढ़ी हुई कहानियों को अपनाते हुए पुरातन ज्ञान और विश्वगुरू का ढोल पीटा जाय। यही संघर्ष 106 वीं भारतीय विज्ञान कांग्रेस में देखने को मिला। मैं खुद वहां पर एक प्रतिभागी के हैसियत से गया था और जो देखा वो आपके सामने प्रस्तुत कर रहा हूं।

भारतीय विज्ञान कांग्रेस में चार महत्वपूर्ण कार्यक्रम होते हैं। एक मुख्य कार्यक्रम जिसमें 13 सेक्शन होते हैं। पर्यावरण, भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, अन्तरिक्ष विज्ञान, पृथ्वी विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान, समुद्र विज्ञान, प्रौद्योगिकी व तकनीक विज्ञान, एन्थ्रोप्लोजी, रक्षा विज्ञान, गणित, कंप्यूटर व सूचना तकनीक हैं। इन सब के समानान्तर सत्र होते हैं जिन सत्रों में अपने अपने विभाग के विशेषज्ञ भाग लेते हैं। रोजाना हर विभाग में करीब 20 से 25 शोध पत्र प्रस्तुत किये जाते हैं जिन पर विशेषज्ञ अपनी जानकारी के हिसाब से बहस करते हैं। इनमें प्रस्तुत हर शोध पत्र को प्रकाशित किया जाता हैं और पांच दिन के कांग्रेस के बाद भी इस पर बहस होती रहती हैं। दूसरा महिला साईंस कांग्रेस और तीसरा वैज्ञानिक संचार सम्मेलन और चौथा कार्यक्रम होता है। युवा किशोर वैज्ञानिक प्रोत्साहन योजना। इस में 11 से 17 साल के बाल वैज्ञानिक होते हैं जो बाल विज्ञान कांग्रेस में अपने प्रोजेक्ट को राष्ट्रीय स्तर पर ले गए होते हैं। इनके प्रौजेक्टस को सिर्फ प्रर्दशनी में रखा जाता है ताकि अन्य बच्चे इसे देख कर प्रेरणा लें। इसमें कोई शोध पत्र आदि कि प्रस्तुति नहीं होती और ना ही प्रोजेक्टस के बारे में कुछ प्रकाशन होता है। शाम को एक सत्र होता है जिसे 'वैज्ञानिक से मिलिए' कार्यक्रम कहते हैं । इस कार्यक्रम में बाल वैज्ञानिकों को अपनी बातें मुख्य वैज्ञानिकों के सामने रखनी होती हैं ताकि वे उनका जबाब दे पायें पर

अबकी बार बैज्ञानिकों ने अपनी बात यवुा वैज्ञानिकों के सामने रखी, वही इस विज्ञान कांग्रेस का काला अध्याय हैं जिसे विज्ञान कांग्रेस के समूह अध्यक्ष मनोज चक्रवर्ती को समापन समारोह में माफी मांगनी पड़ी और कांग्रेस की कार्यवाही से उन दो विबादास्पद वैज्ञानिकों के सत्र को निकालना पड़ा। बाल विज्ञान कांग्रेस में वास्तव में हुआ क्या था? 4 जनवरी को राष्टीय बाल विज्ञान कांग्रेस का उद्‌धाटन हुआ जिस के मुख्य अतिथि थे श्री अविनाश राय खन्ना जो भारतीय रेड क्रास सोसायटी के उपाध्यक्ष व भाजपा के सांसद हैं। इसी उद्‌धाटन सत्र में तीन नोबल पुरस्कार विजेता भी शामिल थे Prof Thomos C Sudopoch Stanford University, Prof. Avram Hershko TIIT Haifa Israel and Third F Duncan M. Haldane Princeton University. इन तीनों नोबल पुरस्कार विजेता से किशोर वैज्ञानिकों से बातचीत के लिए आग्रह किया गया जिसे प्रबन्धको ने नकार दिया चूंकि शाम के समय oSKfud I s fefy, (Meet the Scientist) कार्यक्रम पहले से ही प्रस्तावित है। इसका हवाला देकर के नोबल पुरस्कार विजेता से सवाल जबाब नहीं करवाया गया बल्कि उसकी जगह अविनाश राय खन्ना ने मा दी सरकार के विज्ञान के क्षैत्र में किए गए कामों को रखा। असली एजेण्डा शुरु होता है शाम को जब वैज्ञानिक से मिलिए प्रोग्राम में मिस्टर कनन जगनाथ कृश्नन जो किअलियार यूनिर्वसीटी तमिलनाडू में सीनीयर रिसर्च वैज्ञानिक हैं। तथा दूसरे जी नागेशवर राव जो कि आन्ध्रायूनिवर्सिटी के कुलपति हैं, उन्होंने अपने भाषण की शुरुआत ही केन्द्रीय मंत्री हर्षवर्धन सिंह के वंदना से की और कहा कि मैं जो कुछ भी हूं वह इस केन्द्रीय मंत्री की वजह से हूं। कमाल तो तब हो गई जब मिस्टर कनन जगनाथ ने हर्षवर्धन को अब्दुल कलाम से ज्यादा महान वैज्ञानिक बता दिया। मिस्टर कनन जगनाथ कृष्णन जिन्होंने रिनुअल एनर्जी सिस्टम में पीएचडी किया है और आजकल तमीलनाडू में महर्षि वेदार्थी के आश्रम में रहकर ब्रह्मांड की उत्पत्ति पर शोध कर रहे हैं और उनके मार्गदर्शक हैं। योगी सत्यमूर्ति जो कि पेशे से लेब टेक्निशियन हैं। जो व्यक्ति भौतिकी का छात्र भी ना रहा हो और जिसे ना ही भौतिक विज्ञान की समझ हो, वह किस तरह से आइंसटीन और न्यूटन के सिद्धान्त को गलत ठहरा सकता हैं। मिस्टर कनन ने जो वक्तव्य दिया उसका विषय वस्तु डार्क मैटर और डार्क एनर्जी था जो कि किसी तरह से स्कूल स्तर के बच्चों के लिए नहीं था। 300 मौजूद बाल विज्ञानिकों में से 150 तो 8वीं क्लास के स्तर के थे। और 150 बच्चे 9वीं से 12 क्लास के थे।डार्क एनर्जी जैसे गूढ़ विषय भी इनके सलेबस में नही होंगे। जिन बच्चों ने अभी न्यूटन का गुरुत्वाकर्षण सिद्धान्त ही नहीं समझा, आइंस्टीन के थ्योरी ऑफ रिलेटिविटी को नही समझा, उनके सामने न्यूटन और आइंसटीन के सिद्धान्तों को गलत समझाना कितना बड़ा धोखा है। असल में इन दोनों वैज्ञानिकों को केन्द्रीय मंत्री हर्षवर्धन अपने साथ लाये थे और आयोजकों पर दबाब डाला था कि इनको अवसर दिया जाये। भारतीय विज्ञान कांग्रेस संघ के विशेषज्ञ भी जानते थे कि इन दोनों वैज्ञानिकों के शोध पत्र पाखंड के अलावा कुछ नही हैं और मूल विज्ञान कांग्रेस के सत्रों में इन्हें बहुत ज्यादा चुनौती मिल सकती थी और बहुत बुरी तरह से खारिज किया जाता, इसलिए इन्हें बाल विज्ञान कांग्रेस एक आसान जगह लगी, जहां 95 प्रतिशत विद्यार्थी 5वीं से 10वीं कक्षा के छात्र थे और केवल 5 प्रतिशत 11वीं और 12वीं के थे। पर ये मामला यहां भी नहीं बच सका। चंूकि एनडीटीवी के कैमरामैन और पत्रकार इस बात को कवर कर रहे थे और उन्होंने इसे बाल विज्ञान कांग्रेस से बाहर लाकर मुख्य चर्चा का विषय बना दिया।

कन्नन ने जो बाते कही हैं, मैं एक-एक कर आपके सामने प्रस्तुत कर रहा हूं, बिना अपना कोई तर्क दिये। आप खुद सोच समझ सकते हैं कैसे अवैज्ञानिक बातों को बच्चों के बीच में रखा गया। आप एक बार अपने विवेक से ही इसका मूल्यांकन करें।

दुनिया में कहीं भी गुरुत्वाकर्षण नही होता । अगर होता तो सभी बड़े प्लानेट छोटे प्लानेट को अपनी तरफ खींच चुके होते। न्यूटन यह नहीं बता सके कि गुरुत्वाकर्षण का रिपल्सिव फोर्स क्या है? न्यूटन ने बता भर दिया कि गुरुत्वाकर्षण बल क्या है पर उसे मालूम भी नहीं था कि यह बल क्यों हैं? और उसने स्वीकार किया था कि मैं गुरुत्वाकर्षण के बारे में बहुत

कुछ नही जानता। ये गुरुत्वकार्षण कि कहानी सामने कैसे आयी इसे सुनते हैं।

पहला आदमी था, Aristotle जिसे विज्ञान का पितामह कहा जाता है, जिसने अनुसार धरती ब्रम्हाड के केन्द्र में हैं और पूरा ब्रम्हांड उस के चारों ओर धूमता हैं। Ptolemy जिसने और ज्यादा साबित किया कि धरती ही ब्रम्हांड का केन्द्र पृथ्वी है। इसके बाद Nicolus Copernecs ने साबित किया कि धरती केन्द्र में नहीं है, सूर्य केन्द्र में है, और इस पर किसी ने विश्वास नहीं किया। उसके बाद Johnnè Kepler आये और कि ग्रह सूर्य का चक्कर गोलाई में नहीं बल्कि अण्डाकार पथ से करते हैं। लेकिन वे भी इस बात कि व्याख्या नही कर सके थे कि वो इलिप्टीकल पाथ में ही क्यों सूर्य का चक्कर लगाते हैं। इसके बाद न्यूटन आये और इस थ्योरी को समझने कि कोशिश की और गुरुत्वाकर्षण का सिद्धान्त दिया। पर वास्तव में कोई गुरुत्वाकर्षण होता ही नही है। मैं आपको समझाता हूं कि यह अण्डाकार पथ में ही क्यों धूमती है। सूर्य पृथ्वी से 333 हजार गुणा बड़ा है। आप बताइये कौन भारी होगा, सूर्य या पृथ्वी, सूर्य भारी होगा न। अभी एक रिसर्च सामने आया है कि ब्रह्माण्ड में 4.6 प्रतिशत ही पदार्थ के रूप में है बाकी 95.6 प्रतिशत सब स्पेस हैं तो कौन भारी होगा निश्चित तौर पर स्पेस भारी होगा। इस से साबित होता हैं कि न्यूटन गलत है। कोई प्लेनेट किसी को आकर्षित नहीं कर रहा है बल्कि स्पेस में तैर रहे हैं और कोई गुरुत्वाकर्षण नहीं होता है। स्पेस चारों तरफ से पृथ्वी को दबा रहा है और यही वजह है कि पृथ्वी अपने आप को निकालना चाहती है इसलिए यह इलीप्टीकल सर्कल में घूमती है, बिना अपनी पोलरिटी को बदले।

तो मित्रो, आप बताइये, पृथ्वी चारों तरफ से दबाव दिया गया है। उसकी वजह से घूमती हैं या सूर्य के द्वारा केन्द्र कि तरफ खिंचाव कि वजह से। इसका नाम है सेल्फ कम्प्रेशिव सराउंडिग प्रेशर फोर्स। जैसे गीले कपड़े को निचोड़ा जाय तो क्या होगा पानी बाहर आयेगा ना, यही वो बल है। और इस बात को आइन्सटीन और न्यूटन नहीं समझ पाये। आइंसटीन ने एक बड़ा बलंडर किया है और दुनिया को गलत दिशा में घकेल दिया है। मैं उदाहरण से समझाता हूं। आइंसटीन को फिजिक्स की समझ नहीं थी। और गुरुत्वाकर्षण जैसी कोई चीज तो होती ही नही हैं। एक उदाहरण हम बिजली के बल्ब का लेते हैं। चारों तरफ अन्धेरा है, जैसे कि बल्ब जलाते हैं बल्ब के पास रोशनी तेज होती हैं। जैसे-जैसे हम बल्ब के पास जाते हैं तो रोशनी तेज होती है और जैसे-जैसे दूर जाते है, कम से कम होती जाती है। इसलिए जो आइंसटीन की थ्योरी है। E=MC2 बिल्कुल गलत है । यहां सी कोन्सटेंट है और लाइट भी। लाइट की स्पीड से ज्यादा तेज नहीं चल सकती इसलिए आइंसटीन कि यह थ्योरी पूरी तरह से गलत हैं ।

अगर आइंसटीन की थ्योरी सही है तो यह क्वांटम मैकेनिक्स के साथ मेल क्यों नहीं खा रही है। क्वांटम मैकेनिक्स और रिलेटिविटी क्यों नही आपस में मेल खा रही ? अगर आइन्सटाइन के समीकरण सही हैं तो यह क्वांटम इन्टैंगलमैंट के बारे में जबाब आइन्सटीन ने क्यों नही दिया ? आइन्सटीन ने डब्ल स्पलिट एक्सपेरिमेंट के बारे में जबाब क्यों नही दिया ? आइन्सटीन ने इन सब का जबाब नही दिया पर इसका जबाब मेरे पास है। मैं देता हूं इसका जबाब। अगर आप सभी प्रयोग को देखेंगे तो आप पायेगें कि जो थ्योरी मैं देने जा रहा हूं वह 21वीं सदी की सबसे अच्छी थ्योरी है, और सारे प्रयोगों पर सही साबित होती है। मेरा सुपर स्टैन्डर्ड मॉडल ही लागू होगा। इसे वैदम थ्री माडॅल के नाम से भी जाना जाता है। आधुनिक फिजिक्स तो पूरी तरह से खत्म हो जायेगी। मैंनें आपको बताया डार्क मैटर, डार्क एनर्जी, मास ,कोस्मोलोजिकल मूवमैंट ऑफ यूनिर्वस, ''क्लाइमैट चेंज जो कि गलत हैं'' आप थोड़ी देर में समझ जायेंगे। क्वांटम ऐन्टेगल एक्सपेरिमैंट का कोई जबाब अभी नहीं है जिसे मैने सुपर स्टैन्डर्ड मॉडल में बताया है। भविष्य में इसे 'वेदम सत्यम एक्सपेरिमैंट' के नाम से जाना जायेगा। अगले कुछ साल में हम एक एक्सपेरिमैंट करने जा रहे हैं जिसे हमारे वर्तमान प्रधान मन्त्री नरेन्द्र मोदी ने स्वीकृत किया है। गुरुत्वाकर्षण तरगों की जो वर्तमान थ्योरी है, गलत है। मैं बताना चाहूंगा कि क्यों गलत है और जो नई तरंगों के बारे में बताऊंगा उसका नाम प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नाम पर नरेन्द्र मोदी वेव्स होगी।

अगला ग्रेविटेशनल लेंसिंग इफैक्ट जिसे आप देखेंगे, उसे हम सूर्य ग्रहण प्रयोग में करेंगे और उसका नाम देंगे "हर्षवर्द्धन प्रभाव" यही वह आदमी है जिसने बड़ा परिर्वतन किया है। अगर कोई परिर्वतन आपको भविष्य में देखने को मिलगा तो वह माननीय मंत्री हर्षवर्द्धन के कारण ही होगा। एनडीटीवी के पत्रकार और दूसरे पत्रकार मेरी बातों को अभी लिख कर रख लें कि भारत में अब्दुल कलाम को जीनियस माना जाता है। सभी उनका सम्मान करते हैं पर माननीय मंत्री हर्षवद्धन जी अब्दुल कलाम से ज्यादा लोकप्रिय और महान आदमी हैं।

अगला जो डबल स्लीट एक्सपेरिमैंट हैं जिसे में ए बी कन्नन एक्सपेरिमैंट कहता हूं। आइन्सटीन ने समझा। सूर्य से घरती तक प्रकाश को पहुंचने में आठ मिनट लगते हैं अगर आइन्सटीन की बात सही है तो जब सूर्य मरेगा तो धरती सूर्य का चक्कर काटना छोड़ कर बाहर की तरफ भागेगी। पर घरती को आठ मिनट बाद पता लगेगा कि सूर्य हे ही नहीं इसलिए आठ मिनट वो अपने पथ में घूमेगी और उसके बाद वह बाहर की तरफ भागेगी। इसलिए आइंसटीन ने सोचा कि स्पेस में बैंड हैं, घुमाव हैं और उसको स्पेस टाइम एनर्जी का नाम दिया। पर वास्तव में कोई ऐसा बैंड नही होता। कोई प्लानटे इस लिये घूमता है क्योंकि स्पेस उस प्लानेट को चारों तरफ से दबाता है और इसलिए वहां पर स्पेस बैंड होता है। वेदात्री जो कि मेरे गुरु हैं ने खोज किया कि स्पेस सेल्फ कम्प्रेसिव फोर्स होता है। मैंने नहीं खोजा इसे। यह वेदात्री की खोज है कि जो स्पेस का गुण है वो है सेल्फ कम्प्रेसिव सराउंडिंग प्रेशर फोर्स। आइन्सटीन ने कहा है कि मास स्पेस में कार्य करता है पर उन्हें घ्यान ही नहीं रहा कि स्पेस मास में काम करता है। चूंकि स्पस मास को चारों तरफ से दबाब डालता है तो घर्षण की बजह से रिपल्सिव फोर्स पैदा होता है। रिपल्सिव फोर्सिस जो पैदा होता है वह बहुत कम होता है। जब कोई ग्रह अपने इल्पिटिकल पाथ मे घूम रहा है तो सराउंडिंग स्पेस उस पर चारों तरफ से दबाव डालेगी। इस दबाव की बजह से रिपल्सिव फोर्स ग्रह से बाहर निकलेगा। और वो लगातार निकलेगा। और ये रिपल्सिव फोर्स निकलना तभी बन्द हो सकता है जब कोई प्लानेट और ग्रह चलना ही बन्द कर दे। चूंकि सेल्फ कम्प्रेसिव फोर्स काफी मजबूत है और यह सिर्फ उस ग्रह को गतिशीलता प्रदान करता है। अब चूंकि जो कम्प्रेसिव फोर्स फ्रेक्शन के कारण रिपल्सिव फोर्स पैदा करता है वो रिपल्सिव फोर्स कुछ नहीं है सिवाय एनर्जी के। तो इस तरह से हम कह सकते हैं कि जो एनर्जी का दुनिया में नया समीकरण बनेगा वो इस प्रकार होगा।

आइसीटन की तरह रिप्लसिव फोर्स Constant नही हैं। जब हम प्लानेट की तरफ जाते हैं तो वह बढ़ता है, जब हम प्लानेट से दूर जाते हैं वह कम होता जाता है और एक समय ऐसा भी आता है कि वो खत्म हो जाता है और स्पेस में मर्ज हो जाता है।

धरती जिसका कि 2/3 भाग पानी है, को दबाया जाये और वहां गैप है तो पानी को वहां चला जाना चाहीए था जहां खाली जगह है। अगर न्यूटन का सिद्धान्त सही होता तो धरती को ग्लोबल शेप में नही होना चाहिये था। अगर गुरुत्वकार्षण का बल सभी चीजों को अपनी और खीचते हैं तो किलामीटर तक ऊंचे मकान कैसे बन रहे हैं। पहाड़ कैसे खड़े हैं। पानी का लेवल कैसे बढ़ रहा है। जब धरती पर पानी का लेबल बढ़ता है तो क्या होता है, स्पेस मास के उपर है, क्योंकि यहां पर कोइ गैप नहीं है और स्पेस में एडजस्ट करने कि बहुत ताकत है। सैल्फ कम्प्रेसिव फोर्स धरती को चारों ओर से दबाव डालती है और पानी उस दबाव कि वजह से बाहर कि ओर निकलना चाहता है और यही कारण हैं कि सुनामी आती है, बाढ आती हैं। बिना किसी बल के किसी तरह का कोई प्रभाव नही होता।

स्टीफन हाकिंग्स ने 40 साल किया क्या हैं? क्या किया उन्होने? जबकि हम उनको अगुवा वैज्ञानिक माने बैठे हैं। मैं मीडिया के सामने आया और बयान दिया कि स्टीफन हाकिंग्स ने 40 सालों में कुछ नहीं किया। ब्लैकहोल की खोज आइंसटीन ने की थी ना कि स्टीफन हाकिंग्स ने। स्टीफन हाकिंग्स मशहूर हो गया पर उसे तो यह तक पता नही है कि जो ब्लैक होल बनता हैं वह खत्म कैसे होगा। स्टीफन के थ्योरी में ब्लैक होल का खात्मा बिल्कुल असम्भव हैं पर मेरी

थ्योरी में यह बिल्कुल आसानी से समझ जा सकता है। एक अनाड़ी आदमी भी समझ सकता है कि ब्लैक होल कैसे खत्म हेंगा। इसलिए मैने स्टीफन हाकिंग्स को कई इमेल कि आप दुनिया को गुमराह कर रहे हो। क्वांटम मैकेनिक्स मतलब एटम और एटम से छोटे ओब्जेक्ट की स्टडी करना। एटम के अन्दर क्या होता है। प्रोटोन, न्यूट्रान और इलैक्ट्रान होते हैं। 99 प्रतिशत प्रोटोन खाली होता है। तीनों क्वार्क मिला कर सिर्फ एक प्रतिशत जगह को घेरते है। अगर हम मान ले कि यहां कुछ नहीं हैं और ब्रह्मांड में सिर्फ एक प्रोटान है तो स्पेस इसे कम्प्रेस करेगा और इस से रिप्लसिव फोंस पैदा करेगी जिस के बजह से यह इलिप्टिकल पथ में घूमेगा। प्रौटान से जैसे जैसे दूर जाते जायेंगे। रिप्लसिव फोर्स धीरे-धीरे कम होता जायेगा और एक समय यह भी जीरो हो जायेगा और डार्क मैटर में तबदील हो जायेगा। जो स्पेस में रिप्लसिव फोंस और सेल्फ कम्प्रेसिव फोर्स के द्वारा जगह रोका जाता है वह डार्क एनर्जी है इसे अब तक कोई नहीं जान पाया है सिवाय मेरे। यह पहली परिभाषा है जो मैने डार्क एनर्जी की दी है। जब रिप्लसिव फोर्स की मात्रा ज्यादा हो जाती है तो वह इलैक्ट्रान में बदल जाता है। इलैक्टान जब बाहर निकल जाता है तो वह प्रकाश बन जाता हैं । प्रकाश और इलैक्टान कुछ नहीं है। सिवाय रिप्लसिव फोसै के। वैज्ञानिकों को तो अब तक यह समझ ही नहीं आया है कि हुआ क्या हैं। अगर यहां रिप्लसिव फोंस हैं तो प्रौटान के अन्दर तीन इलेक्टान होने चाहिये और और प्रोट्रान के अन्दर भी तीन इलेक्ट्रान होने चाहिये। यह थ्योरी विज्ञान का अन्तिम छोर हैं, यहां डैड एंड है। मै आपको उदाहरण देता हूं ।

मान लीजिये कि हमारी जनसंख्या दस हजार है तो कुछ समय पीछे चले तो यह 5 हजार होगी और कुछ समय पहले यह 1000 होगी और पीछे कि तरफ चलते जायें तो 500 होगी। इसी प्रकार पीछे चलते जायेंगे तो एक समय ऐसा भी आयेगा कि धरती पर सिंफ एक महिला और एक पुरुष हां`गे उस समय पृथ्वी भी एक ही होगी और भगवान भी एक ही होगा तो ऐसा क्या है कि इस समय इतने सारे भगवान हो गए हैं। हम सभी आपस में भाई और बहन हैं। हमारा भी निमार्ण हुआ हैं। इसलिए सभी गॉड कुछ नहीं है सिवाय स्पेस के प्रतिनिधि होने के। सभी धर्म कह रहे हैं कि गॉड सभी जगह है। इसका मतलब गॉड कुछ नहीं सिवाय स्पेस के प्रतिनिधि होने के। इसलिये बोसॉन का गॉडपार्टिकल भी कुछ नही हैं स्पेस के अलावा और स्पेस ही एलीमेंटी पार्टिकल है।

मैं आपको चेतावनी देना चाहता हूं कि 21 सदी में सारा का सारा फिजिक्स गलत साबित होने वाला हैं। लेकिन सभी प्रयोग जो अब तक हुए है 100 प्रतिशत सही हैं। क्लाइमेट चैंज के बारे में बता चुका हूं और कोई आपका समय नहीं लेना चाहता इसलिए अगर आपके पास कोई सवाल है तो पूछ सकते हैं। इन 17 प्वाइंटस में एक भी का भी सच्चाइ से दूर-दूर तक का लेना-देना नही हैं जिन्हे कन्नन ने कहा है। विज्ञान का दर्शन यह है कि सत्य की खोज करते जाना और अपने आप में बदलाव लाते जाना। विज्ञान अपने आप को बदलाव करता रहता है और सत्य को स्वीकार करता रहता हैं पर क्या न्यूटन और आइन्सटीन किसी ने आज तक घोषणा की है कि यह विज्ञान का अन्तिम छोर हैं। किसी ने भी नहीं। सब ने प्रयोग किये और तथ्यों पर बात करते हुए अपने सिद्धान्त रखे हैं। पर कन्नन तो खुली चुनौती देते हुए कहते हैं कि स्टीफन हाकिंग्स ने क्या किया हैं? आइन्सटीन जानता क्या है? और न्यूटन को पता क्या है? कैप्लर गैलिलियो और कॉपरनिक्स तो पता ही नही कर पाये कि धरती का अण्डाकार धुमाव किस लिए हैं। इतनी अवैज्ञानिक बातों को कहने वालों का तो साईस कांग्रेस में नही बल्कि साइंस फिक्शन के किसी कांग्रेस में होना चाहिये था। कमाल कि बात हैं कि जिस साइंस कांग्रेस में फीजिक्स और रसायन विज्ञान के तीन नोबल पुरस्कार विजेता मौजूद थे वहां पर इस वैज्ञानिक का सामना उनसे होनाचाहिए था न कि बाल वैज्ञानिकों से। भारतीय विज्ञान कांग्रेस के लगभग 1500 शोध पत्र 13 भागों में छपा है। मैंने सारे के सारे भाग पढ़ डाले पर इस वैज्ञानिक का एक भी शोध पत्र किसी भाग में नही हैं। क्यों जब ये इतने महान वैज्ञानिक हैं जिनके पास उन बातो के जबाब है, जिनका आइन्सटीन न्यूटन और स्टीफन हाकिंग्स के पास भी नहीं है तो इतने शोध पत्र को विज्ञान कांग्रेस सघ ने छापने लायक भी नहीं

समझा? अगर छापने लायक नहीं समझा तो बच्चों के सामने वैज्ञानिक कि हैसियत से क्यों पेश किया गया क्या इसलिए कि इसने मोदी आर हर्षवर्द्धन का गुणगान किया था।

क्या भारतीय विज्ञान कांग्रेस संघ को इस बात का जबाब नही देना चाहिये कि इतने बड़े आयोजन में एक नकली वैज्ञानिक जिसको विज्ञान के दर्शन की जानकारी ही नहीं है को बाल वैज्ञानिकों के सामने आकर के अपने मनघड़त किस्सों से गुमराह करता रहा। विश्व के अन्दर इस से ज्यादा बदनामी भारतीय विज्ञान कांग्रेस की क्या होगी? हर देश में प्रधान मंत्री तथा विज्ञान और तकनीकी मंत्री होते हैं पर आपने कभी सुना है कि विज्ञान के खोज और सिद्धान्त उनके नाम पर रखे गए हों कहीं नहीं। या तो ये खोज उस वैज्ञानिक नाम पर होते हैं या खोज के विषय वस्तु पर जैसे थ्योरी ऑफ रिलेटिविटी या सापेक्षता का सिद्वान्त, उर्जा का सिद्धान्त, गुरुत्वाकर्षण का सिंद्धान्त, ब्लैक होल थ्योरी। कुछ वैज्ञानिकों के नाम पर होते हैं जैसे रमन इफैक्ट, रदरफोर्ड माडल ऑफ एटम, न्यूटन लॉ आदि। पर किसी ने भी राजनेताओं के नाम पर कोई वैज्ञानिक अविष्कारों का नाम आज तक नहीं रखा। अमेरिका, रुस चीन, केरिया के सैकड़ों वैज्ञानिकों ने बहुत से खोज किये और किसी प्रधानमंत्री या विज्ञान मंत्री के नाम पर कोइ सिद्धान्त या खोज को नहीं जाना जाता। वैज्ञानिक खोजों और सिद्धान्तों को मान्यता तब मिलती है जब प्रयोग द्वारा उस के पक्ष में दस्तावेज हों और विश्व का वैज्ञानिक समुदाय उसे बहस व तर्क के बाद मान्यता दे दे। पर यहां तो भारतीय वैज्ञानिकों के समक्ष भी इस महान वैज्ञानिक के दस्तावेज को नहीं रखा गया कि उस पर बहस हो। बस बाल वैज्ञानिकों के सम्मेलन में इस रख कर काम चला लिया गया जहां डिस्क्शन का कोई सत्र ही नहीं है। और मान्यता हर्षवर्द्धन और नरेन्द्र मोदी ने दे ही दी थी जिसके कारण इन्हें वहां आकर बेलने का मौका दिया गया। मुझे नहीं लगता कि मिस्टर कन्नन ने कभी विज्ञान की पुस्तक को गम्भीरता से पढा़ होगा। नहीं तो ये सवाल ही नही उठता कि सूरज की मृत्यु के आठ मिन्ट बाद भी प्रकाश धरती पर आयेगा? विज्ञान के किसी भी पुस्तक में नहीं लिखा कि सूरज एक दम सैकेण्ड में मर जायेगा जैसे आदमी मरता है एक सैकेंड में। सभी वैज्ञानिक मानते हैं सूरज जैसे तारे का जब इंधन अर्थात उपस्थित हाइ्रोजन खत्म हो जायेंगे तो भी मरने में कई हजार वर्ष लगेंगे और विभिन्न प्रक्रियाओं से गुज़रते हुए उसका नाभिक तो लाखों वर्ष तक रहेगा जो कि सिकुड़ता रहेगा या किसी अन्य प्लानेट या तारे के गुरुत्वाकर्षण के कारण उसका चक्कर काटना शुरु कर देगा। या ये भी सम्भव हैं कि किसी अन्य ग्रह में जाकर मिल जाये। पर कन्नन तो एक सैकेंड के अन्दर सूर्य को खत्म कर देते हैं और एक जगह ये भी कहते हुए मिलते हैं कि कोई ग्रह या तारा कभी नहीं मरता यहां तक की कोई चांद भी नही मरता। क्या यह अवैज्ञाानिक नहीं है कि एक सिद्धान्त से आप अन्तरिक्ष से लेकर के एटम तक के सारे सवाल और क्लाइमेट चेंज को भी परिभाषित कर रहे हैं। क्या यह सम्भव है?

अब जरा इनके थ्योरी पर गौर करते हैं। कन्नन कहते हैं कि सैल्फ कंपाउंड सराउंडिंग फोर्स और रिप्लसिव फोर्स की वजह से सारे सारे प्लेनेट अण्डाकार पथ में घूमते हैं और यही सिद्धान्त परमाणु पर भी लागू होता है। इसी कारण इलैक्टान घूमते हैं तो क्या कन्नन जी आपके उपर भी यह सिद्धान्त लागू होना चाहिये और सैल्फ प्रेसर कम्प्रेसिव फोर्स की वजह से तो आप पर भी दबाब पड़ना चाहिये और आपके पेट तथा पीठ दोनों एक हो जाने चाहिएं चूकि चारों ओर से स्पेस दबाव खाली जगह को बाहर निकालता है।

नकली डिग्री, नकली पुरस्कार और नकली वैज्ञानिक खोज को अगर हमारे देश के प्रधानमंत्री ही बढावा देंगे तो विज्ञान और समाज की क्या स्थिती होगी वो किसी से छिपी नहीं हैं। अभी तक तो ऐसा लगता था कि राजनीति के द्वारा इतिहास से छेड़ छाड हो रहा है पर जो दखलान्दाजी विज्ञान के क्षैत्र में हुई है वो भी गलत है और आज नहीं तो कल भारत के शासकों के बारे में और उनके दकियानयूसी सोच के बारे में इतिहास जो भी लिखेगा वो हमारे देश के लिए शर्मनाक ही होगा।

अब दूसरे वैज्ञानिक जी नागेश्वर राव कुलपति आन्ध्रा विश्वविद्यालय वैज्ञानिक से मिलिये।

इसी सत्र में वैज्ञानिक से मिलिये कार्यक्रम के जो दूसरे वैज्ञानिक थे, वे थे जी नागेश्वर राव, कुलपति आन्ध्रा विश्वविद्यालय जो कि विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के विोषज्ञ समिति के सदस्यों में से एक हैं। कितना दुखद है कि जब पता लगता है कि इतना बेसिर पैर के बातें करने वाला नागेश्वर राव को सर्वपल्ली राधाकृष्णन पुरस्कार से सम्मानित किया गया है और 2008 का सर्वश्रेष्ठ शिक्षा शास्त्री सम्मान से सम्मानित है। वैज्ञानिक से मिलिये प्रोग्राम में उनका विषय था–'भारतीय जनजीवन में विज्ञान'। नागेश्वर राव ने शुरुआत में कहा कि लोगों के अन्दर विश्वास है कि जर्मन यूरोपियन और अमेरिकन लोगों को लोग महान वैज्ञानिक समझते हैं पर भारतीय लोगों के बारे में ऐसा नहीं मानते। पहले पूरा विश्व मानता था कि भारतीयों के पास वैज्ञानिक समझ नहीं है। और इसे साबित करने के लिए नागेश्वर राव ने बबूल, कोलगेट और नीम के टूथपेस्ट का उदाहरण देते हुए कहा कि जो वस्तु का इस्तेमाल हम सदियों से करते आ रहे हैं जैसे चारकोल नीम और नमक, आज नामी गिरामी कम्पनियां इन्ही से अपना उत्पाद बना कर हमे बेच रही हैं और मुनाफा कमा रही हैं। भारतीय पारम्परिक ज्ञान की शेखी बघारने वाले राव क्या इस बात का जबाब दे पायेंगे कि विश्व के अन्य देशों में लोग दातुन करते ही नहीं थे? क्या भारत के लोगों ने हीं दुनिया के हर देश में लोगों को यह सिखाया है कि भाई दातुन कर लो दांत साफ रहेगें?

नागेश्वर राव ने अपनी पीठ थपथपाते हुए कहा कि आज पूरे विश्व में भारत का प्रमुख योगदान ज़ीरो का है अगर भारत ने ज़ीरो कि खोज ना की होती तो आज का अंक गणित इतना विकसित नहीं होता । कम्प्यूटर विज्ञान तो पूरा का पूरा 0 और 1 के बेस पर काम करता है। क्या होता अगर भारत ने ज़ीरो की खोज ना की होती तो हमारी सभ्यता अभी तक आदिम युग में होती। दूसरा राव ने हल्दी के महत्व को रेखाकिंत किया। दुनिया भी मानती है कि हल्दी में बहुत सारे औषधीय गुण होते है जिसको भारतीय सदियों से इस्तेमाल करते आ रहे हैं। इस के बाद तो एन राव ने गाय के गोबर से लेकर उसकी महत्ता पर बोलते ही गये । जैसे सम्प्रदायिक ताकतें गाय को राजनैतिक तौर पर इस्तेमाल करते रहे हैं ठीक वही भाषा नागेश्वर राव बोलते गये। गाय के गोबर से घर को लीपने से बैक्टिरिया नहीं आती और इस खोज पर इतना जोर दिया कि जैसे इस बात का पता इससे पहले किसी का नही था। क्या आन्ध्राविश्वविद्यालय के कुलपति निवास में सीमेंट के फर्श की जगह गोबर से लिपाई होती हैं। या आज के समय में भी हम गोबर के थ्योरी पर ही रहेंगे या इससे उंचा भी उठगें उसके बाद तो लगा ही नहीं कि हम विज्ञान कांग्रेस में बैठे है गंगा जल के पवित्रता को लेकर कई बातें कह गए जो कि हम कुम्भ के मेले में संतों के मुंह से सुनते आ रहे हैं। गंगा जल में दैवीय गुण हैं जिस के कारण गंगा जल से किसी का नुक्सान नहीं होता और इतने प्रदूषण के बाद भी गंगा जल से आज तक कोई इनफैक्शन नहीं हुआ है। इस से बड़ा पाखंड और क्या हो सकता हैं कि एक तरफ तो वैज्ञानिक ही कह रहे हैं कि गंगा जल प्रदूषण के कारण पीने योग्य नही हैं और इसको कइ मानकों पर शुद्ध करने कि ज़रुरत है। अगर प्रदूषण को ना रोका गया तो यह नदी मृत हो जायेगी। सुप्रीम कोर्ट तक ने इस पर अपनी चिंता जतायी है। मातृ सदन के दो गंगा पुत्र स्वामी सानंद उर्फ स्वामी जी डी अग्रवाल और स्वामी निमानंद ने तो गंगा को बचाने के लिए अपने जान की कुर्बानी भी दे दी है। करोड़ों रुपये का बजट तो गंगा को साफ रखने के नाम पर खर्च होता है और आप इस वैज्ञानिक की बातों पर क्या भरोसा कर सकते हैं।

आगे के भाषण में तो उन्हीं गाथा को गाते गए जिस संघ परिवार संस्कृति कहता है यानि टेबल की बजाय जमीन पर बैठ करखाना खाना चाहिए। कुलपति महोदय तो योगा को महान खोज बताने से नहीं चूके।

अन्तरिक्ष विज्ञान के बारे में बोलते गए कि भारत आज विश्व में दूसरा देश है जो अन्तरिक्ष के बारे में इतनी जानकारी रखता हैं और इतनी क्षमता हासिल किए हुए हैं। 104 उपग्रह को एक साथ अन्तरिक्ष में स्थापित करने के कसीदे कसने के अलावा इस बात पर जोर देने लगे कि यह वैज्ञानिकों कि मेहनत है कि बाराक ओबामा को भारत में मुख्य अतिथि बनकर आना पड़ा। एक बार तो ओबामा ने भारत के गणतन्त्र

दिवस वा मुख्य अतिथि के आमन्त्रण को ठुकरा दिया पर अमेरिकन न्यूक्लियर वैज्ञानिकों ने अमेरिका के प्रेजिडेन्टस से अनुरोध किया कि आप भारत जायें और वहां के वैज्ञानिकों से अनुरोध करें वो भारत से आकर हमें प्रशिक्षित करें। इसलिए बराक ओबामा भारत आये। और तो और यह भी कहा कि इसलिये ही 123 समझौते में एक क्लॉज है जिसके तरह भारतीय परमाणु वैज्ञानिकों को अमेरिकन विज्ञानिकों को प्रशिक्षण देना शामिल है। इतना बड़ा झूठ कुलपति बोल गये। अगर भारतीय वैज्ञानिक इतने सक्षम थे तो अमेरिका से 123 संधि क्यों करनी पड़ी। यूरेनियम संवर्धन का काम भारत में ही कर लिया जाना चाहिये था। फिर इस मिसाइल पर आ गये कि आजकल बहुत सारे गाइडेड मिसाइल हैं और वो सभी अपने लक्ष्य को तबाह करने के बाद खुद भी नष्ट हो जाते हैं, पर हमारे पुराण और वेदो में तो ऐसे मिसाइल थे जो कि लक्ष्य को नष्ट करने के बाद सुरक्षित अपने स्थान पर वापस आ जाते हैं और इसके बहुत सारे प्रमाण हमारे रामायण और महाभारत में मिलते हैं। पहले लोग रामायण और महाभारत को काल्पनिक कहानी मानते थे, पर आज पूरा विश्व हकीकत मान रहा हैं। नागेश्वर राव जी रामायण में तो यह भी प्रमाण मिलता है कि हनुमान जी ने सूर्य को फल समझ कर खा लिया था तो क्या आप उसे भी विज्ञान मान लोगे। या आप भी आदमी के पसीने से भी इन्सान पैदा हो सकता है। इसे मान लेंगे या फिर कुशा से इन्सान बनाने को बैज्ञानिक मान लिया जाये। नागेश्वर राव ने तो विष्णु के दस अवतारों डार्विन के विकास का सिद्धान्त बताना शुरू कर दिया। बोले कि पहला अवतार मच्छली के रुप में हुआ जो जल में रहता था। फिर दूसरा अवतार कुर्म अवतार जो कि जल और स्थल दोनों पर रहता था, फिर बराह अवतार हुआ जो कि पशु था और पशु के रूप में पृथ्वी पर रहने वाला जीव बना। फिर नरसिंम्हा अवतार हुआ जो कि आधा पशु था और आधा इन्सान। इस प्रकार जीवों का विकास हुआ । फिर बामन अवतार हुआ, जिसमें छोटा बौना आदमी बना जो आदमी का छोटा रूप था और कम जानता था इसके बाद से राम का अवतार हुआ जो कि पहला पूर्ण इन्सान था और मर्यादा पुरुषोत्तम भी इसके बाद कृष्ण का अवतार हुआ जो कि पूर्ण रुप से विकसित इन्सान है और जिसमें सोचने समझने कि आपार शक्ति है। यह विकास क्रम है और डार्विन ने तो हमारे विष्णु भगवान के दस अवतारों कि कथा को अपने ढ़ंग से लिख दिया। पहले डार्विन भी यही कहता है कि जीव इस धरती पर सबसे पहले जल में आये, फिर स्थल पर और धीरे धीरे विकास करते करते मनुष्य बन गये। और यहीं हमारे शास्त्रों मे लिखा है। इसका मतलब डार्विन ने विकास का सिद्धान्त हमारे वेद ग्रन्थों से लिया। क्या वैज्ञानिक व्याख्या है! भाई डार्विन भी सिर पीट लेते अगर उसे जीव विकास की ऐसी थ्योरी पढने को मिलती। हमने तो अब तक यही पढ़ा है कि आदमी के पूर्वज बन्दर थे और डार्विन के सिद्धान्त के हिसाब से विकास के कालक्रम में इन्सान बना। पर आपने तो सारा श्रेय भगवान विष्णु को दे दिया। आदमी को तो श्रम करना ही नही पड़ा। सब कुछ रेडीमेड भगवान उतरते गये और विकास होता रहा। पर हमारे भगवान थे तो नादान ही न। आप उन्हें सलाह क्यों नही दे डालते कि भाई ये विकास करने के क्या जरुरत है। सीधे ही कृष्ण का अवतार कर देते। विकसित दुनिया अपने आप मिल जाती। नागेश्वर राव ने सौ कौरवों के जन्म को स्टैम सैल से जन्म बताया। कहा कि लोग इसे टेस्ट टयूब बेबी मानती है क्योंकि यह सौ कुंडो से जन्म हुआ हैं पर भ्रूण तो एक था इस तरह से एक भ्रूण से सौ बच्चे एक साथ पैदा नहीं हो सकते। यह स्टैम सैल पति के द्वारा कारवों का जन्म हुआ था। और दुनियां जिसे आज विकसित तकनीक मानती है। वो हमारे भारत में हजारों साल पहले हुआ था।

पुष्पक विमान के बारे में था कि रामायण काल में ही भारत के पास पुष्पक जहाज उपलब्ध था और वह उड़ता था। रावण के पास तो इतनी उन्नत विज्ञान था कि उसने 24 प्रकार के विमान थे- अलग अलग साइज के और लंका के अन्दर बहुत प्रकार के एयरपोर्ट थे। भारद्वाज मुनि द्वारा रचित विमान शास्त्र में तो पूरा विवरण है कि जहाज को कैसे बनाया और उड़ाया जाता है। बस एक बात पर कुलपति राव जी चूक गए। वह इस बात पर भी प्रकाश डाल ही देते कि जब इतने उन्नत जहाज रावण के पास थे तो वो बन्दरों कि सेना से हार कैसे गया।

हमारे भगवान विष्णु के पास तो सुदर्शन चक्र थ। इस जैसे हथियार का वर्णन तो कहीं नही मिलता। दुनियां में दुश्मन चाहें जहां भी भाग जायें वह उसे मार कर वापस अपनी जगह पर आ जाता था। दुश्मन एक गांव से दूसरे गांव और एक शहर से दुसरे शहर भागता क्यों न चक्र भी उसके पीछे भागते रहता था और उसको मार कर ही आता था । एक तरह से वो गाइडेड मिसाइल था जो कि दुश्मन को मार कर ही आता था। अक्षय तर्कश राम के पास था। मतलब कितना भी तीर चलाओ उस तरकश से तीर कभी खत्म नहीं होंगे। क्योंकि तीर दुश्मन की जान लेने के बाद अपनी जगह वापस आ जाते थे और तीर भी सुदर्शन चक्र की तरह गाइडेड मिसाइल कि तरह ही काम करते थे। और इस तरह से गाइडेड मिसाइल भारत के लिए नया नहीं है बल्कि हजारों साल पुराना है और हमारे भारत का विज्ञान तो उन देशों से काफी आगे है जो आज गाइडेड मिसाइल बना कर खुश हो रहे हैं। राकेट कि तकनीक कि खोज भी भारत ने की थी और वह थे टीपू सुल्तान। इस मामले भी नागेश्वर राव ने एक कहानी सुनाई कि अब्दुल कलाम किसी देश के सैन्य लैब में गये और वहां जाकर के हैरान रह गये कि मुख्य प्रवेश द्वार पर टीपू सूल्तान की फोटो लगी है और वहां के मुख्य वैज्ञानिक ने बताया कि टीपू सुल्तान हमारे रोल माडल हैं और उनके राकेट को देखकर ही पूरे विश्व को राकेट बनाने का आइडिया आया। कहना ना होगा दोनों अवैज्ञानिकों के बातों को सुनने के बाद समझ में नही आती कि विश्वविद्यालय अनुदान आयोग में किस मापदंड के आधार पर सलाहकार वैज्ञानिक नियुक्त किया है। और इनकी सलाह पर अगर यूजीसी काम कर रहा है तो भारतीय विज्ञान शिक्षण को कोई भी नहीं बचा सकता । और फिर रही कसर भारतीय विज्ञान कांग्रेस संघ ने कर दी इन नमूनों की प्रदर्शनी लगा कर। विज्ञान का विकास का जो माडल नागेश्वर राव ने रखा उसमें तो मानव को संघर्ष करने कि ज़रुरत ही नहीं हुई। विष्णु के अवतारों ने वे सभी काम कर दिये जो क्रम मानव के वर्तमान स्थिति तक लेकर आती है। कहना ना होगा कि एक कोशिकीय जीव से लेकर वर्तमान विकास तक हर स्टेज का ब्लूप्रिंट कहीं न कहीं इस धरती पर छुपा हुआ है और उसी के सहारे अध्ययन कर के आज तक के विकास कि कहानी भी लिखी जा चुकी है। वानर से नर बनने में श्रम कि जो भूमिका है उस से लेकर के डार्विन के विकासवाद तक पर बहुत भारी बहस हो चुकी है और दुनिया के तमाम वैज्ञानिक इन खोजों पर एक मत हैं। फिर इस बात को मानने में उन्हे गुरेज़ नहीं हैं कि अगर वैज्ञानिक पद्धति से कोई और खोज होती है, विकास के नए कारण सामने आते हैं तो हम उसे भी स्वीकार कर सकते हैं और पुराने के स्थान पर नइ खोज को मान्यता देंगे। पर ये नागेश्वर राव रसायन विज्ञान के प्रौफेसर हैं और एक समय पर ये खुद भी कहते हैं कि वैज्ञानिकों को अपना दिमाग हमेशा खुला रखना होगा। अपना दिमाग पुरात्नपंथी ढकोसलों से आगे नहीं निकाल पा रहे हैं।

हमारे महान ऋषि-मुनी अपने समय के वैज्ञानिक व उन्नत चिकित्सक हो सकते हैं पर हर खोज भारतीय दर्शन में पहले से मौजूद है, बताना बेवकूफी होगी। हम जानते हैं कि विभिन्न किस्म के पौधो और जड़ी बूटी का इस्तेमाल इलाज के लिए किया करते थे। पर उसके साथ ही अन्धविश्वास भी होता थे । जैसे हम जानते हैं कि चेचक के मरीज के पास नीम की टहनी रखनी चाहीये थी ताकि संक्रमण ना फैले पर हम ये भी जानते हैं कि चेचक को हम माता मान कर पूजा करते थे और माता का प्रकोप समझाते थे। जबकि आज एक मात्र टीके से इलाज हो सकता है और यहे टीका अगर पहले ही लगा हो तो होने की सम्भावना ही खत्म हो जाती है। कोढ़ व लकवा आदि बीमारियों को पूर्व जन्म का पाप मानने के अलावा हमारे पास कोई चारा नहीं था। जन्म के दौरान एवम् बाल मृत्यु दर हमारे पूर्वजों के जमाने में खूब रही हैं और हम कल्पना के आधार पर कह दें कि स्टैम सैल तकनीक या टेस्ट ट्यूब बेबी उस जमाने मौजूद थी तो वह गलत होगा। ये नागेश्वर राव तो साहित्य मैं फिक्शन को ही इतिहास मानने लगे हैं। रामायण या महाभारत काल में तो जीरो की भी खोज नहीं हुई थी तो 100 बच्चे पैदा करने या गिनने का रहस्य तो आज तक रहस्य है। स्टैम सैल तो बाद की बात है।

रामायण काल में यंत्र नही था। जो कुछ भी

किया जाता था वो मसल्स पॉवर के द्वारा होता था। यानि तीर, गदा या जिन हथियारों का वर्णन है वे सभी हाथो से चलाई जाती थीं। युद्ध के लिए हाथी धोड़े का ही प्रयोग होता था। महत्वपूर्ण यातायात का साधन रथ ही होता था तो फिर गाइडेड मिसाइल की तो कल्पना ही की जा सकता है। वास्तविकता से कोई लेना देना नहीं हो सकता। दोनों ग्रंथो के समय तक सूई का अविष्कार नहीं हुआ था। यही वजह है कि सभी स्त्री पुरुष लपेटे जाने वाले ही कपड़े पहनते थे। सिले हुए कपड़े का कहीं वर्णन नहीं मिलता है पर नागेशवर राव को हर कथा कहानी या वर्णन को विज्ञान से जोड़ देते है। फिर क्या वे इस बात को भी खोज से जोड़ेंगे कि गंगा जी हिमालय कि पहाड़ियों से ना निकल कर शिव जी कि जटा से निकलती है। अगस्त मुनि पूरा का पूरा समुद्र ही पी गए थे, और हनुमान जी सूरज को मीठा फल समझ का खा गये थे।

क्या पृथ्वी से 33000 गुण बड़े सूर्य को खा जाना किसी जीव के लिये सम्भव है? क्या कोई 36 योजन लम्बा अपना मुख कर सकता है? वैदिक गणित में एक योजन मतलब 13 कि. मी. है। मतलब 468 कि. मी. लम्बा अपना मुख कर लिया था। इस तरह से किसी ऐसे आदमी का अनुमान करे जिसके मुख की लम्बाई 468 किलोमीटर हो तो उसके शरीर का एक किनारा हिन्दुस्तान में और दूसरा श्रीलंका में होना चाहिये था। 21वीं सदी में विज्ञान अपना कमाल दिखा रहा है। हरेक देश में अंतरिक्ष में जाने कि होड़ लगी है। कुछ तो अपने प्रयोग चन्द्रमा और मंगल जैसे ग्रहों पर कर रहे हैं और भारतीय वैज्ञानिक अपने पुराने दकियानी विचारों से ही नही निकल सके हैं। दूनिया भर में जहां चिकित्साशास्त्री अपनी खोजों के लिए नोबल पुरस्कार ले रहे हैं वही हम अपने बच्चों को यह सिखा रहे हैं कि दुनिया में जो कोई खोज हो रही है या होगा वह सब भारतीय वैदिक साहित्य में पहले से दर्ज है और वे लोग तो हमारे ज्ञान कि चोरी भर कर रहे हैं।

महान् पाकिस्तानी कवियित्री फ़हमीदा रियाज जो कि कुछ दिनों पहले ही हमसे बिछुड़ी हैं ने बहुत सही कहा है :

तुम बिल्कुल हम जैसे निकले, अब तक कहां छुपे थे भाई?
वो मूर्खता, वो घामड़पन, जिसमे हमने सदी गॅवाई,
आखिर पहुंची द्वार तुम्हारे अरे बधाई, बहुत बधाई!
भाड़ में जाय शिक्षा-विक्षा, अब जाहिलपन के गुण गाना
आगे गड्ढा है मत देखो, वापस लाओ गया जमाना
एक जाप सा करते जाओ, बारम्बार यही दोहराओ
कैसा वीर महान था भारत, कितना आलीशान था भारत
फिर तुम लोग पहुंच जाओगे, बस परलोक पहुच जाओगे
हम तो हैं पहले से वहां पर, तुम भी समय निकालते रहना
अब तुम भी जिस नरक में जाओ, चिट्ठी विट्ठी डालते रहना।

एक सेब गिरा और गुरुत्वाकर्षण बल की खोज हुई दुनिया में। अफसोस है कि हजारों लाखों जिस्म गिरे हैं और गिर रहे हैं, मगर इंसान अभी तक इंसानियत नहीं खोज पाया।

–चार्ली चैप्लिन

हो गई है पीर पर्वत-सी पिघलनी चाहिए
इस हिमालय से कोई गंगा निकलनी चाहिए
आज यह दीवार, परदों की तरह हिलने लगी
शर्त थी लेकिन कि ये बुनियाद हिलनी चाहिए
हर सड़क पर, हर गली में, हर नगर, हर गांव में
हाथ लहराते हुए हर लाश चलनी चाहिए
सिर्फ हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं
मेरी कोशिश है कि ये सूरत बदलनी चाहिए
मेरे सीने में नहीं तो तेरे सीने में सही
हो कहीं भी आग, लेकिन आग जलनी चाहिए।

–दुष्यंत कुमार

(23 मार्च शहीदी दिवस पर विशेष)

शहीद भगत सिंह के आस्तिक होने का प्रचार क्यों ?

हेमराज स्टेनो
मो-0598769-53561

हम इस लेख में श. भगत सिंह के आस्तिक होने के बारे में किए जा रहे प्रचार के बारे में विचार करने जा रहे हैं, इसलिए यह उचित रहेगा कि पहले यह जान लिया जाए कि नास्तिक एवं आस्तिक किसको कहा जाता है।

नास्तिक व्यक्ति वह होता है जो इस संसार की रचना करने वाली, इसे चलाने वाली एवं विनाश करने वाली किसी भी प्रकार की अदृश्य एवं दैवीय शक्ति में, किसी भूत-प्रेत, पुनर्जन्म, भाग्यवाद अथवा किसी भी प्रकार की परा-भौतिक शक्ति में विश्वास न करता हो। इसके विपरीत आस्तिक व्यक्ति वह होता है, जो इन सभी अथवा इनमें से कुछ धारणाओं में विश्वास करता हो।

श. भगत सिंह का व्यक्तित्व आज अत्यंत ऊंचा उठ चुका है। इसका अनुमान इस बात से भी लगाया जा सकता है कि पाकिस्तान में भी भगत सिंह के नाम पर चौक बनाने की मांग जोर-शोर से उठ रही है। आज प्रत्येक देशवासी की भावनाएं कम-ज्यादा रूप से भगत सिंह के साथ जुड़ी हुई हैं। श. भगत सिंह के नास्तिक होने पर भांति-भांति के तथा मौका-बा-मौका हमले किए जा रहे हैं। इसी क्रम का एक उदाहरण है। 8 मई, 2018 के स्पोक्समैन अखबार का संपादकीय लेख। अपने संपादकीय में स्पोक्समैन अखबार ने लिखा है कि 'श. भगत सिंह के अपने द्वारा लिखे गए अनेक पत्रों पर आरंभ में वह 'इक ओंकार' लिखता है तथा कईयों का आरंभ वह 'नमस्ते' के साथ करता है, जिसका तात्पर्य यह है कि वह पक्का आस्तिक तो था ही तथा साथ में वह एक पक्का सिख भी था। परंतु कुछ समय के लिए उसका परिवार आर्य समाज के प्रभावाधीन भी आ गया था, जिसके कारण वह 'इक ओंकार' एवं 'नमस्ते' दोनों का प्रयोग करने लग गया था, परन्तु ऐसा एक भी प्रमाण नहीं मिलता, जिससे (मिथ्या तौर पर सृजित पौराणिक कथाओं जैसे लेखों को छोड़कर) पता चल सके कि वह अथवा उसका परिवार कभी नास्तिकता के प्रभावाधीन भी आया था। यदि वह आया होता तो यह बात उसी भांति स्वीकार कर ली जानी थी, जैसे कि एक सिख परिवार पर अल्प समय के लिए आर्य समाज का प्रभाव स्वीकार कर लिया गया है। परन्तु 'नास्तिकता' के प्रभाव की तो बात ही एक दम से गपौड़ है तथा केवल मार्क्स एवं लेनिन की आत्मा को प्रसन्न करने के लिए अथवा अपने-आप को आस्तिक का समर्थन करने के लिए (कम्युनिस्टों द्वारा-लेखक) 'गुनाहगार' होने के तानों से बचाव के लिए ही की गई थी, जो कभी परवान नहीं चढ़ सकेगी....'

इसमें लिए गए बिंदुओं पर बारी-बारी के साथ बात करेंगे।

सर्वप्रथम हम इस दोष को ही लेते है कि श.भगत सिंह को नास्तिक प्रमाणित करने के प्रयत्न साम्यवादियों ने 'केवल मार्क्स एवं लेनिन की आत्मा को प्रसन्न करने के लिए ही उदाहरण लिए। श. भगत सिंह को नास्तिक प्रमाणित करने के बारे में साम्यवादियों पर दोष लगाने से पूर्व यह सज्जन शायद भूल गए कि साम्यवादी लोग नास्तिक होने के कारण किसी भी प्रकार की आत्मा अथवा प्रेतात्मा के अस्तित्व में विश्वास नहीं रखते। जब साम्यवादी लोग किसी आत्मा अथवा प्रेतात्मा के अस्तित्व में ही विश्वास नहीं रखते तो फिर उन्होंने स्पोक्समैन अखबार के भद्रपुरुष लेखक के अनुसार मार्क्स एवं लेनिन की काल्पनिक आत्माओं को प्रसन्न करने के लिए श.. भगत सिंह को वैसे ही (इनके कथनानुसार) नास्तिक के तौर पर प्रमाणित करने के प्रयत्न करने

की क्या आवश्यकता थी? अतः साम्यवादियों ने मार्क्स एवं लेनिन की काल्पनिक आत्माओं को प्रसन्न करने के लिए श. भगत सिंह को नास्तिक प्रमाणित करने के लिए जोर लगाया, यह एक मनघड़ंत बात से अधिक कुछ भी नहीं रह जाती।

संपादकीय में लिखा गया है कि 'भाई रणधीर सिंह के जेल दस्तावेजों में श. भगत सिंह के साथ जेल में अंतिम मुलाकात की सत्यकथा भी दी गई है, जिसमें से भगत सिंह नास्तिक नहीं, भगत सिंह आस्तिक ही बोलता हुआ नजर आता है तथा जब वह भाई रणधीर सिंह को यह कहता है कि 'यदि मैं अपने केश कत्ल न करवाता तो सारे देश में किसी भी स्थान पर मेरा जिक्र भी नहीं होना था,' तो यह कोई नास्तिक नहीं, आस्तिक ही बोल रहा था, जो अपने केश कटवाने को अपनी विवशता बता रहा था...।'

इस टिप्पणी को गोल-मोल करके प्रस्तुत किया गया है। इसलिए इस की थोड़ी गहराई में जाना पड़ेगा। इससे यही प्रभाव जाता है कि श. भगत सिंह ने अपने केश केवल अपनी प्रसिद्धि करवाने के लिए ही कटवाए थे। क्या श. भगत सिंह द्वारा किए गए संघर्ष के कारण उनका नाम रोशन हुआ अथवा केश कटवाने के कारण से? इसका फैसला हम पाठकों पर ही छोड़ते हैं। विचारणीय बात यह भी है कि शहीदों में अनेकों ही ऐसे वीर सपूत हैं, जिनके सिर के बाल कटवाए हुए नहीं थे, फिर इस सज्जन लेखक के अनुसार तो उनका नाम चमकना तो दूर रहा, बल्कि इतिहास के पन्नों पर भी नहीं आना चाहिए था। परन्तु फिर भी करतार सिंह सराभा जैसे अनेक शहीदों का नाम तो इतिहास में पूरा रोशन मिलता है। यह किस प्रकार का प्रचार है? इस बात का फैसला भी पाठक ही करें।

यदि केश रखना आस्तिकता का और केश कटवाना नास्तिकता का पैमाना है, तो इस दृष्टिकोण से देखने पर तो सिख धर्म के अनुयायियों के अतिरिक्त शेष सभी धर्मों के अनुयायी तो अपने केश कटवाते हैं। फिर उनको क्या कहा जाएगा? अथवा हिन्दू साधु-संतों में अनेकों साधु-संत अपने केश नहीं कटवाते। हिन्दू धर्म में केश कटवाने की परम्परा होने के कारण ऐसे केशधारी साधु-संत तो पक्के नास्तिक होने चाहिएं, जबकि ऐसी बात बिल्कुल भी नहीं है। केश रखना अथवा कटवाना ही नास्तिकता अथवा आस्तिकता का पैमाना यह सज्जन लेखक कहां से निकाल कर ले आए हैं? यह तो वे ही बता सकते होंगे, परन्तु हमारे अल्प ज्ञान के अनुसार तो ऐसा कोई पैमाना नहीं है।

यहां तक चर्चा से यह स्पष्ट है कि श. भगत सिंह पर आस्तिक होने के लिए प्रस्तुत किए गए इन तथ्यों में लेशमात्र भी सत्य नहीं है।

इससे आगे संपादकीय में दर्ज है कि 'भाई रणधीर सिंह के जेल वाले पत्रों में भगत सिंह के साथ जेल में आखिरी मुलाकात की कहानी भी दी गई है।' यदि लेखक इसे स्पष्ट तौर पर स. भगत सिंह तथा भाई रणधीर सिंह के दरम्यान हुई आखिरी मुलाकात कह देता तो बात ठीक थी, परन्तु इस प्रकार से लिखने से तो यह प्रभाव बन जाता है कि भाई रणधीर सिंह के पश्चात् अन्य किसी के साथ श. भगत सिंह की मुलाकात हुई ही नहीं। इस बात का जिक्र अगले भाग में करके निष्कर्ष निकालेंगे, पहले हम इस बाबत विचार करते हैं जो लेखक सज्जन ने लिखा है कि 'ऐसा एक भी प्रमाण नहीं मिलता, जिससे (मिथ्या तौर पर सृजित पौराणिक कथाओं जैसे लेखों को छोड़कर) पता लग सके कि वह अथवा उसका परिवार कभी नास्तिकता के प्रभाव में भी आया था। यदि आया होता तो यह बात उसी भांति स्वीकार कर ली जानी थी जैसे कि एक सिख परिवार पर अल्प समय के लिए आर्यसमाज का प्रभाव स्वीकार कर लिया गया है। परन्तु 'नास्तिकता' के प्रभाव की तो बात ही एकदम से गपौड़ है।'

हम यहां पर बात श. भगत सिंह के परिवार के बारे में नहीं, केवल श. भगत सिंह बारे में ही करेंगे।

यह बात सत्य है कि भगत सिंह अपने जीवन के आरंभिक समय में आस्तिक थे तथा उन्होंने खुल कर इस बात को स्वीकार भी किया है, परन्तु

उसके पश्चात् अध्ययन करने के बाद वे पक्के नास्तिक बन गए। जैसा कि उन्होंने लिखा है कि 'मैंने अध्ययन करना शुरू कर दिया। मेरे पहले वाले विश्वासों एवं मान्यताओं में बहुत बड़ा परिवर्तन आ गया।....अब रहस्यवाद के लिए, अंधविश्वास के लिए कोई स्थान न रहा।....1926 के अंत तक मेरा यह विश्वास पक्का हो चुका था कि ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति, पालक एवं सर्वशक्तिमान के अस्तित्व का सिद्वांत बेबुनियाद है। मैंने इस विषय बारे अपने मित्रों के साथ बहस करनी शुरू कर दी। मैं एक घोषित नास्तिक हो चुका था।

स. भगत सिंह पूर्ण तौर पर नास्तिक थे, इसका ठोस प्रमाण उनके द्वारा लिखा गया सुप्रसिद्ध लेख 'मैं नास्तिक क्यों Why I am Atheist' है, जो कि तब अखबार में भी प्रकाशित हुआ था। इसके बारे में श. भगत सिंह के भानजे प्रो. जगमोहन सिंह ने 'श.भगत सिंह व उनके साथियों के दस्तावेज' नामक पुस्तक में पेज 386 पर दर्ज किया है कि '7 अक्तूबर, 1930 को फांसी की सजा सुनाए जाने के पश्चात जब भगत सिंह एवं उनके साथियों को काल-कोठड़ियों में भेजा गया, तो यह लेख एवं अन्य कागज, एक 404 पन्नों की नोट बुक तथा कुछ निजी प्रयोग होने वाला सामान समेत परिवार वालों को मिल गए थे।'

'मैं नास्तिक क्यों' लेख में भगत सिंह ने साफ-साफ लिखा हैः-

'नीरो ने सिर्फ एक रोम जलाकर राख किया था, उसने चंद लोगों की हत्या की थी। उसने तो थोड़ा दुख पैदा किया, अपने शौक और मनोरंजन के लिए। और उसका इतिहास में क्या स्थान है? उसे साहित्यकार किस नाम से बुलाते हैं? सभी विषैले विशेषण उस पर बरसाए जाते हैं। जालिम, निर्दयी, शैतान-जैसे शब्दों से नीरो की भर्त्सना में पृष्ठ के पृष्ठ रंगे पड़े हैं। एक चंगेजखान ने अपने आनंद के लिए कुछ हजार जानें ले ली और आज हम उसके नाम से घृणा करते हैं। तब फिर तुम उस सर्वशक्तिमान अनन्त नीरो को जो हर दिन, हर घंटे और हर मिनट असंख्य दुख देता रहा है और अभी भी दे रहा है, किस तरह न्यायोचित ठहराते हो? फिर तुम उसके दुष्कर्मों की हिमायत कैसे करोगे, जो हर पल चंगेज के दुष्कर्मों को भी मात दिए जा रहे हैं?'

'मुसलमानो और ईसाईयो! हिन्दू-दर्शन के पास अभी और भी तर्क हो सकते हैं। मैं तुम से पूछता हूं कि तुम्हारे पास ऊपर पूछे गए प्रश्नों का क्या उत्तर है? तुम तो पूर्वजन्म में विश्वास नहीं करते। तुम तो हिन्दुओं की तरह यह तर्क पेश नहीं कर सकते कि प्रत्यक्षतः निर्दोष व्यक्तियों के कष्ट उनके पूर्वजन्मों के कुकर्मो का फल है। मैं तुम से पूछता हूं कि उस सर्वशक्तिमान ने विश्व की उत्पत्ति के लिए छह दिन मेहनत क्यों की और यह क्यों कहा था कि सब ठीक है? उसे आज ही बुलाओ, उसे पिछला इतिहास दिखाओ। उसे मौजूदा परिस्थितियों का अध्ययन करने दो। फिर हम देखेंगे कि क्या वह आज भी यह कहने का साहस करता है-सब ठीक है!'

हमारे देश पर अंग्रेजों के राज्य करने के संबंध में उन्होंने लिखा है कि, 'मैं तुम्हें बताता हूं कि भारतवर्ष पर जो बर्तानवी हुकूमत है यह ईश्वर की मर्जी के कारण नहीं है, बल्कि इसका कारण है कि हमारे अंदर इसका विरोध करने का साहस नहीं है। वे हमें अपने प्रभुत्व में ईश्वर की सहायता से नहीं रखे हुए हैं बल्कि बन्दूकों, राइफलों, बम और गोलियों, पुलिस और सेना के सहारे रखे हुए हैं। यह हमारी उदासीनता है कि वे समाज के विरुद्ध सबसे निंदनीय अपराध-एक राष्ट्र का दूसरे राष्ट्र द्वारा अत्याचारपूर्ण शोषण-सफलतापूर्वक कर रहे हैं। कहां है ईश्वर? वह क्या कर रहा है? क्या वह मनुष्य जाति के इन कष्टों का मजा ले रहा है? वह नीरो है, चंगेजखान है, तो उसका नाश हो!'

क्या कोई आस्तिक परमात्मा के बारे में इस प्रकार के विशेषण प्रयोग कर सकता है? नहीं। यदि किसी भद्रजन को इस तरह से लिखने वाले शहीद में आस्तिक होना नजर आता है तो इसे उसके मनोभ्रम से अधिक कुछ नहीं कहा जा सकता।

अब बात तिथिबद्ध रूप में भी कर लें, ताकि किसी को यह भ्रम न रहे कि श. भगत सिंह यह लेख लिखने के पश्चात् ही ईश्वर में विश्वास करने लग गया था तथा साथ ही इस बात का फैसला हो जाएगा कि क्या भाई रणधीर सिंह और श. भगत सिंह दरम्यान हुई मुलाकात ही आखिरी मुलाकात थी अथवा उसके पश्चात् भी भगत सिंह के साथ अन्य लोगों की मुलाकातें हुई थी।

'मैं नास्तिक क्यों,' लेख लिखने के पश्चात् दिनांक 15-01-1931 को अर्थात् फांसी लगने से लगभग अढ़ाई महीने पूर्व लाला रामशरण जी की पुस्तक 'ड्रीमलैंड' की भूमिका में भी श.भगत सिंह ने किसी भी प्रकार के सृजनकर्ता ईश्वर एवं धर्मों की कल्पना को व्यर्थ बताते हुए लिखा कि '....ईश्वर का विश्वास रहस्यवाद का परिणाम होता है, जो कि उदासी का कुदरती प्रकटावा होता है।...परन्तु पदार्थवादी दर्शन में इस किस्म की विचार विधि के लिए कोई स्थान नहीं है।

परन्तु कोई भगत सिंह को आस्तिक सिद्ध करने की धुन में मग्न व्यक्ति अपने मनोभ्रम का शिकार होते हुए कह सकता है कि उससे अगले अढ़ाई महीनों के दौरान वह आस्तिक बन गया था। साथ ही साथ यह भी देखते चलें।

फांसी लगाने से तीन दिन पूर्व भगत सिंह, राजगुरु एवं सुखदेव की ओर से 20 मार्च 1931 को तत्कालीन गवर्नर, पंजाब को भेजे गए एक पत्र में उन्होंने लिखा :

'आपकी सरकार के ही एक न्यायालय के निर्णय अनुसार हमारे विरुद्ध युद्ध जारी रखने का अभियोग है। इस स्थिति में हम युद्धबंदी है, अतः इस आधार पर हम आपसे मांग करते हैं कि हमारे प्रति युद्धबंदियों जैसा ही व्यवहार किया जाए और हमें फांसी देने के बदले गोली से उड़ा दिया जाए।....'

'....हम विनयपूर्वक आप से प्रार्थना करते हैं कि आप अपने सेना-विभाग को आदेश दे दें कि हमें गोली से उड़ाने के लिए एक सैनिक टोली भेज दी जाए।'

यह हवाला देने का तात्पर्य यह है कि स. भगत सिंह यहां भी आस्तिकों की भांति किसी किस्म की दैवीय चालक शक्ति को स्मरण करते हुए कोई दया की मांग करता हुआ नजर नहीं आता, बल्कि गोली के साथ शहीद होने के लिए छाती ठोकता नजर आता है।

फिर भी कोई कह सकता है कि आदमी का क्या पता चलता है कि दो मिनट में बदल जाए और हो सकता है कि जीवनकाल के आखिरी दो दिनों के अंदर ही स. भगत सिंह बदल गए हों। यह विभ्रम भी नहीं रहना चाहिए, क्योंकि 22 मार्च, 1931 (अर्थात् फांसी लगने से एक दिन पूर्व) उनकी अंतिम इच्छा पूछने के लिए जेल के एक वार्ड के कैदियों ने उनके पास एक पर्ची भजी। इस पर्ची को स. भगत सिंह ने क्या लिखकर उनके पास वापिस भेजा, देखोः-

'...हां एक विचार आज भी मेरे मन में आता है कि देश और मानवता के लिए जो कुछ करने की हसरतें मेरे दिल में थीं, उनका हजारवां भाग भी पूरा नहीं कर सका। अगर स्वतंत्र जिन्दा रह सकता, तब शायद इन्हें पूरा करने का अवसर मिलता और मैं अपनी हसरतें पूरी कर सकता। इसके सिवाए मेरे मन में कभी कोई लालच फांसी से बचने रहने का नहीं आया।'

अर्थात् यहां पर भी वे अपना जीवन एक नास्तिक के तौर पर व्यतीत करने पर कोई अफसोस प्रकट नहीं कर रहे तथा न ही और अधिक जीवित रह कर अपना जीवन आस्तिक के तौर पर बिताने का भावार्थ पेश कर रहे हैं।

इसके अलावा रणधीर सिंह के जिन पत्रों को आधार बनाकर श. भगत सिंह के आस्तिक होने की बात की जाती है, इसके बारे में श. भगत सिंह के भानजे प्रो. जगमोहन सिंह ने 'श. भगत सिंह एवं उनके साथियों के दस्तावेज' नामक पुस्तक में लिखा है, 'वे ही रणधीर सिंह अपने जेल-दस्तावेजों के पन्ना 627 पर लिखते हैं कि उनको भगत सिंह ने कहा था, 'मुझे क्षमा करोगे यदि मैं स्पष्ट शब्दों में अपने दिल को खोल दूं कि मैं नास्तिक हूं, ईश्वर को नहीं मानता।' यही नहीं प्रो. जगमोहन सिंह ने इसी पुस्तक में दर्ज किया है कि जेल के चीफ वार्डर स.

चतर सिंह ने बताया था कि 23 मार्च, सायं 3 बजे जब उसको फांसी का पता चला तो वह भगत सिंह के पास गया और कहा कि 'मेरी केवल एक प्रार्थना है कि अब आखिरी समय में वाहेगुरु का नाम स्मरण कर लो तथा गुरुबाणी का पाठ कर लो।' उन्होंने बताया कि :

'सरदार भगत सिंह ने जोर से हंस कर कहा, 'तुम्हारे प्रेम का धन्यवादी हूं, परन्तु अब जब कि अंतिम समय आ गया है, मैं ईश्वर को स्मरण करूं, तो वे कहेंगे कि मैं बुझदिल हूं। सारी उम्र तो मैं उसको स्मरण नहीं किया तथा अब जब मृत्यु सामने नजर आने लगी है, तो ईश्वर को स्मरण करने लगा हैं। इसलिए अच्छा यह ही होगा कि उसी भांति ही अपना आखिरी वक्त बिताऊं। मुझ पर यह इल्जाम तो कई लगेंगे कि मैं नास्तिक था और परमात्मा में विश्वास नहीं किया, परन्तु यह तो कोई नहीं कहेगा कि भगत सिंह बुझदिल एवं बेईमान भी था तथा आखिरी वक्त मौत को सामने देखकर उसके पैर लड़खड़ाने लगे।'

अतः इस विचार-चर्चा से स्पष्ट हो जाता है कि भगत सिंह एवं भाई रणधीर सिंह दरम्यान तो यह आखिरी मुलाकात थी, परन्तु अन्य लोगों एवं भगत सिंह के दरम्यान यह आखिरी मुलाकात नहीं बनती, क्योंकि उसके पश्चात् भी उनके साथ अन्य व्यक्तियों की मुलाकातें होती रही। हां, श.भगत सिंह ने भाई रणधीर सिंह को अपनी मुलाकात के दौरान स्पष्ट तौर पर बता दिया था कि वे नास्तिक हैं तथा उनकी मुलाकात के पश्चात् भी उन्होंने अपना लेख 'में नास्तिक क्यों' अखबारों को भेज दिया था, जोकि प्रकाशित हो गया था। इसके पश्चात् भी जिसके साथ भी जब भी मुलाकात होती रही वे स्वयं को नास्तिक ही बताते रहे तथा इसी तरह ही नास्तिकता पर कायम रहते हुए वे फांसी पर झूल कर शहीद हो गए।

अतः जो भी भद्रजन श.भगत सिंह को आज नास्तिक से आस्तिक के तौर पर पेश कर रहे हैं, वे लोगों से उनके महान सपूत असली (नास्तिक) भगत सिंह को ठगना चाहते हैं। क्यों? भगत सिंह संघर्षशील लोगों के लिए एक आदर्श बना हुआ है। जो भी इन्सान जिसको अपना आदर्श मानता है, वह उसके पदचिन्हों पर चलने के लिए पूरे प्रयत्न करता है, यह बात मनोवैज्ञानिक तौर पर बिल्कुल सही है। इसलिए श. भगत सिंह को नास्तिक से आस्तिक बना कर पेश करने वाले लोग वर्तमान में संघर्षशील लोगों को आस्तिक जीवन की ओर धकेलते हुए अपनी जिंदगी आप बनाने के लिए संघर्ष करने वाले लोगों को कैसा बनाना चाहते हैं। इस बारे स. भगत सिंह का ही हवाला देते हैं।

'जो कुछ भी है ईश्वर ही है, आदमी तो कुछ भी नहीं। मिट्टी का पुतला है' यह विचार के दिल में घर कर जाते ही आदमी में आत्मविश्वास का भाव मारा जाता है। उसे महसूस होने लग जाता है कि वह बड़ा कमजोर है। वह अत्यंत डरपोक बन जाता है। जितनी देर तक यह डर मौजूद है, उतनी देर तक पूर्ण सुख एवं शांति नहीं हो सकती।'

श.भगत सिंह को आस्तिक साबित करने की कोशिश करने वाले भगत सिंह के उपरोक्त कहे हुए शब्दों के अनुसार जनता को सिर झुका कर रेंगते हुए जीवन बिताए जाने की दशा की ओर धकेलने के लिए प्रयासरत हैं।

हिन्दी अनुवाद बलवंत सिंह प्राध्यापक

एक आदमी
रोटी बेलता है
एक आदमी रोटी खाता है
एक तीसरा आदमी भी है
जो न रोटी बेलता है, न रोटी खाता है
वह सिर्फ रोटी से खेलता है
मैं पूछता हूं..
'यह तीसरा आदमी कौन है?
मेरे देश की संसद मौन है।

-धूमिल

मन की बीमारियां : भूतबाधा, देवी सवारना

लेखक : डा. नरेन्द्र दाभोलकर,

वैज्ञानिक हो, साहित्यकार हो या आम आदमी-सभी की 'मन' के बारे में जिज्ञासा होती है। मन कहां होता है? वह बीमार क्यों होता है? अधिकांश लोग इससे अनजान होते हैं। 'मन' शब्द का प्रयोग रोज किया जाता है, फिर भी उसके बारे में जानने वालों की संख्या कम ही होती है। 'मन' की जिज्ञासा हर एक में होती है। मराठी साहित्य की सुविख्यात कवयित्री बहिणाबाई ने अपने काव्य में मन को एक पल में खसखस (खशखाश) के समान सूक्ष्म और दूसरी ओर आकाश में ऊंची उड़ान भरने वाले पंछी के भव्य रूप में चित्रित किया है।

मन को गहराई से न जानने के कारण लोग उसकी बीमारियों से आतंकित होते हैं। दिमाग के जरिए हुई उसकी रचना एवं उसे कार्य से सामान्य मनुष्य अभी भी अनजान है। इसीलिए वह मानसिक बीमारियों से घबराता है। इसके कुछ कारण निम्नलिखित हैं :

1. स्वस्थ शरीर के बावजूद व्यक्ति इस बीमारी से पीड़ित होता है।

2. इस बीमारी के लक्षण अचानक नजर आते हैं और उतनी ही तेजी से गायब भी होते हैं। मन को दुखी करने वाली किसी घटना या कारण के बिना यह बीमारी होती है। वह बार-बार उत्पन्न होती है, गायब होती है। इसीलिए वह अजीब लगती है।

3. कभी-कभी सूचना देने से, धमकाने से या दहशत से भी यह बीमारी कुछ समय के लिए कम हो जाती है। इस सुधार (!) का श्रेय दैवी शक्ति अथवा ऐसी शक्ति प्राप्त होने का दावा करने वाले व्यक्ति (साधु, मांत्रिक, भगत आदि) को दिया जाता है। बीमार व्यक्ति पूरी तरह ठीक नहीं होता, जिसका कारण किसी शक्तिमान बाधा को बताया जाता है। इसके सामने भगत भी कभी-कभी परास्त हो जाता है। लोग भी इस कारण को तुरंत मान लेते हैं।

4. यह बीमारी आनुवंशिकता से पीढ़ी-दर-पीढ़ी संक्रमित भी होती है। कभी-कभी बीच की कोई पीढ़ी इससे मुक्त रहती है। वस्तुतः उस पीढ़ी में इस बीमारी के लक्षण अप्रकट रहते हैं। अगली पीढ़ी में फिर इसके लक्षण किसी सदस्य में पाए जाते हैं। अज्ञानी लोग उन्हें 'शापित घराना' मानते हैं।

5. यह बीमारी किसी शक, अनजाने डर अथवा मन में दबी हुई आशा, आकांक्षा एवं इच्छाओं का मिश्रण होती है। यह मरीज की निरर्थक बड़बड़ाहट एवं हाव-भावों से व्यक्त होती है। लोग अपने-अपने तरीकों से इसका अस्पष्ट अर्थ निकाल लेते हैं।

मन का स्वरूप

मनुष्य का व्यवहार अर्थात उसकी भावनाएं, उसके विचार, आचार-इन सबका अध्ययन ही मन का अध्ययन होता है। इन बातों का नियंत्रण मन के माध्यम से होता है। एक उदाहरण देखते हैं-सरकार का अर्थ क्या है? इस प्रश्न के अनेक उत्तर हैं-लोक प्रतिनिधि, शासन, न्याय-व्यवस्था एवं सैन्यदल। प्रत्येक उत्तर आंशिक रूप से सही है। ऐसी और अनेक बातों के समावेश से सरकार बनती है। ठीक उसी तरह मनुष्य की बुद्धि, उसकी भावनाएं, वासनाएं, स्मृतिक्षमता, कल्पना का अहसास तथा ऐसी ही अन्य अभिव्यक्तियों से 'मन' का निर्माण होता है। मनुष्य के दिमाग में तकरीबन एक हजार करोड़ मज्जाकोशिकाएं होती हैं। विद्युत रासायनिक स्पंदनों से वे जुड़ी होती हैं। मनुष्य का मन इस दिमाग में अर्थात मज्जाकोशिकाओं और उनके विद्युत रासायनिक स्पंदनों से होता है। मनुष्य का मस्तिष्क उसे अन्य प्रणालियों से अलग कर देने वाला है। उसकी रचना एवं कार्य पद्धति बेहद जटिल है। निम्नस्तरीय प्राणियों का मस्तिष्क केवल जीवन के लिए जरूरी श्वसन, हृदय के स्पंदन आदि का ही नियमन करता है। उत्क्रांति की प्रक्रिया में प्राणियों के उच्च स्तर के अनुसार मस्तिष्क का कार्य अधिक जटिल और विकसित हुआ। इस

स्थिति में वह सांस लेना, हृदय की धड़कनें, स्वसुरक्षा, क्रोध अथवा प्रक्षिप्त क्रियाओं पर भी नियंत्रण रखने लगा है। मानव जाति के स्तर पर मस्तिष्क के दृष्टिकोण में ये कार्य प्राथमिक ही होते हैं। मस्तिष्क के विकास से ही मनुष्य में विचार, भावना एवं विवेकबुद्धि का विकास होता है। प्राकृतिक संवेदनाओं पर नियंत्रण रखने की क्षमता केवल विकसित मस्तिष्क में होती है। सभी प्राणियों के मस्तिष्क का अध्ययन करने के बाद समझ में आता है कि अविकसित अवस्था वाले प्राणियों का मस्तिष्क, मनुष्य के मस्तिष्क, मनुष्य के मस्तिष्क के ब्रेनस्टेम नामक हिस्से के समान होता है। मनुष्य के मस्तिष्क में श्वसन एवं हृदय के कंपनों का एक केंद्र होता है। लेकिन यह बहुत छोटा होता है। प्राणियों की भावनाएं और विचार जैसे-जैसे विकसित होते गए, वैसे-वैसे मस्तिष्क का अन्य हिस्सा, फ्रांटललोब, प्री-फ्रांटललोब, लिंबिक सिस्टम मस्तिष्क में अधिकाधिक जगह लेते गए। इस प्रकार मनुष्य का मस्तिष्क तैयार हुआ। मनुष्य की भावना, विचार एवं आचार को नियंत्रित करने वाला उसके मस्तिष्क का यह हिस्सा अन्य प्राणियों की अपेक्षा बड़ा होता है। सभी मानसिक प्रक्रियाएं 'नूतन मस्तिष्क' के जरिए नियंत्रित होती हैं। मस्तिष्क की अनगिनत कोशिकाएं एक-दूसरे से जुड़ी होती हैं उन्हें सायनाप्सेस कहा जाता है। इसके आधार से जुड़ी चेतन संस्था की कोशिकाओं का बहुत बड़ा जाल मस्तिष्क में होता है। उस जाल के द्वारा ही पूरे शरीर में संदेश भेजे जाते हैं। उसके द्वारा ही सभी ग्रंथियों, शरीर के अंगों एवं रगों पर नियंत्रण रखा जाता है। इस नियंत्रण में सायनाप्सेस का बड़ा योगदान होता है। इस सायनाप्सेस में सिरोटोनीन, इपीनेफ्रीन, गैबा जैसे अनेक रसायन होते हैं। शरीर में कौन-सा रसायन कितनी मात्रा में है, इस पर संदेश वहन का कार्य निर्भर होता है। इन रसायनों का संतुलन बिगड़ने पर संदेश वाहन का कार्य बिखर जाता है और मस्तिष्क के उस हिस्से से नियंत्रित होने वाली भावनाओं एवं विचारों के बीच दोष उत्पन्न हो जाते हैं। जैसे सिरोटोनीन के कारण मन शांत होता है, लेकिन उसके असंतुलन से भ्रम पैदा होते हैं डोपामाइन शारीरिक हलचल को दिमाग के द्वारा नियंत्रित करता है, लेकिन उसका स्तर नीचे गिरने पर पार्किसंस नामक बीमारी हो जाती है।

मन और फ्रायड के विचार

आधुनिक मन का रचनाकार और मानसशास्त्र का जनक डा. सिग्मंड फ्रायड है। मानसिक क्रियाओं के बारे में उन्होंने दो विचार बताए हैं :

1. प्रत्येक व्यक्ति के अंतर्मन की गहराई में प्राकृतिक अवस्था में होती है। उन्हें बेसिक इंस्टिंक्ट कहा जाता है। उसमें से 'इद' नामक मन केंद्र बनता है। भूख, लैंगिक भावनाएं, आक्रमण, स्वसुरक्षा-से प्रेरणाएं हैं। मनुष्य एक सामाजिक और सुसंस्कृत प्राणी है। इसीलिए आदिप्रेरणाओं को अन्य प्राणियों के समान स्वीकार लेना उसके लिए संभव नहीं होता। इन प्रेरणाओं का दबाव उसके मन पर अधिक होता है, क्योंकि वे प्राकृतिक प्रेरणाएं होती हैं।

व्यक्ति बचपन से यौवन तक परिवार में ही विकसित होता है। आसपास के माहौल से वह व्यवहार संबंधी कुछ नीति-नियम सीखता है। वे नियम उसके व्यक्तित्व का हिस्सा बन जाते हैं। मनुष्य मन के इस हिस्से को 'सुपर ईगो' कहा गया है अर्थात् 'इद' और 'सुपर ईगो'-ये केवल भिन्न ही नहीं, बल्कि विरुद्ध दिशाओं में प्रवाहित होने वाले प्रभावी प्रवाह हैं। परिणामस्वरूप व्यक्तित्व में बिखराव आता है। इन दोनों प्रवाहों का निरंतर संघर्ष व्यक्ति के लिए हानिकारक होता है। इसीलिए दो भिन्न प्रवृत्तियां संतुष्ट हों, उन्हें कम से कम पीड़ा हो, इस तरह का हल निकालने एवं समन्वय कायम करने की जिम्मेदारी मन के एक हिस्से को ही निभानी पड़ती है। यह समन्वय कायम करते समय ही बीच का हिस्सा विकसित होने लगता है, जिसे 'ईगो' कहा जाता है। यह ईगो, इद और सुपर ईगो। इन दोनों को कम से कम नाराज कर अधिक से अधिक संतुष्ट रखने का खेल खेलता है। वह सकारात्मक और नकारात्मक दोनों तरह का होता है। सुरक्षा के इस खेल के कुल योग से ही व्यक्तित्व विकसित होने की महत्वपूण क्रिया पूरी होती है।

2. हमारे मन में जो भी घटित होता है, उससे हम थोड़े-बहुत अनजान होते हैं। जिस मानसिक हलचल का अहसास हमें होता है, उसे हम जागृत मन कहते हैं। जागृत मन के विचार, स्मृतियां एवं भावनाओं से हम आसानी से वाकिफ होते हैं। लेकिन मन का दूसरा हिस्सा गहरा होता है, जिसे अचेतन

मन कहा जाता है। इस मन में बहुत-सी स्मृतियां, तीव्र भावनाओं का कोलाहल मचा रहता है। हिमखंड के रूपक के जरिए इस बात को अच्छी तरह समझा जा सकता है। हिमखंड का एक दशमलव हिस्सा पानी के ऊपर होता है और सात दशमलव हिस्सा पानी के अंदर होता है। उसी तरह रूपक की भाषा में कहें तो बाह्य मन, प्रकट मन, व्यक्त अहसास हिमखंड के एक दशमलव हिस्से की तरह होता है और अव्यक्त, अचेतन अंतर्मन हिमखंड के सात दशमलव हिस्से की तरह होता है। मस्तिष्क की प्रत्यक्ष रचना में ऐसे दो हिस्से नजर नहीं आते, लेकिन व्यवहार में उनका अनुभव होता है। जैसे रास्ते पर चलने वाला एक व्यक्ति हमें नजर आता है। विगत बीस वर्षो में हमने उसे नहीं देखा है, उसका फोटो भी नहीं देखा है। उसकी आवाज भी कभी नहीं सुनी है। उसके साथ हमारा कोई संपर्क भी नहीं है, फिर भी उस व्यक्ति को देखकर उससे बचपन की दोस्ती याद आती है। बीते बीस वर्षो में कोई संपर्क नहीं होने पर भी उसकी स्मृति हमारे अंतर्मन में सुरक्षित थी। जागृत मन से उस व्यक्ति को देखते ही अंतर्मन के गोदाम में उस स्मृति को निकालकर व्यक्ति को उसका अहसास करवाया।इसका मतलब है-अंतर्मन का गोदाम बिल्कुल ठीक तरह से बंद है और जागृत मन सक्रिय है। इस गोदाम में कौन-सा संकलन नहीं होता? हमारे जन्म से लेकर वर्तमान क्षणों तक अनेक भावनाएं हार-जीत, सुख-दुख, आशा-निराशा-यह सब उस गोदामरूपी अंतर्मन में रखा जाता है। इच्छा होते हुए भी निरंतर संघर्ष का सामना करना पड़ता है। ऐसी अनेक नकारात्मक बातें किसी से बांटी नहीं जाती, बल्कि अंतर्मन में बंद रखी जाती हैं। यह माल गोदाम की क्षमता से परे होने पर उसमें नहीं समा सकता। अगर वह विस्फोटक हो तो मामूली कारण से भी फट जाता है।

भारतीय महिलाएं अत्यधिक तनाव एवं परेशानियों से अपने अंतर्मन के गोदाम को भरती रहती हैं। इसका एक कारण घर और समाज में उन्हें दिया गया गौण स्थान भी है। घर-परिवार अथवा सामाजिक संबंधों में एक के बाद एक सदमा पहुंचने से मनुष्य अत्यधिक घुटन का अनुभव करने लगता है जैसे- लड़ाई-झगड़ा होना, किसी की अचानक मृत्यु हो जाना, जायदाद का अधिकार हाथ से निकल जाना आदि गंभीर दुर्घटनाओं के आगे अंतर्मन की सहन क्षमता टिक नहीं पाती है। विशेष रूप से जो व्यक्ति दूसरों पर अधिक निर्भर रहते हैं, अपने निर्णय स्वयं नहीं ले पाते हैं, दूसरों की सूचनाओं पर आश्रित होते हैं, उनके अंतर्मन का गोदाम वेदनाओं से, दुख से बहुत शीघ्र भर जाता है। किसी भी उपचार या उपाय से उस गोदाम को खाली करना आवश्यक होता है। कुछ समय ऐसी भी देखा गयाहै कि कोई बाह्य तनाव न होते हुए भी व्यक्ति पागल के समान हरकतें करता है अर्थात् इसका आंतरिक कारण उसके जागृत मन और अंतर्मन के बीच संवाद न हो पाना है। ऐसे व्यक्ति के चेहरे पर अजीबोगरीब हावभाव नजर आने लगते हैं, आवाज बदल जाती है, आंखें बंद कर वह चक्कर लगाने लगता है। छाती पर हाथ बांध कर घूमने लगता है। वह 'जय देवी मां' या ऐसी ही कुछ चिल्लाने लगता है। कुछ समय के लिए वह मानो अलग व्यक्तित्व धारण कर लेता है। अपने कपड़ों का, व्यवहार का, आसपास के माहौल का उसे होश नहीं रहता। दूसरे लोग समझ नहीं पाते कि वह ऐसा क्यों करता है। ज्यादातर लोग मान लेते हैं कि उस व्यकित को भूत-पिशाच की बाधा है अथवा उस पर देवी सवार है। वास्तव में ऐसा सोचना ऐसे परंपरागत अंधविश्वासों के प्रभाव के कारण हैं जो ढकोसलों को जन्म देता है।

भूत-प्रेत क्या है?

भूत-प्रेत के दर्शन या उनकी बाधा दो प्रकारों से होती है। एक आभासी भूत और दूसरा मानसिक बीमारी से पैदा होने वाला विचित्र व्यवहार का भूत। समाज के सभी उम्र के स्त्री-पुरुषों में, शहरी अथवा देहाती लोगों में, शिक्षित अथवा अनपढ़ लोगों में, गरीब अथवा अमीर लोगों में 'भूत' अथवा 'पिशाच' की रहस्यात्मक कल्पना पाई जाती है। यह कल्पना कैसे निर्मित होती है? हमारे देश में परंपरागत विचारधारा 'आत्मा' को मानती है। मनुष्य की मृत्यु के पश्चात वह आत्मा अगर असंतुष्ट रहती है तो सूक्षम रूप में उसका अस्तित्व बना रहता है और अपनी अधूरी वासना को पूरी करने के लिए वह किसी भी शरीर का चयन करती है। इस स्थिति में वह उस शरीर यानि कि व्यक्ति को अवश या भ्रमित

कर देती है। भूत-पिशाच के संदर्भ में पर्याप्त जानकारी हमारे समाज में मिल जाती है। व्यक्ति को भूत-बाधा कैसे होती है और यह विशेष मंत्र-तंत्र से कैसे दूर होती है, उसका सरस वर्णन करने वाली पुस्तकें बाजार में बेची जाती है। उनमें भूत-प्रेत, पिशाच से मुक्ति पाने के लिए 'ऊंक कल्याणं शोभानाभ्यं नः।' जैसे मंत्र का हर रोज 1008 बार जप करने का उपाय सुझाया गया रहता है। पीड़ित व्यक्ति अगर जप नहीं कर सकता तो अन्य व्यक्ति को उसकी बगल में बैठकर वह काम करना चाहिए। मंत्र का जप करते समय तांबा या चांदी के बर्तन में पानी रखना चाहिए। मंत्रोच्चारण का रेकॉर्ड बजाकर भी यह कर्म पूरा हो सकता है। ऐसी भरपूर सुविधाजनक जानकारी देने वाली अनगिनत किताबें बाजार में उपलब्ध हैं।

जीवन में मृत्यु अटल होती है। वह किसी भी रूप में आ सकती है। किसी की हत्या हो जाती है, कोई आत्महत्या कर लेता है, कोई दिल की बीमारी का शिकार हो जाता है। कोई स्त्री बच्चे को जन्म देते समय मर जाती है। अचानक ही जीवन को व्यक्ति की इच्छा के बगैर खत्म करने वाली ऐसी मृत्यु उस व्यकित की अनेक इच्छाओं को अधूरा रखती है। इसीलिए वह मरा हुआ व्यक्ति आत्मा बनकर भटकता है। वह आत्मा किसी पेड़ पर बैठती है और अपनी इच्छाओं को पूरा करने का मार्ग ढूंढने लगती है। भारतीय लोगों को बचपन से ही ऐसा ज्ञान और संस्कार दिया जाता है। उन्हें 'भूत-पिशाच, वेताल, खबीस, चुड़ैल, बरुववा जैसे अनेक अलौकिक जीवात्माओं के बारे में बताया जाता है। ब्राह्मण की हत्या होने पर वह ब्रह्मराक्षस बन जाता है। वह ब्राह्मण अगर धन का लोभी हो तो उसका ब्रह्मसंबंध हो जाता है। पनघट, कब्रिस्तान, खंडहर, पुरानी हवेलियां तथा बरगद एवं पीपल के पेड़ों पर भूतों का डेरा होता है। अमावस की आधी रात में वे निश्चय ही प्रकट होते हैं। उनके लिए नींबू, पीला चावल और मुर्गी का उतारा जरूरी होता है। इन भूतों का सिर नहीं होता, उनकी आंखें सीने पर होती हैं, उनकी छाया या प्रतिबिंब नहीं होता। उनके पैर उलटे होते हैं। रामनाम या हनुमान चालीसा का उच्चारण या जप करने पर भूत भाग जाते हैं।' ऐसे संस्कार बचपन से ही मन पर अंकित कर दिए जाते हैं, जिससे भूत की कल्पना दिमाग में जड़ जमाकर बैठ जाती है।

यह सब कुछ चार कारणों से होता है-ढोंग, संस्कार, मनुष्य का सुनी-सुनाई बातों को सच मान लेने का स्वभाव एवं इंद्रियजन्य भ्रम। इन सभी के अलग-अलग भ्रम अथवा समग्र कल्पना ही भूत होती है।

भूत का निर्माण

सदियों से 'भूत' की कल्पना पर लोगों का अंधविश्वास है। इक्कीसवीं सदी में भी जनसंचार माध यम इस अंधविश्वास को बड़े उत्साह से प्रसारित कर रहे हैं। 10 से 12 वर्ष का बाल मन, प्राप्त ज्ञान की तर्क की कसौटी पर जांच-पड़ताल नहीं कर सकता। उसी उम्र में किताबों, आसपास के लोगों एवं जनसंचार माध्यमों के जरिए बच्चों को भूतों के बारे में सारी जानकारी मिल जाती है। संक्षेप में, 'भूत होता है' यह मानने का संस्कार मन पर गहराई से प्रभाव डालता है। लोग विज्ञान का ज्ञान प्राप्त कर लेते हैं, लेकिन समस्या यह होती है कि अंतर्मन की गलत जानकारी खींचकर जागृत मन में लाना, तार्किक विवेचन के द्वारा प्राप्त जानकारी जो अज्ञान है, उसे दूर करना और नई वैज्ञानिक जानकारी अंतर्मन में रखना उन्हें रास नहीं आता। ऐसी कोशिश भी नहीं की जाती है। भूत-पिशाचों की स्वैर कल्पनाएं मन में केवल एक आतंक पैदा करती हैं। बचपन में डराने या चुप कराने के लिए बच्चों को 'बांगुलबुवा' अथवा 'शैतान' के आने का डर दिखाया जाता है, जो बड़ा होने पर भी उसके मन में कहीं न कहीं छुपा रहता है।

मनुष्य का मन सूचनाओं पर बिना सोच-विचार के शीघ्र ही भरोसा कर लेता है। विज्ञापनों का अध्ययन करने पर यह मुद्दा अधिक स्पष्ट होता है। कोई अभिनेत्री अपनी सुंदरता का राज किसी साबुन को बताती है और उस साबुन की बिक्री काफी बढ़ जाती है। इस कारण क्या है? उस अभिनेत्री के शब्दों से अनेक का सुप्त मन इस सूचना को मान लेता है कि अभिनेत्री के समान सुंदर बनने का तरीका वह साबुन है। ठीक उसी तरह 'भूत' की कल्पना के बारे में सूनी-सुनाई चर्चा, जनसंचार माध

यमों से बताई गई बातें, जैसे-भूतबंगला, पीड़ित विचित्र लोग तथा जादू-टोना के प्रसंग कल्पना नहीं, बल्कि वास्तव में घटी और जांच-पड़ताल की हुई घटनाएं हैं, ऐसा सुप्त मन मान लेता है। विभिन्न संचार माध्यम मामूली स्वार्थ के लिए ऐसा गलत प्रचार करते हैं। वास्तव में सभी स्तरों पर इसका विरोध किया जाना चाहिए। उसकी अवैज्ञानिकता को स्पष्ट करना चाहिए। सभी को उसकी काल्पनिकता से आगाह करना चाहिए।

'इंद्रियजन्य भ्रामकता' भी भूत-निर्माण का एक कारण है। शास्त्रीय परिभाषा में इसे (Ilusion) या विभ्रम कहा जाता है। इसका मतलब है, 'जो जैसा नजर आता है, वह वैसा नहीं है।' अंधेरे कमरे में रस्सी को भी कई लोग सांप समझ लेते हैं। गर्मी के दिनों में, तपती धूप में, कोलतार की सड़कों पर दूर से पानी की लहरों का आभास होता है। वास्तव में वह मृगजल या मृगमरीचिका होती है। रात के घने अंधेरे में रास्ते पर सरपट भागने वाली गाड़ी में बैठे यात्रियों को सड़क किनारे मौजूद पेड़ या बड़े पत्थर हलकी-सी रोशनी में कोई विचित्र चीज लगते हैं। आंखों को दिखाई देने वाले दृश्य के कार्य-कारण भाव पर गौर न करने से 'भूत' जैसी कल्पनाएं और मजबूत हो जाती हैं। रात के सन्नाटे में घर की दीवार की आड़ में कोई अस्पष्ट आकृति नजर आती है। उसका पता लगाने के लिए घर का व्यक्ति उध ार जाता है और उसकी आहट सुनते ही चोर भाग जाता है। उसी समय दीवार की आड़ से एक कुत्ता सामने आता है, उसे देखने वाला व्यक्ति अगर कार्य-कारण भाव के बारे में नहीं सोचता, तो उसे यह प्रश्न सताता है कि अभी तो वहां कोई आदमी था, अब कुत्ता कैसे सामने आ गया? वह अन्य लोगों को बड़े आश्चर्य से सुनाता है, 'अरे, कल रात एक भूत ने पल में ही कुत्ते का रूप धारण कर लिया। यह मैंने अपनी आंखों से देखा है।' सुनने वाले ने इस घटना की तर्कसंगत पड़ताल नहीं की तो निश्चय ही वह इस गलत सूचना को स्वीकार लेगा और अनेक लोगों को यह किस्सा किसी वास्तविक घटना की तरह सुनाएगा। पैरों में लंबी लकड़ियां बांध ाकर चलने की कसरत कुछ लोग करते हैं। लकड़ियों को ढकने के लिए वे लंबी सलवार पहनते हैं। रात के समय ऐसी ही सफेद सलवार पहनकर चलने वाला मनुष्य किसी को नजर आता है तो वह बचपन से ही मिले भूत के संस्कार-ज्ञान के कारण उसे भूत समझ लेता है। रात का समय, हलकी-सी रोशनी और इंद्रियों का भ्रम जैसी अनुकूल स्थिति इतनी ऊंची और सफेद आकृति को 'भूत' मानने की सूचना को स्वाभाविकता से स्वीकार कर लेती है और फिर उसका प्रसार भी होने लगता है।

भूत की कल्पना को मजबूत अंधविश्वास बनाने का काम समाज में मौजूद स्वार्थी और ढोंगी साधु करते हैं। वे बहुत चतुर ओर छलिया होते हैं। अपने मामूली स्वार्थ के लिए वे 'भूत' की कल्पना को अधिक बढ़ावा देते हैं। पुरानी हवेलियों में, जहां पर नंबर दो के धंधों का बोलबाला रहता है, वहां ऐसे दुष्ट लोग अफवाहें फैलाते हैं कि 'वहां पर भूत है' ताकि लोग डर के मारे वहां जाने न पाएं।

संस्कार, सूचना पर सहज भरोसा करने एवं इंद्रियजन्य भ्रम के कारण 'भूत' की कल्पना का निर्माण होता है। इसका उदाहरण 'अंधश्रद्धा निर्मूलन आंदोलन' के सक्रिय कार्यकर्ता अब्राहम कोवूर ने अपने अनुभव से स्पष्ट होगी। अब्राहम कोवूर और उनकी पत्नी श्रीलंका के रिचमंड हिल पर रहते थे। वहां के एक टीले पर उनका कालेज एवं घर भी था। टीले की तलहटी में छात्रावास था। एक शाम कोवूर दंपति छात्रों से मिलने नीचे छात्रावास में गए। गपशप में भूत-पिशाच, अंधविश्वास पर चर्चा शुरू हो गई। कोवूर दंपति ने छात्रों को समझाने की कोशिश की कि भूत केवल एक कल्पना है। देर रात दोनों वापसी पर निकले तो छात्रों ने बताया कि वापसी के रास्ते पर एक पुराना बरगद का पेड़ है, जिसे 'महावेताल का पेड़' कहते हैं। अनेक लोगों को रात के अंधेरे में वहां भयावह जानवरों-पंछियों के रूप में भूतों के दर्शन हुए हैं और बड़े-बड़े हादसे हुए हैं। इसीलिए कोवूर दपंति वह रात छात्रावास में गुजारें और सुबह वापस लौटें। छात्रों की इस सलाह पर वे दोनों केवल मुस्कराए और वापिस लौटने लगे। चलते-चलते दोनों के बीच यह चर्चा होती रही कि किस प्रकार आज के छात्र ऐसे अंधविश्वास पर भरोसा रखते हैं। कुछ दूरी पर उन्हें वह बरगद

(शेष पृष्ठ 31 पर.....)

8 मार्च महिला दिवस पर विशेष

इतिहास की रोशनी में
महिला दिवस की सार्थकता

8 मार्च, अंतर्राष्ट्रीय दिवस, अर्थात ऐसा दिन जो दुनिया भारत की महिलाओं के लिए ऐतिहासिक, बेहद विशेष और प्रेरणादायक दिवस है। हमारे समाज में यह धारणा आम प्रचलित है कि औरतों को लड़ना नहीं चाहिए। औरतें संगठित नहीं हो सकतीं, वे तो सिर्फ रो सकती हैं आदि। पर महिला दिवस का इतिहास जानने के बाद पता चलता है कि जैसा यह पूँजीवाद समाज चाहता है कि महिलाएं कभी लड़ें ही ना, और बिना किसी संदेह यह महिला विरोधी ढांचा और चाहता भी क्या है। आज हम एक ऐसे दौर में जी रहे हैं जब महिलाएं दोहरी गुलामी की बेडियों में जकड़ी हुई हैं, इस लिए ऐसे समय में महिलाओं केइतिहास की भूमिका कई गुना बढ़ जाती है।

महिला दिवस का आरम्भः

महिला दिवस का आरंभ 1908 की इंटर्नेशनल लेडीज़ गार्मेंटस वर्कर्ज यूनियन की ओर से कार्य की हालतों में सुधार और काम के घंटे घटाने, बराबरी और बराबर वेतन के लिए हड़ताल के साथ बांधा गया था। 14 सप्ताह की इस लम्बी हड़ताल में 20000 मजदूर शामिल हुए जिनमें ज्यादातर महिलाएं थीं। पुलिस की ओर से किये जा रहे ज़बर ने इस इतिहासिक हड़ताल को कुचल दिया। अमेरिका की समाजवादी पार्टी ने इस संघर्ष को याद करते हुए 29 फरवरी, 1909 को राष्ट्रीय स्तर पर पहला महिला दिवस मनाया। इस दिन देश भर में महिलाओं के लिए वोट का अधिकार मांगते हुए बड़े स्तर पर मीटिंगें और मुज़ाहरे किये गये। इस तरह महिला दिवस संगठित करने का श्रेय अमेरिका की श्रमिक औरतों को जाता है।

अमेरिका की समाजवादी पार्टी से प्रेरित होकर 1910 में दूसरी कम्यूनिस्ट इंटरनेशनल महिला कानफ्रेंस में जर्मनी की कम्युनिस्ट पार्टी की नेता कलारा जैटकिन ने महिला दिवस को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मनाने का सुझाव पेश किया। 11 देशों से आई 100 महिलाओं ने कलारा जेटकिन के इस सुझाव को महिलाओं के लिए बराबरी के अधिकार और वोट डालने का अधिकार की मांग के तौर पर स्वीकार किया। इस कानफ्रेंस में यह फैसला लिया गया कि हर वर्ष सभी देशों में एक ही दिन महिला दिवस मनाया जायेगा। परंतु इसके लिए पक्की तारीक तय नहीं की गई थी।

पहला अंतर्राष्ट्रीय दिवसः

दूसरी कानफ्रेंस में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाने का जो फैसला लिया गया था उसके 19 मार्च, 1911 का दिन निश्चित किया गया। यह दिन इस लिए चुना गया क्योंकि 1848 में इसी दिन जर्मन में पर्शियन राजा को श्रमिक लोगों की बगावत के आगे घुटने टेकने पड़े थे। 19 मार्च, 1911 को पहली बार लाखों लोगों की ओर से आस्ट्रिया, डैनमार्क, जर्मनी और स्विटजर्लैंड में पहले अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया गया। इस दिन गावों में व शहरों में जगह-जगह मीटिंगों का आयोजन किया गया जिनमें कामगार औरतों और घरेलू औरतों ने अपनी बराबरी के अधिकर और वोट डालने के अधिकर की मांग करते हुए और ज्यादा जोर-शोर से हिस्सा लिया। केवल आस्टरो-हंगेरियन में ही 300 प्रदर्शन किए गये। इस दौरान 30,000 लोगों की ओर से निकाले गये लम्बे मार्च पर पुलिस ने हमला करके प्रदर्शनकारियों के बैनर छीनने की कोशिश की जिसका महिलाओं ने डट कर मुकाबला किया।

रूस की औरतों ने 8 मार्च, 1913 को अपना पहिला अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया जिसके लिए कई महिलाओं को देश निकाला की सजा काटनी पड़ी व कइयों को जेल की काल-कोठड़ी की हवा खानी पड़ी। तब से ही महिला दिवस 8 मार्च को महिला दिवस मनाया जाने लगा। 1914 में

महिला दिवस के अवसर पर लंडन में वोट डालने के अधिकार की मांग करते हुए महिलाओं ने एक मार्च निकाला था। इस दौरान सिलविया पैनखुश्त, एक कम्युनिस्ट नेता जिसने लोगों को संबोधित करना था, को चौक पहुंचने से पहले ही गिरफ्तार कर लिया गया। इस तरह अन्य कई देशों में महिला दिवस मनाए जाने लगे।

महला दिवस वह पहला विश्वयुद्धः

1915 और 1916 में महिला दिवस पर 'युद्ध की समाप्ति' के लिए प्रदर्शन करने का फैसला लिया गया था, परंतु विश्व युद्ध में बने हालातों के कारण इस को लागू नहीं किया जा सका। 1915 में केवल नार्वे में ही महिला दिवस मनाया जा सका। विश्व युद्ध के फलस्वरूप हुई लोगों की बदहाली से तंग आ चुकी रूस की महिलाएं 1917 में महिला दिवस के मौके पर दलेरी और बहादुरी के साथ 'बच्चों के लिए रोटी' और 'युद्ध की समाप्ति' जैसी मांगों को लेकर पेतरोग्राद की सड़कों पर उतर आई। महिलाओं के जोश और गुस्से के समक्ष ज़ार की पुलिस भी कुछ न कर सकी और इस घटना ने रूस के फरवरी इनकलाब की शुरूआत की। इस मायनों में महिला दिवस एक ऐतिहासिक याद बन गया।

1917 के इन्कलाब के पश्चात् वलादीमीर लेनिन और अलैंगजांदर कोलनताई ने सोवियत रूस में महिला दिवस के अवसर पर छुट्टी का ऐलान करके 8 मार्च का दिन अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के नाम से स्थापित कर दिया। इस के पश्चात् 1922 में चीन के कम्युनिस्टों ने और बाद में 1936 में स्पेन के कम्युनिस्टों ने इस दिन को मनाना शुरू कर दिया। इस प्रकार दुनिया भर में कामगार औरतों के संघर्षों की याद में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया जाने लगा।

वर्तमान समय में महिला दिवस का प्रासंगिकताः

महिला सिदवस का इतिहास महिला मुक्ति का इतिहास है। परंतु आज इस सरमायेदारी ढांचे में महिला दिवस मनाने का मतलब महज फूलों, उपहारों और पार्टियों तक सीमित हो कर रह गया है। यह फूल, उपहार और पार्टियां औरतों की मुक्ति का तो पता नहीं परंतु औरतों की गुलामी की उस गांठ को और ज्यादा पक्का कर देती हैं जिस में इस महिला विरोधी ढांचे ने उसको जकड़ा हुआ है। इसलिए आज के समय में महिला दिवस मनाने का अर्थ इतिहास के मार्ग दर्शन में वर्तमान समय में महिला दिवस के लिए कुछ उद्देश्य तय करने होंगे।

सब से पहले महिलाओं को अपनी विरासत के साथ एकजुट होकर यह समझना पड़ेगा कि महिला दिवस के इस लंबे इतिहास में औरतों ने बहुत कुछ हासिल किया है, परंतु उस से बड़ा सच यह है कि अभी बहुत कुछ हासिल करना बाकी है। महिला दिवस की लड़ाई औरतों के लिए वोट का अधिकार हासिल करने तक ही समाप्त नहीं हो जाती। दूसरी बात, औरतों को यह समझ लेना चाहिए कि उन्हें अपनी मुक्ति के लिए स्वयं ही आगे आना पड़ेगा। शर्म-हया के सारे बंधन और रीति रिवाजों की जंजीरों को तोड़ कर उनको अपनी आजादी के लिए लड़ना पड़ेगा। तीसरी और अंतिम मुख्य बात, औरत की गुलामी की जड़ें इसी मौजूदा ढांचे में विद्यमान हैं। इसलिए आज औरत अपनी मुक्ति समुचे समाज की मुक्ति के बिना हासिल नहीं कर सकती। आज अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर महिलाओं को अपनी लड़ाई के लिए बढ़े हुए कदमों को इस ढांचे के विरुद्ध संघर्ष कर रही मजदूर जमात के कदमों के साथ मिला कर लड़ना होगा। यही महिलाओं का इतिहास रचने वाली कामगार औरतों को सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

(साभारः'तबदीली पसंद नौजवान ललकार')

अनमोल विचार

जब तक हिरण अपना इतिहास खुद नहीं लिखेंगे तब तक हिरणों के इतिहास में शिकारियों की शौर्यगाथाएं गायी जाती रहेंगी

-चिनुआ अचेबे

(नाइजीरिया के जनपक्षधर साहित्यकार)

(जुलाई 2018 में छपे लेख का शेष भाग)

ज्ञान सिद्धान्त

ज्ञान भौतिक जगत के प्रतिबिम्ब के रूप में

ज्ञान एक वैज्ञानिक वस्तु होता है। चिन्तन की प्रक्रिया में मनुष्य की चेतना पर भौतिक जगत के विभिन्न हिस्सों तथा प्रक्रियाओं का प्रतिबिम्बन होता है। यह दुनिया हमारे सिद्धान्तों, तर्कों या विज्ञान के हिसाब से नहीं चलती बल्कि हम व्यवहार द्वारा प्राकृतिक तथा सामाजिक परिघटनाओं तथा प्रक्रियाओं के अनुसार अपने विज्ञान, सिद्धान्त तथा तर्को का निर्माण करते हैं। यह भौतिक विश्व विकासमान होता है, इसलिए हमारा ज्ञान भी विकासमान होता है। वस्तुएँ हमारी चेतना से स्वतन्त्र अस्तित्वमान होती हैं। हमें पिछली सदी तक यह ज्ञात नहीं था कि आँख में लगने वाले काजल में कार्बन नैनोट्युब्स मौजूद होती है। काजल के अन्दर कार्बन नैनोट्यूब्स पहले से मौजूद थी न कि तबसे जब वैज्ञानिकों ने प्रयोग कर इनकी मौजूदगी प्रस्थापित की। किसी वस्तु के कुछ गुण ज्ञात होते हैं तो कुछ अज्ञात। व्यवहार से अज्ञात ज्ञात में बदलता है, नये निश्चित व अनि चत पैदा होते हैं।

हमारा ज्ञान लगातार अज्ञानता से ज्ञान की ओर बढ़ता है। यह बना-बनाया अपरिवर्तनशील नहीं होता बल्कि सतत गतिमान और विकासमान भौतिक विश्व का लगातार प्रतिबिम्बन करता हुआ विकासशील होता है। सम्पूर्ण ज्ञानयुक्त ब्रह्म कुछ नहीं होता। ज्ञान लगातार उथलेपन से गहरेपन की तरफ बढ़ता है, एकांगी से बहुमुखीपन की तरफ बढ़ता है। भौतिकी का न्यूटन के सिद्धान्तों से क्वाण्टम भौतिकी तथा सापेक्षिता सिद्धान्त, कॉस्मोलोजी तक विकास यही दिखाता है। हर विज्ञान तथा कला के क्षेत्र में ज्ञान एकांगी से बहुमुखी तथा उथलेपन से गहरेपन की ओर बढ़ता है। इंसान का व्यवहार ही बाहरी जगत के बारे में ज्ञान की कसौटी होता है। हमारी संवेदनाओं द्वारा अनुभूत वस्तुओं के गुणों को हम वस्तुओं के इस्तेमाल के दौरान ही परीक्षण में लाते हैं। अगर वस्तु के बारे में हमारा बोध सही है तो व्यवहार में वस्तु के गुण हमारे विचारों को पुख्ता करते हैं। जब हम व्यवहार में असफल होते हैं तो हम संवेदना के बोध पर पुनः विचार करते हैं तब हम वस्तु के असल रूप या बदले हुए रूप के सार के अनुसार विचारों में बदलाव करते हैं। यही ज्ञान के प्रतिबिम्बन का सिद्धान्त है।

ज्ञान तथा व्यवहार

ज्ञान मूल रूप से व्यवहार पर टिका होता है। व्यवहार के दौरान ही इंसान खुद के संवेदनाबोध को परखता है तथा संवेदनाबोध द्वारा पैदा हुई धारणाओं का भी व्यवहार में ही निर्माण करता है। व्यवहार का तात्पर्य सामाजिक व्यवहार है। ज्ञान सिर्फ सामाजिक व्यवहार से ही पैदा होता है। सामाजिक सम्बन्धों में रहते हुए सामाजिक इंसान का व्यवहार। अगर कोई इंसान किसी वस्तु को जानना चाहता हो तो उसको वस्तु के वातावरण में आना ही होगा। कोई भी विद्वान किसी वस्तु या प्रक्रिया का ज्ञान घर बैठे नहीं प्राप्त कर सकता है। हालाँकि आज के वैज्ञानिक तथा इण्टरनेट के युग में यह बात चरितार्थ लगती है कि विद्वान सचमुच ही घर बैठे-बैठे कम्प्यूटर पर क्लिक करके ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। परन्तु सच्चा व्यक्तिगत ज्ञान उन्हीं लोगो को प्राप्त होता है जो व्यवहार में लगे होते हैं। यह ज्ञान विद्वानों तक (लेखन तथा तकनीक द्वारा) तभी पहुँचता है जब व्यवहार में लगे लोग वह ज्ञान प्राप्त करते हैं। इसलिए मानव ज्ञान के दो भाग होते हैं। प्रत्यक्ष ज्ञान व अप्रत्यक्ष ज्ञान। अप्रत्यक्ष ज्ञान दूसरों के लिए प्रत्यक्ष ज्ञान होता है। इस तरह सम्पूर्ण ज्ञान भी सामाजिक होता है। यह मुख्यतः इंसान की उत्पादक कार्यवाही पर निर्भर करता है।

इंसान की उत्पादन कार्यवाहीः

मनुष्य का ज्ञान उसकी उत्पादन की कार्यवाही पर निर्भर करता है। उत्पादन कार्यवाही से तात्पर्य इंसान की उसके खाना ढूँढ़ने तथा बनाने की कार्यवाही, रहने के लिए घर, कपड़ों तथा जीवन के लिए जरूरी अन्य उत्पादन से है। इंसान की इन जरूरतों या संक्षेप में जीवन के संघर्ष से ही उत्पादन कार्यवाही निर्धारित होती है। खाद्य संग्रह व शिकार द्वारा प्राक् मानव अपना खाना जुटाता था। इस दौरान उसने पत्थरों से, फिर धातुओं से हथियार बनाये। शिकार के दौरान ही उसने भाला, तीर-धनुष हथगोला आदि हथियार विकसित किये। इसी दौरान इंसान ने भौतिकी के यान्त्रिकी व गतिकी की शाखा का आधार रखा। जानवरों को डराने तथा खध्द को गर्म रखने के लिए इंसान ने आग की शक्ति पर काबू किया। शिकार में कुशलता (Efficiency) के लिए भाषा ईजाद की। शिकार के जानवरों, कन्द-मूल के पेड़-पौधों के गुणों का उसने अध्ययन किया। गुफाओं में आज भी जानवरों के झुण्डों व उनकी तमाम गतिविधियों के चित्र मिलते हैं। यही आगे चलकर जीव-विज्ञान का आधार बना। प्रकृति की नकल करके ही लम्बी प्रक्रिया में खेती की कला सीखी गयी।

खेती के लिए खेत के बँटवारे के चलते ज्यामिति विज्ञान विकसित हुआ। फसल व अन्य महत्त्वपूर्ण उत्पादन प्रणाली को विकसित करते हुए उसने ज्ञान को नये आयाम दिये। जानवरों को सिर्फ खाने के अलावा यातायात व खेती के लिए भी इस्तेमाल किया जाने लगा। बैलगाड़ी में से बैल को हटाकर ईंजन आया था। आधुनिक विज्ञान ने भी तमाम सामाजिक चेतना व सामाजिक तर्कों से ऊर्जा प्राप्त की। नृत्य, संगीत तथा गायन की कला जादुई विश्व-दृष्टिकोण के युग के उत्सवों से निकलते हुए अलग कला के रूपों में स्थापित हुई। उस दौर के ये उत्सव भी उत्पादन को बढ़ाने के लिए किये जाते थे। मूल बात यह है कि ज्ञान की हर शाखा का उद्भव उत्पादन की कार्यवाही में हुआ है। उत्पादन कार्यवाही के अलावा सामाजिक स्तर पर वर्ग-संघर्ष एवं सामाजिक क्रान्तियाँ भी ज्ञान को गहराई से प्रभावित करते हैं।

वर्ग-संघर्षः

इंसान का पिछले 4,000 सालों का इतिहास वर्ग-संघर्ष का इतिहास है। समाज में इंसानों के उत्पादन सम्बन्ध वर्गों पर आधारित सामाजिक सम्बन्ध हैं। विभिन्न रूपों में वर्ग-संघर्ष ने मानव-ज्ञान के विकास पर गहरा प्रभाव डाला है। वर्ग समाज में रहते हुए इंसान किसी न किसी वर्ग के सदस्य के रूप में जीता है और बिना किसी अपवाद के प्रत्येक विचारधारा पर किसी न किसी वर्ग की छाप होती है। भारत का इतिहास खुद्द इसका बड़ा उदाहरण है। मनुस्मृति, उपनिषद्, गीता आदि में ब्राह्मणों तथा क्षत्रियों, शासन करने वाले वर्गो का पक्ष रखा गया है। इसके प्रतिरोध में खड़ा चार्वाक दर्शन शोषितों का दर्शन है। प्लेटो का रिपब्लिक राज्य के प्रति वफादार है और उसका गुलामों से कोई मतलब नहीं है। पुनर्जागरण काल में हर ज्ञान क्षेत्र में, कला में, विज्ञान में, सामन्तवाद-विरोधी तत्व मौजूद हैं तथा नये सृजन, नये बुर्जुआ वर्ग की वैज्ञानिक जरूरत के अनुरूप था। रूस और चीन में समाजवाद के प्रयोगों के दौरान और क्रान्ति से पहले प्रतिरोध और क्रान्ति की संस्कृति ने पूँजीवाद और पूँजीपति वर्ग के विरोध में ही रूप ग्रहण किया। प्रायः ज्ञान के क्षेत्र के रूप तथा विकास को वर्ग-संघर्ष निर्धारित करता है।

वैज्ञानिक प्रयोगः

सामाजिक व्यवहार के अन्तर्गत वैज्ञानिक प्रयोगों का मतलब सामाजिक क्रान्तियों व जन-संघर्षों और विज्ञान के क्षेत्र में होने वाले नये आविष्कारों से है। इस दौरान मानवीय चेतना का स्तर छलाँग लगाकर ऊँचा उठ जाता है। मानव ज्ञान नये स्तरों तथा संज्ञान के नये धरातल पर पहुँच जाता है, सामाजिक सम्बन्धों में हुआ बदलाव मानव चेतना पर प्रतिबिम्बित होता है। सामन्तवाद से पूँजीवाद में संक्रमण के दौरान हुई सामाजिक क्रान्तियों ने सम्पूर्ण विश्व का नक्शा बदल दिया। सदियों के बन्धन एक झटके में टूट गये। पुनर्जागरण-धार्मिक सुधार-प्रबोधन के पूरे दौर में परिवर्तन और प्रगति की रोशनी से सारा यूरोप झिलमिल हो उठा। औद्योगिकीकरण इसी संघर्ष के दौरान उत्पन्न हुआ। स्टीम इंजन, धरती का गोल होना, उद्विकास का नियम, ब्रह्माण्ड का असल रूप, कोशिका की खोज

आदि वैज्ञानिक खोज व बीथोवन, बाक, मोजार्ट, डा विंची, माइकलेंजेलो, वाल्तेयर, दिदेरो जैसे महान बुद्धिजीवी, दार्शनिक, कलाकार, वैज्ञानिक और संगीतकार भी इसी उथल-पुथल भरे समय की उपज थे। 1917 में हुई रूस की समाजवादी क्रान्ति ने सदियों से पिछड़े रूस को दुनिया के विकसित देशों की कतार में खड़ा कर दिया (जो एक मायने में उनसे भिन्न था : यहाँ का विकास करोड़ों मेहनतकशों के शोषण पर नहीं, बल्कि उनके साझे मालिकाने और निर्णय शक्ति पर टिका था) व महाशक्ति सोवियत रूस बना दिया। मजदूरों के अधिनायकत्व में सोवियत रूस विज्ञान, कला, दर्शन हर मायने में नये-नये सृजन करने लगा तथा खुद जनता के बड़े हिस्से ने इसमें भागीदारी भी ली थी। ये वैज्ञानिक प्रयोग ही हैं जो विज्ञान, कला को सदियों के बन्धन से मुक्त कर सृजनात्मकता के अनन्त आसमान में नयी ऊँचाइयाँ छूने की ऊर्जा देते हैं। परन्तु व्यवहार के द्वारा मानव ज्ञान उत्पन्न कैसे हुआ? आइये ज्ञान के विकास की प्रक्रिया पर एक नजर दौड़ा लेते हैं।

इन्द्रियग्राह्य-बुद्धिसंगत ज्ञान तथा व्यवहारः

व्यवहार की प्रक्रिया में इंसान भिन्न-भिन्न वस्तुओं को देखता है, उनके भिन्न पहलुओं, बाह्य सम्बन्धों को देखता है। यहाँ उदाहरण के लिए हम अपने देश के भिन्न आँकड़ों, बातचीत व आसपास की परिस्थितियों को देखते हैं। यहाँ की भौगोलिक परिस्थिति, आवासीय स्थिति देखते हैं, व्यापक स्तर पर लोगों से बातचीत करते हैं व राजनीतिक पार्टियों के दस्तावेज पढ़ते हैंय देश का आर्थिक, राजनीतिक व सांस्कृतिक अध्ययन करते हैंय यह सब पूरे देश की जनता के जीवन, यहाँ के समाज, अर्थव्यवस्था और राजनीति के हालात का चित्र प्रस्तुत करते हैं। यह प्रत्यक्ष अनुभव से प्राप्त होने वाला आनुभविक ज्ञान है जो यथार्थ का प्रत्यक्ष रूप हमारे सामने रखता है। इसे ज्ञान की इन्द्रियग्राह्य मंजिल कहते हैं, यह इन्द्रिय संवेदनाओं और संस्कारों की मंजिल है। इस देश की विशिष्ट भौतिक परिस्थिति तथा उनके रूप हमें प्रभावित करते हैं। ये संवेदनाओं को जन्म देते हैं और दिमाग में बहुत से संस्कार छोड़ देते हैं। यह बिखरे हुए संवेदनों अनुभवों चित्रों का एक समुच्चय होता है। अभी हमने इनके आपसी सम्बन्धों, प्रकृति और चरित्र को नहीं समझा होता है। न ही हम इनके बारे में कोई सार्वभौमिक या सामान्य बयान दे सकते हैं। अभी यह अनुभवों और संवेदनों का एक अव्यवस्थित समुच्चय मात्र होता है। यह ज्ञान प्राप्ति की पहली मंजिल होती है। जब सामाजिक व्यवहार की प्रक्रिया आगे चलती है, ये अनुभव बार-बार दोहराये जाते हैं। अनुभवों के बार-बार दोहराये जाने से हमारा मस्तिष्क अपनी स्वाभाविक प्रक्रिया से इन अनुभवों का सामान्य सूत्रीकरण करने लगता है। यहाँ हमारी ज्ञान-प्राप्ति की प्रक्रिया में एक आकस्मिक छलाँग लगती है और हमारे मस्तिष्क में धारणाओं का निर्माण होता है। ये धारणाएँ वस्तुओं के बाह्य सम्बन्ध नहीं रह जातीं, ये वस्तुओं के सारतत्व, समग्रता तथा आन्तरिक सम्बन्धों तक जाती हैं। धारणाओं तथा इन्द्रियग्राह्य ज्ञान में गुणात्मक भेद होता है। यह ज्ञान प्राप्ति की दूसरी मंजिल है। जब हम अपने देश की आर्थिक, राजनीतिक तथा सांस्कृतिक परिस्थितियों का गहन अध्ययन कर लेते हैं तथा अनुभव से दोनों का मिलान करते हैं तो यह निर्णय कर पाते हैं कि यहाँ हर वस्तु बिकने योग्य है, बाजार की ताकत अर्थव्यवस्था को चलाती है, इंसान की मेहनत, रोटी, कपड़ा और मकान से लेकर फूल तथा पहाड़ भी बिकाऊ हैं। हमारा समाज वर्गों के आधार पर बँटा है। सामाजिक-आर्थिक व्यवस्था पूँजीवादी है, जिसमें हर चीज का आधार मुनाफा और फायदा है। उत्पादन की प्रेरक शक्ति सामाजिक आव यकताओं की पूर्ति नहीं बल्कि निजी मुनाफा है। कुछ मुट्ठी भर पूँजीपति व उनकी चाकरी करने वाले नौकरशाह आम मेहनतकश मजदूरों की मेहनत पर ही अपने लिए अय्याशी के अड्डे खड़े कर पाते हैं। मजदूरी की लूट को जारी रखने के लिए पूरा तन्त्र, मीडिया, सेना व पुलिस उनकी सेवा में हाजिर है। यह किसी भी वस्तु या परिघटना के ज्ञान की प्रक्रिया में धारणा, निर्णय व तर्क की मंजिल है। यह बुद्धिसंगत ज्ञान की मंजिध्ल है। ज्ञान का वास्तविक कार्य इस मंजिल तक पहुँचना हैय वास्तविक वस्तुओं के आन्तरिक अन्तरविरोधों, नियमों और विभिन्न प्रक्रियाओं के आन्तरिक सम्बन्धों को समझ लेना है। तर्कसंगत ज्ञान वस्तुओं

का उसके वातावरण के साथ अन्तर्विरोध तथा उसके सारतत्व तक जाता है। तर्कसंगत ज्ञान सम्पूर्ण विश्व के इतिहास तथा विकासक्रम को समग्र तथा विशिष्ट रूपों में भी ग्रहण करने में समर्थ होता है।

ज्ञान विकास का यह सिद्धान्त पहली बार मार्क्सवाद ने दिया था। इसे ज्ञान का द्वन्द्वात्मक भौतिकवादी सिद्धान्त कहते हैं। यह पूरी तरह व्यवहार पर आधारित होता है। माओ ने कहा था कि 'इन्द्रियग्राह्य ज्ञान और बुद्धिसंगत ज्ञान के बीच गुणात्मक अन्तर होता है, लेकिन वे एक-दूसरे से अलग नहीं होते, व्यवहार के आधार पर उनमें एकता कायम होती है।" रसायनविज्ञान में फलोगिस्तीन से आक्टेट थ्योरी से मोलिक्यूलर ऑरबिटल थ्योरी तक विकास इसी प्रक्रिया को दर्शाता है। ज्योतिष से खगोलशास्त्र बनने की प्रक्रिया, भौतिकी में इथर थ्योरी से सापेक्षिकता सिद्धान्त तक विकास, विज्ञान की हर शाखा में हम इन्द्रियग्राह्य ज्ञान को तर्कसंगत ज्ञान में बदलते हुए देखते हैं। जापान के भौतिकी के मार्क्सवादी वैज्ञानिक ताकेतानी ने इसी सिद्धान्त पर आधारित थ्री स्टेज थ्योरी दी है। जादू की आदिम अवस्था से धर्म व विज्ञान में बदलाव भी इन्द्रियग्राह्य ज्ञान से बुद्धिसंगत ज्ञान के विकास को दिखलाता है। इस विषय पर हम आगे विज्ञान के स्तम्भ में अवश्य लिखेंगे।

ज्ञान प्राप्ति की प्रक्रिया के क्रम में इन्द्रियग्राह्य ज्ञान के बाद ही तर्कसंगत ज्ञान आता है। पहले इंसान किसी भी वस्तु का इन्द्रिय संवेदन ज्ञान हासिल करता है। बुद्धिमान से बुद्धिमान इंसान जंगल में बैठकर अवधारणा नहीं सृजित कर सकता, जो कि वास्तविक ज्ञान है। ज्ञान व्यवहार से पैदा होता है। ज्ञान सिद्धान्त का भौतिकवाद यही है। ज्ञान प्राप्ति की प्रक्रिया इन्द्रियग्राह्य ज्ञान से तर्कसंगत ज्ञान तक आगे बढ़ती है। यह ज्ञान प्रक्रिया का द्वन्द्ववाद है। पर यह प्रक्रिया यहाँ आकर भी रूक नहीं जाती। ज्ञान सिर्फ प्रक्रियाओं तथा वस्तुओं के ठोस रूप तथा उनके आन्तरिक सम्बन्ध जानने तक नहीं जाता। ज्ञान व्यवहार से शुरू होता है और उसे फिर व्यवहार के पास वापस लौट आना होता है। इन्द्रियग्राह्य ज्ञान व्यवहार से पैदा होता है जो पुनरावृत्ति और विवेक से तर्कसंगत ज्ञान तक पहुँच जाता है। विवेक और तर्कशक्ति से आनुभविक ज्ञान से निकली अवधारणाओं का सत्यापन व्यवहार के दौरान होता है। हम समाज की पूँजीवादी तथा वर्ग समाज की व्याख्या तक पहुँचने के बाद, तथा यह जानने के बाद कि यह सामाजिक बदलाव मजदूर वर्ग के द्वारा ही सम्भव है, जब समाज को बदलने व्यवहार के धरातल पर उतरते हैं तो पहले तो हमारी धारणा पुख्ता हो जाती है। पर कुछ नये सवाल भी खड़े हो जाते हैं। नया व्यवहार नये इन्द्रियग्राह्य ज्ञान को जन्म देता है, जिसमें से कुछ पुराने व्यवहार से जन्मे अवधारणात्मक ज्ञान को पुष्ट करते हैं तो कुछ उसमें संशोधन या परिवर्तन की माँग करते हैं। इस प्रकार व्यवहार एक बार फिर से अवधारणात्मक ज्ञान को उन्नत करता है। उन्नत अवधारणात्मक ज्ञान को पुष्टि के लिए फिर से व्यवहार तक ही आना होता है। अपुष्टि वास्तव में अवधारणात्मक ज्ञान के विकास की प्रेरक शक्ति होती है। यह असफलता एक प्रकार की रिडेम्प्टिव प्रक्रिया होती है, जिसके जरिये ज्ञान सतत् विकासमान होता है। यानी, व्यवहार-सिद्धान्त-व्यवहार -सिद्धान्त३. यही है द्वन्द्वात्मक भौतिकवादी ज्ञान सिद्धान्त।

ज्ञान : सापेक्ष व निरपेक्षः

ज्ञान प्राप्ति की प्रक्रिया सम्पूर्णता तथा असम्पूर्णता के बीच अन्तर्विरोधपूर्ण होती है। चिन्तन में वस्तुगत प्रक्रिया को प्रतिबिम्बित कर इंसान अपने ज्ञान को इन्द्रियग्राह्य तथा बुद्धिसंगत ज्ञान के क्रम में विकसित करता है तथा व्यवहार में यह सतत् उन्नत धरातलों पर पहुँचता जाता है। वास्तविकता के अनुरूप किये गये प्रयोग हमारी ज्ञान प्राप्ति की प्रक्रिया के एक चरण को पूरा करते हैं। हम पूर्वकल्पित धारणाओं के अनुरूप प्रयोग को वस्तुगत रूप देते हैं। परन्तु कई बार ऐसा होता है कि सिद्धान्त सच्चाई को अधूरा या गलत ढंग से निरूपित करते हैं। यह सिर्फ हमारी वैज्ञानिक एवं तकनोलॉजिकल सीमा के कारण नहीं बल्कि वस्तुगत प्रक्रिया के विकास पर भी निर्भर करता है। यह इस पर भी निर्भर करता है कि वस्तुगत प्रक्रिया अपने को किस हद तक प्रकट करती है। इसके अनुसार, वस्तुगत प्रक्रिया की अभिव्यक्ति के अनुसार हमें ज्ञान को फिर से ठीक

करना होता है। जहाँ तक प्रक्रिया की प्रगति का ताल्लुक है, इंसान की ज्ञान प्राप्ति पूरी नहीं होती है। अगर और ठोस रूप में कहें तो ''विश्व के विकास की निरपेक्ष और आम प्रक्रिया में प्रत्येक ठोस प्रक्रिया का विकास सापेक्ष होता है तथा इसलिए निरपेक्ष सत्य की अनन्तधारा में विकास की हर विशेष मंजिघ्ल पर ठोस प्रक्रिया का मानव ज्ञान सापेक्ष रूप में सत्य होता है।" (माओ)

इसका सीधा मतलब है कि विश्व में परिवर्तन की प्रक्रिया कभी समाप्त नहीं होती है। इंसान के दिमाग में पैदा हुआ भौतिक जगत का प्रतिबिम्बन ऐतिहासिक परिस्थितियों द्वारा सीमित होता है तथा उस इंसान की भौतिक व दिमागी क्षमता पर भी निर्भर करता है। परन्तु इसका यह मतलब नहीं होता कि वि व में सारे सत्य सापेक्ष हैं तथा ये अराजकतापूर्ण तौर पर संसार में पैदा होते हैं। जैसा कि लेनिन ने कहा है, ''अनगिनत सापेक्ष सत्यों का समुच्चय ही निरपेक्ष होता है।" दिक् व काल में अलग इंसानों द्वारा सम्प्रेषित सत्य एक-दूसरे से जुड़कर निरपेक्ष सत्य बनाते हैं जो खुद भी सामाजिक विकास के साथ विकसित तथा गहन होता जाता है। अन्तरविरोध की सार्वभौमिकता निरपेक्ष है। इंसान द्वारा सत्य को प्राप्त करने की प्रक्रिया कभी समाप्त नहीं होती। क्वाण्टम भौतिकी का सिद्धान्त ''अनसर्टेनिटी प्रिंसिपल' अनिश्चितता का सिद्धान्त) यही स्थापित करता है, हालाँकि इसे प्रतिपादित करने वाले वर्नर हाइजेनबर्ग स्वयं इसकी एक अज्ञेयवादी नवकाण्टीय व्याख्या करते हुए इस नतीजे पर पहुँच जाते हैं कि वस्तुगत यथार्थ नामक कोई चीज नहीं होती और कि प्रेक्षक ही यथार्थ का निर्माता है। लेकिन चूँकि विज्ञान किसी नवकाण्टीय अज्ञेयवादी के प्रेक्षण की निर्मिति नहीं है, इसलिए अनिश्चितता के सिद्धान्त का एक सही विश्लेषण हमें दिखला देता है कि यह सिर्फ ज्ञान प्राप्ति के सापेक्षता के पहलू को उजागर करता है और इसके जरिये ज्ञान की सतत् गतिशीलता पर बल देता है। अनिश्चितता सिद्धान्त के मार्क्सवादी विश्लेषण और व्याख्या के लिए रुचि रखने वाले पाठक ताकेतानी, सकाता और युकावा नामक जापानी वैज्ञानिकों के आधुनिक भौतिकी पर लेखन को पढ़ सकते हैं। इसके अलावा भी विश्व के कई देशों के मार्क्सवादी वैज्ञानिकों ने अनिश्चितता के सिद्धान्त को मार्क्सवाद के सामान्य सिद्धान्तों की पुष्टि के रूप में प्रदर्शित किया है। हर नये प्रयोग के साथ हमारे प्रेक्षण (वइेमतअंजपवद) गहरे होते हैं। अनिश्चितता की समस्या वास्तव में ताकेतानी के शब्दों में प्रेक्षण की समस्या है। आज मानवीय प्रेक्षण का स्तर जिस धरातल पर है उस धरातल पर सूक्ष्म विश्व की कई चीजों का हम सटीक तौर पर निर्धारण नहीं कर सकते। लेकिन भविष्य में ये प्रेक्षण और उन्नत होगा और गहरे धरातलों पर जायेगा। उस समय पुरानी अनि चतताएँ निश्चितताओं में तब्दील हो जायेंगी। लेकिन तब तक अनिश्चितता का एक नया क्षितिज उजागर हो चुका होगा। विज्ञान के पास हमेशा कुछ अनुत्तरित प्रश्न रहेंगे। क्योंकि विज्ञान धर्म नहीं होता। यह द्वन्द्वात्मक रूप से सतत् गतिमान व्यवस्थित विशिष्ट ज्ञान का समुच्चय है। धर्म एक भी सही प्रश्न नहीं पूछता, इसलिए उसके पास हर प्रश्न का जवाब होता है! विज्ञान सही प्रश्न पूछता है इसलिए वह कभी सभी प्रश्नों का उत्तर नहीं दे सकता। वह जितने प्रश्नों का उत्तर देता है, उन उत्तरों से ही वह नये प्रश्नों को खड़ा भी करता है। यह एक सतत् अन्तहीन प्रक्रिया है।

ज्ञान प्राप्ति के लिए ठोस अध्ययनः

मार्क्स ने कहा था कि ''विज्ञान में कोई सीधा-सपाट रास्ता नहीं है। प्रतिभा के शिखर पर केवल वही पहुँच सकते हैं जो सीधे खड़े पहाड़ी रास्तों पर चढ़ने में डरते नहीं है।" यह कथन मार्क्सवाद के कर्म सिद्धान्त, ज्ञान सिद्धान्त की मूलवस्तु है। ज्ञान को एकांगी या छिछले ढंग से नहीं प्राप्त किया जा सकता है। न अनुभववादी या विज्ञानवादी तरीके से प्राप्त किया जा सकता है। यह सिर्फ व्यवहार तथा सिद्धान्त के तालमेल, ईमानदारी, विनम्रता, धैर्य तथा हिम्मत की माँग करता है। इसके इतर कोई भी रास्ता हमें अहंवाद, कठमुल्लावाद तथा अनुभववाद के गड्ढे में ले जाता है। यह कठोर अध्ययन की माँग करता है। हर वस्तु में निहित अन्तरविरोध को जानना होता है। अन्तरविरोध को विशिष्ट तथा सार्वभौमिक रूप में पहचानने की जरूरत होती है। सबसे पहले विशिष्ट का अध्ययन करते हुए हमें वस्तु-विशेष के अन्तरविरोध के दोनो पहलू को

समझना होता है। वस्तु के विकास की प्रक्रिया में मौजूद अन्तरविरोध के दोनों पहलुओं को चिन्घ्हित करना होता है। वस्तु के विकास की प्रक्रिया की मंजिघ्ल के अन्तरविरोध को चिन्घ्हित करना होता है तथा मंजिघ्ल के अन्तरविरोध के दोनों पहलुओं को समझना होता है।

यहाँ हम किसी अकादमिक या किताबी ज्ञान की बात नहीं कर रहे हैं, न ही हम यहाँ महज बेहद विरोधी विज्ञान की शाखाओं की बात कर रहे हैं। हम यहाँ आमतौर पर मानव ज्ञान की बात कर रहे हैं। एक समाज वैज्ञानिक के तौर पर हमें समाज के भी मूल अन्तरविरोधों की पहचान करनी चाहिए, उनके दोनों पहलुओं की पहचान करनी चाहिए और उनके आधार पर समाज के बारे में अपने ज्ञान को विकसित करना चाहिए। इस प्रक्रिया से विकसित ज्ञान ही वापस पलटकर समाज को बदल सकता है। आज मुनाफे और लूट पर टिके पूँजीवादी समाज को भी अगर बदलकर किसी नये समतामूलक, अन्यायमुक्त समाज की रचना करनी है, तो हमें मौजूदा समाज का एक द्वन्द्वात्मक भौतिकवादी अध्ययन करना होगा। चूँकि ज्ञान व्यवहार से पैदा होता है, इसलिए हमें व्यवहार में उतरना होगा। आज के समाज के बारे में भी हम सिर्फ पुस्तकालयों में बैठकर और किताबों का अध्ययन करके नहीं जान सकते। हमें सामाजिक व्यवहार में प्रत्यक्षतः उतरना होगा।- (समाप्त)

पृष्ठ 23 का शेष शेष

अर्थात महावेताल का पेड़ दिखाई दिया। अचानक कोवूर की पत्नी जोर से चिल्लाई। पेड़ की ओर उंगली कर बोली, 'वह देखिए, कितना बड़ा हाथी!' कोवूर को उस पेड़ के नीचे एक बड़ा काला हाथी खड़ा नजर आया। जंगली जानवरों से डरने वाली कोवूर की पत्नी घबराहट के मारे कांपने लगी। कोवूर को कुछ सूझ नहीं रहा था। सोचने लगे कि अगर पत्नी के साथ आगे चले जाएं और हाथी पर हमला कर दें तो लोग कहेंगे, 'वेताल ने कोवूर को अच्छा मजा चखाया।' वापस जाने पर छात्र कहेंगे, 'हमने आपको जाने से मना किया, फिर भी आप चले गए। देखिए, कैसे वापस आना पड़ा!' हाथी बहुत दूर था, उनके हाथ में मौजूद टार्च की रोशनी हाथी तक नहीं पहुंच पा रही थी। गौर से देखने पर कोवूर को लगा कि मामला कुछ अलग है, क्योंकि हाथी का सिर्फ बायां कान हिल रहा था। वह धूं-धूं जैसी आवाज निकाल रहा था। कोवूर को लगा, शायद हाथी के साथ उसका महावत भी है। उन्होंने जोर से आवाज दी, 'कौन है वहां? अरे कौन है वहां?' हाथी की आवाज बंद हो गई। बाकी सब कुछ वैसा ही रहा। हाथी वहां से हट जाएगा या नहीं, कोवूर को कुछ समझ में नहीं आ रहा था, इसीलिए वे फिर चिल्लाए, 'मैं पूछता हूं, कौन है वहां पर?' हाथी के बाएं कान की हलचल एकदम बंद हो गई। अब उसके दाहिने कान में कुछ हलचल हुई। एक सफेद आकृति उससे उतर कर कोवूर की ओर बढ़ने लगी। दृढ़निश्चयी होने के कारण कोवूर पीछे नहीं हटे, बल्कि डटकर खड़े रहे। वह सफेद आकृति बिल्कुल नजदीक आ गई तो पता चला कि वह एक सामान्य आदमी है। स्वाभाविक ही कोवूर ने धमकाकर पूछा, 'कौन है तू? और इतनी रात गए हाथी को लेकर यहां क्या कर रहा है?' उस आदमी ने कोवूर को सिर से पैर तक देखा और बोला, 'आप किस हाथी की बात कर रहे हैं? होश में तो हैं? कोवूर पेड़ के नीचे गए। देखा, पुराने जमाने की बड़ी काली डॉज मोटरकार खड़ी थी वह आदमी बोला, अचानक किसी काम की वजह से मेरे मालिक कालेज के प्राचार्य के पास आए हैं। मैं उनका ड्राइवर हूं। मालिक ऊपर बंगले में गए हैं। ऊपर गाड़ी चढ़ नहीं सकती इसीलिए उसे लेकर यहां रुक गया। बाईं तरफ का दरवाजा खोलकर मैं केबिन में सोया था, किसी की पुकारने की आवाज सुनकर मेरी नींद खुल गई। फिर मैंने बायां दरवाजा बंद कर दाहिना खोल दिया और नीचे उतर कर यहां आया हूं। आप बिना वजह मुझ पर क्यों चिल्ला रहे हैं? यह हाथी का लफड़ा क्या है? मैं कुछ समझा नहीं!'

कोवूर के दिमाग की बत्ती जल गई।

(शेष अगले अंक में जारी..)

अलौकिक शक्तियां

-डॉ.हरीश मल्होत्रा

बी.बी.सी. के हिन्दी कार्यक्रम के अनुसार, 'आजकल पौराणिक कहानियों के साथ-साथ भूत-प्रेतों एवं नागिनों व चुड़ैलों वाले नाटक, कहानियां और फिल्में अधिक प्रसिद्ध हो रहे हैं।' पुस्तकों, फिल्मों एव ंवीडियो गेमों में प्रायः भूतों को युवा अथवा बूढों तथा चुड़ैलों को अति सुंदर लड़कियों के रूप में दिखाया जाता है।

अखबार 'द हिन्दुस्तान टाईम्स' के अनुसार कुछ वर्ष पूर्व एक सर्वेक्षण करवाया गया जिस से ज्ञात हुआ कि 46 प्रतिशत भारतीय भूत-प्रेतों में विश्वास करते हें। हाल ही में हुए एक सर्वोक्षण के अनुसार अब इन की संख्या 56 प्रतिशत हो गईहै। समाज विज्ञान के प्रोफेसर क्लोड फिशर लिखते हैंः 'अमेरिका में बुजुर्गो से दो गुना अधिक नवयुवक बाबाओं के पास जाते हैं, भूत-प्रेतों पर विश्वास करते हैं तथा यह भी मानते हैं कि कई घरों में भूत-प्रेतों का निवास होता है।'

यह कोई हैरानी की बात नहीं कि लोगों में भूत-प्रेत वाली कहानियां फिर से बहुत अधिक प्रसिद्ध हो रही हैं। एक अखबार बताता है कि कई संस्कृतियों में भूत-प्रेतों वाली कहानियां दोबारा इस कारण से प्रसिद्ध हो रही हैं क्योकि पिछले दशक से इनमें भूत-प्रेतों, चुड़ैलों अथवा नागिनों जैसे पात्र पाये जा रहे हैं।

एक रिपोर्ट के अनुसार, 'विश्व भर के 25 से 50 प्रतिशत लोग भूत-प्रेतों पर विश्वास करते हैं तथा बहुत सी संस्कृतियों के साहित्य में मुख्य तौर पर भूत-प्रेतों के बारे में बताया जाता है।' समाज विज्ञान के प्रोफैसर क्रिस्टोफर बेडर तथा कार्सन मेन्कम ने अमेरिका में एक सर्वेक्षण किया जिसमें यह हैरान कर देने वाला सत्य सामने आया कि 70 से 80 प्रतिशत अमेरिकी किसी न किसी प्रकार की जादूगरी पर विश्वास रखते हैं।

यदि भारत में कोई इस प्रकार का लम्बा चौड़ा सर्वेक्षण किया जाए तो भूत-प्रेतों में विश्वास वाली बात 90-95 प्रतिशत से भी अधिक हो सकती है। अब हम ने भिन्न-भिन्न सर्वेक्षणें से यह जान लिया है कि बहुत से लोग अलौकिक शक्तियों अथवा इस प्रकार की परलोक वाली बातों में और ऐसे कार्यो में विश्वास नहीं करते तथा वे सोचत`एवं मानते है कि यह मनगढ़ंत अथवा फिल्मी लेखकों की कल्पना है। मुहूर्त देखने वाला, फाल डालने वाला, झाड़-फूंक करने वाला, जिन्न एवं भूत निकालने वाले, सभी आम लोगों को मूर्ख बना कर उनका शोषण करते हैं। लोगों को गुमराह करना एक घिनौना अपराध है।

इन बातों के साथ मिलती-जुलती जादूगरी है जो कि देखने वालों को भ्रम में डालकर चमत्कार दिखाने की एक क्रिया है। यद्यपि मनोरंजन जगत में जादूगरी को अत्यंत दिलचस्प ढंग के साथ दिखया जाता है, परंतु हमें उसके साथ जुड़े खतरों से सावधान रहना चाहिए। गैलप यूथ सर्वे 2014 ((GALLUP YOUTH SURVEY-2014) के अनुसार टी.वी., फिल्में एवं पुस्तकों में जादूगरनियों को अत्यंत सुंदरढंग से प्रस्तुत करने के कारण शायद नवयुवतियों का जादूगरी पर विश्वास बढ़ने लगा है।'

वास्तविक सत्य से किसी को जानबूझ कर वंचित रखना एक धोखा एवं गुनाह है। यह गुनाह एवं धोखा भारतीय समाज के अंग-अंग में निवास करता हैं यदि जादूगरी की चीरफाड़ की जाए तो पता चलता है कि इस में बहुत कुछ सम्मिलित हैः जैसे कि भविष्यवाणी करना, जादू-टोना करना, बाबाओं के पास जाना एवं भूत-प्रेत निकालना। विश्व के अनुक भागों में लोग बाबाअें की सहायता से अथवा अन्य किसी ढंग से देव और दानवों के साथ बातचीत करने का प्रयत्न करते हैं। बहुत से लोग भविष्य जानने के लिए भविष्यवाणी करते हैं।

वे ग्रह-दशा देखते हैं, फाल डालते हैं, क्रिस्टलबाल में से देखते हैं तथा दूसरों का अथवा अपना हाथ देखते हैं। पुस्तकों, पत्रकाओं एवं फिल्मों में दिखाया जाता है कि जादूगरी करने में कोई खतरा नहीं है तथा इस के द्वारा लोगों का ध्यान जादूगरी की ओर खींचा जाता है। कई विशेषज्ञ बताते हैं कि टी.वी. कार्यक्रमों एवं फिल्मों में जादूगरी को जिस तरीके से दिखाया जाता है, उसका लोगों के विश्वासों पर गहरा प्रभाव पड़ता है तथा इस प्रकार से लग सकता है कि कुछ अलौकिक शक्तियां लोगों की सहायता कर रही हैं।

परंतु वास्तविकता यह है कि अपने पैसे कमारे के लालच में ये बहुत बड़ा गुनाह कर रहे होते हैं, क्योंकि न इन बातों से लोगों की ज़िंदगियों के साथ खिलवाड़ किया जा रहा होता है। नस्ल-दर-नस्ल को खराब करके लोगों अपने स्वार्थवश लोगों को दुखों एवं मनोभ्रमों का शिकार बनाया जा रहा होता है।

उदाहरणस्वरूप, 12 वर्ष की आयु में जीतो को लगता था कि उसके पास भविष्य में घटने वाली घटनाओं अथवा खतरों के बारे में सोचने एवं बताने की शक्ति थी। वह अपने सहपाठियों के लिए टैरो कार्ड (TARO CARDS) पढ़ती थी। उस द्वारा बताई गई बातों का कभी-कभी तीर-तुक्का लग जाया करता था और फिर वह इस काम में और अधिक दिलचस्पी लेने लग गई।

जीतो को यह मनोभ्रम हो गया कि 'ईश्वर' ने उसे इस कार्य के लिए विशेष शक्ति प्रदान की है ताकि वह लोगों की सहायता कर सके। परंतु उस का मन उसे परेशान भी कर रहा था कि वह दूसरों के लिए तो कार्ड पढ़ सकती है परंतु अपने लिए नहीं। हालांकि वह भी अपना भविष्य जानना चाहती थी। जीतो के मन में बहुत से प्रश्न थे। ज्यों-ज्यों वह बड़ी होती गई तथा विज्ञान के बारे में जानना शुरू किया कि ये बातें मनगढ़ंत, कल्पना एवं धोखा है तो उसने इस कार्य से तौबा कर ली। इसी प्रकार रमेश को वे उपन्यास पढ़ने का शौक था जिनमें अलौकिक शक्तियों के बारे में बताया गया होता था। उसका कथन है कि उसे उसकी आयु के उन एक्टरों के बारे में जानना बहुत अच्छा लगता था जो काल्पनिक दुनिया में जाते थे। इसी कारण वह जादूगरी एवं अलौकिक शक्तियों वाली पुस्तकें पढ़ने का आदी हो गया। उस की इच्छा बढ़ती चली गई तथा इसी कारण वह इस प्रकार की फिल्में भी देखने लग गया, टी.वी, जिनमें अलौकिक शक्तियों के बारे में चर्चा की गई होती थी। फिर एक दिन जब वह कुछ इस प्रकार के लोगों से मिला जिन्होंने उसे इन के बारे में तर्क के साथ समझाया कि वह केवल धोखा है तथा वह अपना समय और दिमागी शक्ति गलत दिशा में लगा रहा है। उसने फिर ऐसी पुस्तकें, मैगजीन पढ़ने बंद करदिये तथा सामाजिक परिघटनाओं को वैज्ञानिक कढंग से देखने लग गया। उसे यह समझ आ गई कि दुनिया में समस्त प्रगति एवं सुख विज्ञान ने दिया है तथा अलौकिक शक्तियों के दावदारों ने लोगों को मूर्ख बना कर मानवता के खिलाफ अपराध किया है तथा वे यह अपराध नस्त-दर-नस्त करते चले आ रहे हैं। दुनिया के बहुत से लोग चाहे वे विकसित देशों में हैं अथवा विकाशील देशों में हैं, जादूगरी, अलौकिक शक्तियां, भूत-प्रेतों एवं मृत लोगों से बातें करना अथवा भविष्यवाणी में दिलचस्पी रखते हैं। दुनियाभर में लोग अंधविश्वासों में विश्वास रखते हैं तथा अनेक प्रकार के नगर, ताबीज पहनते हैं ताकि प्रेत-आत्माएं उनसे दूर रह सकें। 'फोक्स' नाम एक जर्मन पत्रिका के एक लेख 'टॉप एवं इब्लीस' में लिखा हैः 'इंटरनेट के कारण जादुगरी एवं अलौकिक शक्तियों में लोगों की रूचि बढ़ती जा रही है।' इसका एक प्रमुख कारण यह भी है कि इस आपधापी एवं दौड़-भाग में हम बहुत थोड़े समय में हम बहुत सा धन-दौलत एकत्र करना चाहते हैं। एक दूसरे से आगे बढ़ने का रूझान, टीवी. पर दिये जा रहे विज्ञापन, सामाजिक परिवर्तनों में आ रही तीव्र गति, रिश्तों की टूट-फूट, बहुत से लोगों को मायूस कर रही है कि वे कोई चमत्कारी नुस्खा खोज लें जिस के साथ उनका भटकाव रुक सके। इसी आड़ में वे अलौकिक शक्तियों के एजेंटों के वश में पड़ जाते हैं। दुनिया की बहुत सी सरकारें जनहितैषी नहीं हैं तथा वे अनुचित एवं मिथ्या प्रचार के द्वारा

जनता को असली मुद्दों से से दूर इन बातों में व्यस्त रखते हैं ताकि राज सिंहासन पर लम्बे समय के लिए बैठे रह सकें। दुनिया के प्रचलित कई धर्म भी ऐसे हैं जो इन अलौकिक शक्तियों में विश्वास रखते हैं तथा धार्मिक अदारे अब विज्ञान की खोजों के द्वारा यह धुआंधार प्रचार दिन रात करते हैं। इसी कारण बहुत से लोगों का दिमाग इन बातों में विश्वास करने लग गया है। वे यह भी दावा करते हैं कि यदि उस धर्म की पुस्तक, ग्रंथ वाली हर बात पर यकीन किया जाए तो तुम्हारे सभी कष्टों एवं परेशानियों का खात्मा हो सकता है। आम साधारण अथवा अर्ध-शिक्षित लोगों का ही नहीं बल्कि बड़ी-बड़ी डिग्रियां प्राप्त किये हुए बहुत से लोगों का भी इस बात पर विश्वास है। इस भ्रम को वे तोड़ना नहीं चाहते क्योंकि वे स्वयं को परिवार एवं रिश्तदारों में अकेला महसूस करने लग पड़ेंगे। अधिकतर लोग अपनी रोजमर्रा की ज़िंदगी की ज़रूरतों को पूरा करने में व्यस्त रहते हैं तथा इन भ्रमों, अकीदों एवं विश्वासों के बारे में आलोचनात्मक विश्लेषण करने, वैज्ञानिक चिंतन वाली पुस्तकें पढ़ने अथवा तर्क के साथ सोचने वाले लोगों के साथ बहुत ही कम वास्ता रखते हैं। क्योंकि बहुत से लोग इस बहाव में बहते चले जा रहे हैं तथा यह कार्य आसान भी है, तो फिर दिमागी शक्ति को इस तरफ लगाया नहीं जाता। जिस प्रकार का घटनाक्रम चलता आ रहा हो उस पर ऊँगली उठाने के कई सामाजिक रिश्तों में बिगाड़ आ जाने का भय भी उनको इस तरफ नहीं जाने देता। वे बहुत से अन्य लोगों का अंधानुकरण करके अपना मानसिक एवं आर्थिक शोषण करवाते रहते हैं। हम कई बार अपनी भावनाओं से ऊपर उठ कर निर्णय नहीं लेते। हमारा अपना लगाव अपने मां-बाप, दादा-दादी एवं अन्य नजदीकी रिश्तों के साथ बहुत गहरा होता है तथा भावनाओं के अधीन हम इस बात को माननले के लिए तैयार नहीं होते कि वे जो भी रीति-रिवाज, विशेषतौर पर अलौकिक शक्तियों से संबंधित मानते हाए हैं, वे कैसे गलत हो सकते हैं। उनको यह महसूस होता है कि इस प्रकार की सोच के खिलाफ कुछ करने से वे अपने इन रिश्तों का अपमान कर रहे होंगे। हम क्योंकि इन नजदीकी रिश्तों की आगे की कड़ी एवं एक हिस्सा हैं तथा हमारा अस्तित्व एवं पहचान इसके साथ जुड़ी होने के कारण हम अपना अपमान भी महसूस करते हैं। इस सच्चाई को हम भूल जाते हैं कि ज्ञान दिन-प्रति-दिन बढ़ रहा है तथा यदि वैज्ञानिक चिंतन के साथ हम अलौकिक शक्तियों को गलत कहते हैं तो यह किसी का अपमान नहीं है।

-हिंदी अनुवादः बलवन्त सिंह लेक्चरार

अभी आदमी

-कात्यायनी

बहुत दूर मंजिल है, लंबा सफर है
अपने ही अस्त्रों से मरने का डर है
अभी से न खुश हो मनुज की प्रगति पर
अभी आदमी बहुत जानवर है।

पर तुम अपनी लीला या लोभ या लापरवाही से
मत होने दो किसी भी नस्ल को नेस्तनाबूद
और ध्यान रखो खासकर अपनी का
क्योंकि जब तुम इसे नष्ट करोगे तो,
अकेले उसे ही नहीं करोगे
उसके साथ नष्ट कर लोगों इन सबको भी
और इनके इस विश्व में एकमात्र आवास
अपनी इस पृथ्वी को भी
बचाओ इसे अपने आणविक और जैविक हथियारों
से
युद्धों से
और उनके जन्मदाता राष्ट्र राज्यों से
जनसंख्या विस्फोट से
अन्तर्प्रजातीय संघर्षों से
और सामूहिक आत्महत्या से

बाबाओं के काले कारनामें

सगी बहनों के यौन शोषण के आरोप में 'बाबा' गिरफ्तार

पटनाः बिहार के सुपौल में सगी बहनों के साथदुष्कर्म के आरोप में विश्व कबीर विचार मंच के एक अंतरर्राष्ट्रीय संत को पुलिस ने गिरफ्तार किया है। बाबा ने एक बड़ा कार्यक्रम सुपौल के मरौना थाना इलाके के पंचभिंडा गांव में रखा, जहां पीड़िता का पूरा परिवार भी पहुंचा था। वहीं, साल 2010 में पहली बार बाबा ने छोटी बहन के साथ दुष्कर्म किया और उसका वीडियों भी बना लिया। जिसके बाद से बाबा लगातार पीड़िता के साथ दुष्कर्म करने लगा और वीडियों वायरल कर देने की धमकी देकर उसक यौन शोषण करता रहा। ब्यूरो।

बाबा से प्रभावित होकर2009 में बन गयी थी साध्वीः

पीड़िता बहनों के वह मधुबनी जिले के फुलपरास थाना क्षेत्र में एक गांव की रहने वाली हैं। उसका पूरा परिवार पंजाब के लुधियाना शहर में रहता है। उनके पिता का वहां बिजनेस है। संत मनमोहन साहेब का परिचय उनके पिता से हुआ और वे दोनों उनके करनैल सिंह नगर स्थित आश्रम में आने जाने लगीं। पूरा परिवार बाबा का ऐसा भक्त था कि पीड़िता के घर का आधा हिस्सा सत्संग भवन के रूप में बदल दिया गया। यही नहीं बाबा से प्रभावित हो कर दोनें बहने साल 2009 में साध्वी बन गयी और बाबा के साथ देश के विभिन्न हिस्सों प्रवचन के लिए बाबा के साथ जाने लगीं।

2016 में बड़ी बहन बनी बाबा की हवस की शिकार

27-28 फरवरी 2016 को मरारैना के पंचभिण्डा में विशाल सत्संग का आयोजन हुआ था। इसमें भाग लेने दोनों बहनें पूरे परिवार के साथ आश्रम पहुंची थीं। सत्संग समाप्ति के दो दिन बाद देर रात संत मनमोहन साहेब ने बड़ी बहन को अपने कमरे में पैर दबाने के बहाने बुलाया और फिर दुष्कर्म किया। चोरी-छिपे दुष्कर्म की वीडियो को रिकार्डिंग भी बाबा ने कर ली और कहा कि अगर किसी को कुछ बताया तो वीडियों को वायरल कर दिया जायेगा।

साथ ही एक मात्र भाई की हत्या की भी धमकी दी गयी। डरी-सहमी बड़ी बहन ने भी खामोश रहना ही ठीक समझा। लेकिन दोनों बहनों ने आखिरकार हिम्मत दिखायी।

पुलिस ने मनमोहन बाबा को दुष्कर्म के आरोप में मंगलवार की रात फलपरास से गिरफ्तार किया

बाबा के गुनाहों की लंबी फेहरिस्त

सुपौल : हिंदुस्तान संवाददाता

विश्व कबीर मंच के अंतर्राष्ट्रीय बाल-ब्रह्मचारी बाबा संत मनमोहन साहेब के गुनाहों की लंबी फेहरिस्त है। यह तय माना जा रहा है कि गहरायी से जांच हो तो कई चौंकाने वाले खुलासे हो सकते हैं। दुष्कर्म पीड़िता बहनों ने जो पत्र मुख्यमंत्री को लिख कर बताया है वह रोंगटे खड़ा कर देने के लिए काफी है।

पीड़ित बहनों के अुनसार सैंकड़ों ऐसी लड़कियां हैं जो बलात्कारी बाबा के दुष्कर्म की शिकार हुई हैं। अब जबकि दोनों बहनाों हौसले की वजह सेदुष्कर्मी बाबा सलाखों के पीछे हैं तो चर्चा इस बात की हो रही है कि अन्य पीड़िताएं भी सामने आयेंगी और दुष्कर्मी बाबा ने जो कबीर मठ की आड़ में तीन आश्रम संचालित कर पाप का साम्राज्य कायम कर रखा था, उसका भांडाफोड़ होगा। कई चौंकाने वाले खुलासे हो भी सकते हैं। बहराल दोनों पीड़िता बहनों के हौसले की लोग तारीफ कर रहे हैं।

अंधविश्वास के चलते

पैदावार बढ़ाने के लिए वैदिक मंत्रों का जाप करें

गोवा सरकार की किसानों का सलाह

एजेंसीः पणजी, गोवा सरकार फसलों की पैदावार बढ़ाने के लिए नई तकनीक अपनाने जा रही है। इसके तहत राज्य सरकार ने अच्छी पैदावार के लिए किसानों से प्राचीन वैदिक मंत्रों का जाप करने को कहा है। कृषि विभाग के एक अधिकारी ने शुक्रवार को कहा कि राज्य सरकार ने किसानों को 'दैवीय कृषि' पद्धति आपनाने की सलाह दी है जिसमें उन्हें उनकी फसल की अच्छी पैदावार के लिए खेत में 20 दिन 'वैदिक मंत्रों' का जप करना होगा। इसके लिए सरकार कई संस्थओं से बात कर रही है। अधिकरी ने कहा कि सरकार इस क्षेत्र के विशेषज्ञ शिवयोग फाउंडेशन और ब्रह्मकुमारी जैसी संस्थाओं से बातचीत कर रही है।

मृत पिता को जिंदा बताकर आइपीएस करा रहा झाड़-फूक

भोपाल (पत्रिका ब्यूरो)- एक ओर जहां हम चांद पर मानव मिशन भेजने की तयारी कर रहे हैं, वहीं मप्र के एक सीसनियरआइपीएस अधिकारी (एडीजी चयन एवं भर्ती) राजेंद्र कुमार मिश्रा अपने मृत पिता को जिंदा बताकर तांत्रिकों से एक महीने से झाड़-फूंक करा रहे हैं। उनकी इन हरकतों से बंगले पर तैनात पुलिस जवान मानसिक प्रताड़ा का शिकार हो रहे हैं। बंगले के अंदर से लगातार बदबू आ रही है औरलाश की देख-रेख भी वे ही कर रहे हैं। और जरा सी लापरवाही पर डांट-फटकार भी सह रहे हैं। एडीजी के पिता के मृत होने की पुष्टि बंसल अस्पताल के डॉक्टर 14 जनवरी की शाम को ही कर चुके हैं। उनका डेथ-सर्टीफिकेट भी जारी कर दिया है, लेकिन एडीजी इसे मानने के लिए तैयार नहीं हैं।

ऐसे खुला राजः एडीजी के बंगले पर ड्यूटी करने वाले जवान उनके मृत पिता की सेवा करने के चलत संक्रमण की शिकार होकर बीमार हो गए। वह बंगले पर नहीं पहुंचे। उन्होंने बाकी साथियों को बताया।

बाबा के मकड़जाल में फंसकर लुट रहे ग्रामीण

जयपुर- भोली-भाली जनता से रकम ऐंठने वाला र्जी बाबा भरत सिंह राठौड़ ने अपने पाखंड से सामोद औचौमूं के ग्रामीणों को बुरी आत्माओं का भय दिखाकर लाखों रुपये लूटने का गोरखधंधा कर रहा है। मूल रूप सेनागौर निवासी यह फर्जी बाबा 29 सालों से नया बस स्टेंड, सामोद गांव में अपना फर्जी धाम बनाकर बैठा है, जहां वहरोजाना सैंकड़ों लोगों को ठगने का काम करता है।

फर्जी बाबा के खिलाफ एसपी ग्रामीण के माध्यम से शिकयतकर्ता भंवर गोविंदसिंह ने सामोद थाना में धोखधड़ी 22 सितंबर 2017 को मुकदमा भी दर्ज हुआ था। इसके बाद पुलिस ने प्रभावशाली लोगों ने इसको बचा लिया। इससे पूर्व दिखावे के लिए फर्जीबाबा को थानेवालों ने 20 जुलाई को गिरफ्तार किया था। बाबा के खिलाफ मामला दर्ज नहीं किया और उसे पैसे खाकर छोड़ दिया था। फर्जीबाबा पर आरोप है कि यह अनपढ़ लोगों की जमीनें उनकी मर्जी के बिना ही बिकवा देता है।

पीड़ित व्यक्ति उसकसे बड़े रसूख के चलते विरोध नहीं कर पाते हैं। इसके अलावा बाबा के वहां इलाज के लिए आने वाली महिलाओं पर भी गंदी नजर रखता है और प्रयास करता है उनके साथ इलाज के नाम पर अवैध संबंध स्थापित कर उन्हें आर्थि रूप से लूटने का काम भी करता है।

-राष्ट्रीय सहारा (21-5-2018)

खोज खबर

ट्रेफिक बढ़ा सकता है मोटापे का खतरा

लंदनः लंबे समय तक सड़क ट्रेफिक के शोर में रहने वालों में मोटापे का खतरा बढ़ सकता है। इंवायरमेंट इंटरनेशनल पत्रिका में प्रकाशित एक हालिया अध्ययन में इसका दावा किया गया कि जिसके आंकड़े 3796 व्यस्कों पर आधारित हैं। स्पेन में स्थित बार्सिलोना इंस्टीट्यूट फॉर ग्लोबल हेल्थ (आईएसग्लोबल) के मारिया फोरस्टर ने कहा कि हमारे विश्लेषण में पता चला है कि जो लोग उच्च स्तर के ट्रेफिक के शोर में अधिक समय तक रहते हैं, उनमें मोटापे का खतरा बढ़ जाता है। उदाहरण के तौर पर शोर के स्तर में 10 डेसीबल की बढ़ौतरी किए जाने से मोटापे में 17 फीसदी को इजाफा देखा गया है।

लाइट से होगा खुजली का इलाज

अगर आप खुजली से अक्सर परेशान रहते हैं तो आपके लिए यह अच्छी खबर हैं अभी तक आप तरह-तरह के लोशन और क्रीम का इस्तेमाल करते आए हैं, लेकिन अब इसका इलाज एक खास तरह की लाइट से संभव हो सकेगा।

रोम स्थित यूरोपियन आण्विक जीव विज्ञान प्रयोगशाला के वैज्ञानिकों ने खुजली के उपचार का एक नायाब एवं प्रभाव तरीका ढूंढ निकाला है। शरीर में खुजली होने पर अब एक क्रीम या जैल लगाने की जरूरत नहीं होगी। वैज्ञानिकों का दावा है कि खुजली वाले हिस्से पर एक खास तरह की लाइट दिखाने से खुजली छूमंतर हो जाएगी। वैज्ञानिकों द्वारा उपचार की इस नई तरकीब का चूहों पर सफल परीक्षण किया जा चुका हैं चूहों पर हुए प्रयोग में पाया गया कि इस उपचार के बाद खुजली में कमी देखी गई और चूहों ने खुजली वाले हिस्ससे को कम खरोंचा। गंभीर चर्म रोग में खुजली से राहत अस्थाई तौर पर ही मिलती है। यह नया तरीका उपचार को आसान बनाएगा। शोधकर्ताओं ने नए इलाज की उम्मीद में खुजली के वास्तविक कारणों पर फोकस किया, जिसके बाद यह तरकीब सामने आई।

अंतरिक्ष में भी मौजूद है एक बरमूडा ट्रायंगल

ब्राजील के आसमान में काम करना बंद करदेते हैं अंतरिक्ष उपकरण और कंप्यूटर

लंदनः समुद्र की तरह अंतरिक्ष में भी एक बरमूडा त्रिकोण है जहां पहुंचते ही अंतरिक्ष यात्रियों को अजीब तरह के अनुभव होते है। यहां कंप्यूटर और सैटेलाइट काम करना बंद कर देते हैं। अंतरिक्ष का यह इलाका दक्षिणी अटलांटिक महासागर और ब्राजील के आसमान के ठीक ऊपर मौजूद है।

दो बार इस इलाके से गुजरने वाले नासा के अंतरिक्ष यात्री ने टेरी वट्स ने बता या कि पहले स्पेस मिशन में ही उन्हें इसका अनुभव हो गया था।

सनेहा बनीं भारत की पहली महिला जिनकी ना कोई जाति है, न कोई धर्म

तमिलनाडु, वेल्लोर के तिरुपत्तूर की स्नेहा 9 साल की लंबी लड़ाई लड़ने के बाद भारत की पहली ऐसी महिला बन गई हैं, जिनकी न कोई जाति है न कोई धर्म है। स्नेहा ने 2010 में No castr, mo religion के लिए आवेदन किया था और 5 फरवरी 2019 को बहुत मुश्किलों के बाद यह अनुमति मिली।

बरनाला में कृष्ण बरगाड़ी यादगार समारोह

-रामस्वर्ण लखोवाली

प्रेरणा समारोह

17फॅरवरी 2019:तर्कशील भवन, बरनाला में सुबह से ही गहमा-गहमी थी। पंजाब के दूर-दराज के क्षेत्रों से तर्कशील लहर के अनेक नेता, श्रमिक और प्रशंसक अपने दिवंगत नायक की समृति में होने वाले प्रांतीय समारोह में शामिल होने के लिए पहुंच रहे थे। भवन के आंगन में चाय पानी के साथ गरिमामय स्वागत में आपसी बातचीत व चर्चा भी देखने को मिल रही थी। खराब मौसम के चलते समारोह थोड़ा देरी के साथ आरंभ हुआ और प्रथम मंजिल पर सेमीनार हाल में प्रसिद्ध डाक्यूमैंटरी निर्माता प्रो. गौहर रज़ा की फिल्म चलाई गई। शहीद-ए-आज़म भगत सिंह के जीवन पर आधारित डाक्यूमैंटरी फिल्म 'इंकलाब के चलते' हाल में एकत्रित दर्शकों को अपने साथ ले लिया। आज़ादी संग्राम की गाथा पर भगत सिंह व साथियों के बुलंद जज़्बों और अदर्शो की बात करती हुई डाक्युमैंटरी समाप्त हुई तो सुधी दर्शकों ने तालियों के साथ फिल्म निर्माता को दाद दी। इस फिल्म में बड़े सुचजे ढंग से तर्कशील प्रेमियों तक पहुंचाने के लिए तरलोचन समराला की राहनीय भूमिका रही। समारोह का अगला महत्वपूर्ण सेशन आरंभ हुआ। मंच संचालन की जिम्मेवारी मास्टर तरलोचन समराला ने संभाली। कृष्ण बरगाड़ी यादगारी ऐवार्ड देने के लिए चुने गये लेक्चरार बलवंत सिंह (संपादक, तर्कशील पथ व पूर्व प्रधान तर्कशील सोसायटी, हरियाणा) मंच पर कृष्ण की जीवन साथी राजिंदर कौर बरगाड़ी, हेम राज स्टेनो व राजिंद्र भदौड के साथ प्रधानगी मण्डल में बिराजमान थे। सेशन के आरंभ में तर्कशील मैगज़ीन के संपादक बलबीर चंद लौगोवाल ने लेक्चरार बलवंत सिंह के तर्कशील लहर के लिए किये संधर्ष की चर्चा करते हुए डेरा साधवी केस में निभाई गई भूमिका व शिद्दत से तर्कशील विचारधारा पर डटे रहने के जज़्बे की सराहना की। उन्होंने कहा कि बलवंत सिंह का डेरावाद व अज्ञानता के खिलाफ संघर्ष उल्लेखनीय है। बलवंत सिंह ने हरियाण क्षेत्र में मानसिक रोगियों को नया जीवनदेने के लिए मानसिक स्वास्थ्य मशवरा केंद्रों की शुरूआत की और स्वयं यह कार्य संभाला। सा हि त्य विभाग के मुखी राम स्वर्ण लक्खेवली न कृष्ण बरगाड़ी के जीवन और उनका तर्कशील लहर के डाले गये योगदान का उल्लेख करते हुए कहा कि कृष्ण बरगाड़ी का जीवन व लहर के लिए किया गया कार्य हमारे लिए प्रेरणा स्रोत है, जिसे हमने वैज्ञानिक चेतना के प्रसार के लिए लोगों तक ले जाना है। उन्होंने कृष्ण बरगाड़ी ऐवार्ड के शब्दों को उपस्थित दर्शकों के साथ साझा किया।

प्रांतीय कमेटी की ओर से 17वां यादगारी ऐवार्ड का सम्मान लेक्चरार बलवंत सिंह को प्रदान किया गया। इस अवसर पर बोलते हुए उन्होंने कहा कि वे लम्बे समय से वैज्ञानिक चेतना के प्रचार-प्रसार के लिए यत्नशील हैं। तर्कशील के अंदर की सच्चाई के साथ ही वे प्रतिबद्धता के साथ इस मार्ग पर चले हैं। डेरा साधवी वे रणजीत सिंह कत्ल काण्ड में गवाह की भूमिका दौरान आई कठिनाइयों और उनके मुकाबले के जज़्बे को उन्होंने उपस्थित दर्शकों के साथ साझा किया। लेक्चरार बलवंत सिंह ने जीवन भर तर्कशीलता के रास्ते पर चलने का प्रण करते हुए कहा कि भ्रममुक्त व--- अच्छे समाज के सृजन के लिए और भी ज्यादा यत्नों की जरूरत है।

समारोह के दूसरे महत्वपूर्ण सत्र में देश के महान चिंतक, विज्ञानी व डाक्युमैंटरी फिल्म मेकर प्रो. गौहर रज़ा 'मीडिया और धार्मिक मूलवाद' विषय पर चर्चा करने के लिए पहुंचे। उन्होंने कहा कि मीडिया की देश और समाज के प्रति महत्वपूर्ण भूमिका है। जिस देश के नेता यह कहा करते थे कि हमारे देश का आधार तर्क और वैज्ञानिक दृष्टीकोण होगा,

अब उस देश के सत्ताधारी धर्म और मूलवाद के सहारे भरगवेकरण को जनमानस के मनों में भरने की कोशिशें में जुटे हुए हैं। प्रो. गौहर रज़ा ने साफ शब्दों में कहा कि चार दशक पहले टेलीविज़न के माध्यम से अवतरित हुए अनेक तथाकथित बाबा लोगों को गुमराह करके धर्म को राजसत्ता के हथियार के रूप में इस्तेमाल के प्रत्यक्ष उदाहरण है।उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार के पास मूर्तियां बनाने व कुंभ मेले लगाने के लिए करोडों रूपये पर उचित शिक्षा, सेहत व साईंस के लिए कुछ नहीं है। सत्ताधारी साईंस कांग्रेस सेमिनारों में जा कर गैरवैज्ञानिक और प्राचीन संस्कारों को फैलाने वाले विचार पेश कर रहे हैं। प्रो. रज़ा ने अपने सटीक भाषण में धार्मिक मूलवाद की तुलना उस अंधेरे के साथ की जो विज्ञान के प्रकाश को धर्म और सत्ता के और ज्यादा फैलने से रोकना चाहता है।

उनके भाषण के पश्चात चला प्रश्नोत्तरी सेशन बहुत ज्ञानमयी व प्रभावशाली रहा। दशकों की शंकाओं का निवारण करते हुए प्रो. गौहर रज़ा ने कहा कि दूसरों पर नियंत्रण करना, उनकी ज़बानबंदी करना एक फासिस्ट सोच है, जिस पर चलते भाजपा देश के लोकतांत्रिक अधिकार के रक्षकों को जेलों में डाल रही है। धर्म, आस्था के विचार व इतिहास को तोड़-मरोड़ कर पेश किया जा रहा हैं उन्होंने स्पष्ट किया कि प्रगतिशील शक्तियों को मीडिया, मूलवाद व सत्ता के माध्यम से मिल रही चुनौतियों का एकजुटता के साथ मुकाबला करना चाहिए। उन्होंने वैज्ञानिक चेतना के प्रचार-प्रसार में जुटे मैगज़ीनों की तुलना दियों के साथ करते हुए कहा कि इनका प्रकाश अज्ञानता, अंधविश्वासों, मूलवाद के अंधेरे के खिलाफ जुगनुओं को तैयार करेगा।

समारोह में बोलते-हुए प्रो. गौहर रज़ा की जीवन साथी शबनम हाशमी ने फासीवाद के खिलाफ लड़ाई हर स्तर पर लड़ने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कहा कि स्वाल करने, तर्क-वितर्क करने, व सोचने समझने पर पाबंधियां लगा कर भगवेकरण को लागू करने के मनसूबे देशहित में नहीं हैं। सेमिनार हाल में लगातार दो घंटे की गंभीर विचार-चर्चा को उपस्थित दर्शकों ने बड़ी तन्मयता से सुना और आनंद लिया। समारोह समापन क्षणें में सोसायटी के प्रांतीय संगठन प्रधान राजिंदर भदौड ने मरहूम नेता कृष्ण बरगाड़ी के संघर्ष को सलाम करते हुए लेक्चरार बलवंत सिंह से समर्पण भावना और शिद्दत से सीखने के व इसको जीवन में लागू करने के लिए कहा। उन्होंने प्रो. गौहर रज़ा व शबनम हाशमी के साथ-साथ सफल विचार चर्चा के लिए उपस्थित तर्कशील सनेहियों का धन्यवाद किया। समारोह में प्रो. रज़ा की ओर से केवल बठिंडा की ओर से बनाये गये डा.नरेंद्र दाभोलकर व डा. अब्रहम टी.कावूर के बनाये चित्रों का लोकार्पण कियागया। इस अवसर पर सोसायटी के प्रांतीय नेताओं सुखविंदर बागपुर, ऐडवोकेट, हरिंद्र लाली, अजीत प्रदेसी व भूरासिंह महमा सरजा के अलावा रज्यभर से आये तर्कशील नेता अभिनव जम्मू, मनजीत सिंह मलसीआं, हरचंद भिण्डर, जसवंत मोहाली, वेदप्रकाश सोनी, हरचरण चोहला, जोगिंदर कुल्लेवाल, कुलजीत डंगरखेड़ा, अशोक कुमार रोपड़, सुरिंदर रामपुरा,चनन वांदर, जसवंत जस्स, डा. जगजीत ज़ोरा सिंह ख्याली, परमदेव, जुझार लौंगोवाल और गुरप्रीत शहणा भी उपस्थित थे।

बिहाइण्ड मिरेकल सेमिनार का आयोजन

भारतीय औद्योगिकी विभाग NSTC विभाग के सहयोग से स्टेट रिसोर्स सेंटर के द्वारा तीन दिवसीय साइंस अवेयरनेस कार्निवल राजस्थान के अजमेर जिले में आयोजित किया। पुष्कर रोड स्थित आदर्श विद्या निकेतन विद्यालय में इसका आयोजन किया गया। कार्यशाला के समापन के दौरान चमत्कारों या जादू के पीछे छिपा विज्ञान बच्चों को बताया गया। जिसे सब चमत्कार कहते हैं उनके पीछे साइंस ट्रिक्स होती हैं। यह बात एनजीओ के कार्यकर्ता व तर्कशील नेता ईश्वर सिंह ने प्रयोग द्वारा बच्चों के सामने सिद्ध करके दिखाया। इस अवसर पर प्रधानाचार्य भूपेंद्र उबाना ने बताया कि दैनिक जीवन में विज्ञान रचा बसा हैं विज्ञान की सही जानकारी होने से हमारा समाज अंध ाविश्वासों से मुक्त हो सकता है।

कार्यशाला में विद्यालय के 150 विद्यार्थियों एवं अध्यापक उपस्थित रहे। विद्यार्थियों ने भी रुचिपूर्वक विज्ञान की बारीकियों को अनुभव किया।

कार्यक्रम के अंत में विज्ञान विषय प्रमुख श्री जयप्रकाश जी ने स्टेट रिसोर्स सेंटर का आभार व्यक्त करते हुए विद्यार्थियों के बीच गतिविधि आधारित शिक्षा को प्रोत्साहित करने का आवहान किया।

पूणे सम्मान समारोह का सुखद अनुभव

डा. नरेंद्र दाभोलकर स्मृति पुरस्कार 2018 तर्कशील सोसायटी पंजाब को मिला

इस साल के आरंभ में तर्कशील सोसायटी पंजाब को अंधश्रद्धा निर्मूलन समित महाराष्ट्र की ओर से मराठी मैंगजीन वार्ता पत्र के संपादक राहुल सोरात की ओर से एक सुखद संदेश मिला। उन्होंने सूचित किया कि महाराष्ट्र फाऊंडेशन अमेरिका ने वर्ष 2018 काडा. नरेंद्र दाभोलकर स्मृति पुरस्कार तर्कशील सोसायटी पंजाब (रजि.) को देने का निर्णय लिया है। यह सम्मान पहली बार महाराष्ट्र से बाहर किसी संस्था को दिया जा रहा है।

डा. नरेंद्र दाभोलकर स्मृति पुरस्कार (जिसमें एक लाख रुपये की राशि भी शामिल है) प्राप्त करने के लिए तर्कशील सोसायटी पंजाब (रजि.) की ओर से प्रांतीय सोसायटी के प्रधान राजिंद्र भदौड़ के साथ, सुखविंदर बागपुर, भूरा सिहं और राम स्वर्ण लखोवाली पूणे के लिए रवाना हुए।

इससे पूर्व मराठी मैगजीन साधना के संपादक की ओर से तर्कशील सोसायटी पंजाब द्वारा किये जा रहे कार्यो बारे पूर्ण जानकारी मांगने पर, राम स्वर्ण लखोवाली, राजिन्द्र भदौड व गुरमीत सिंह अंबाला द्वारा राहुल थोरात के पास पहुंचा दी गई थी।

महाराष्ट्र फाऊंडेशन की ओर आयोजित 27 जनवरी को पूणे के बाल गंधर्व रंग मंदिर ऑडिटोरियम में केशव गोरे स्मारक ट्रस्ट व साधना ट्रस्ट के प्रबंधन में इस आयोजन की जिम्मेवारी थी।

प्रथम सत्र में 6 सहित्यकारों का सम्बोधन व सम्मान था। इसमें, जीवन गौरव पुरस्कारः शांता गोखले) मुम्बई, आनंदवर्धन, संस्था, वरोरा, (डा. विकास आमटे), कथा पुरस्कारः सानिया (बंगलूरू), नाटक पुरस्कारः राजीव नायक (मुम्बई), ललित कला पुरस्कारः प्रवीण बांदेकर तथा समाजिक कार्य पुरस्कारः हरी नरके (पूणे) शामिल थे।

मंच पर महाराष्ट्र फाऊंडेशन की ओर आमंत्रित प्रसिद्ध नावलकार, कहानीकार, कवि, ललित कलाओं में प्रवीण समाजिक कार्यकर्ता, तर्कशील व अन्य क्षेत्रों में कार्य करने वाले नेता उपस्थित थे।

मंच पर पुरस्कार प्रदान करने वाली हस्तियों में महाराष्ट्र फाऊंडेशन के सरप्रस्त प्रधान व प्रसिद्ध प्रगतिशील कलाकर व फिल्मी हस्ती अमोल पालेकर मौजूद थे।

तर्कशील सोसायटी पंजाब को पुरस्कार से सम्मानित करने से पूर्व प्रांतीय संगठन प्रधान राजिंद्र भदौड को मंच पर बोलने के लिए आमंत्रित किया गया। हिंदी में बोलते हुए उन्होंने 20 मिनट के अपने भाषण में तर्कशील सोसायटी की स्थापना, उद्देश्य, व गतिविधियों बारे दर्शकों को अवगत करवाया तथा डा. नरेंद्र दाभोलकर स्मृति पुरस्कार के लिए महाराष्ट्र फाऊंडेशन का धन्यवाद किया। अपने संबोधन के दौरान उन्होंने सोसायटी की ओर से चलाये जा रहे मानसिक परामर्श केंद्रों व तर्कशील लहर के लिए कृष्ण बरगाडी द्वारा किये गये योगदान, तर्कशील वैन, प्रकाशन, तर्कशील भवन में की जाने वाली सरगर्मियों आदि के बारे बतलाया, जिसे खूब सराहा गया। समारोह में बोलते हुए उन्होंने कहा कि डा. दाभोलकर स्मृति पुरस्कार तर्कशील सोसायटी पंजाब के लिए और भी ज्यादा जिम्मेदारी डालती है कि अंधविश्वासों, अज्ञानता व मूलवाद के अंधेरे के खिलाफ और ज्यादा ताकत से संघर्ष किया जाये। उनके संबोधन के पश्चात् सोसायटी के प्रधान अन्य प्रांतीय नेताओं ने मुख्य अतिथि अमोल पालेकर के हाथों से पुरस्कार प्राप्त किया।

बाद में समारोह में मिलने वाले सभी महमानों, अनिस की नेताओं और बुद्धिजीवियों ने वैज्ञानिक चेतना के लिए तर्कशील मैगजीन, प्रकाशन व साहित्य वैन के कार्य को बहुत प्रभावी कदम बताया।

समुचे समारोह में महाराष्ट्र फाऊंडेशन के चेयरमैन अंकुश करणिक, अनिस के राज्य प्रधान मिलिंद देशमुख और वार्तापत्र के प्रबंधकीय संपादक राहुल थोरात व मैगजीन के संपादक विनोद श्रीसात की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

रिपोर्ट : रामस्वर्ण लखोवाली

आर.पी. गांधी की याद में

तर्कशील सोसायटी हरियाणा(रजि॰) की द्विमासिक मीटिंग सम्पन्न

तर्कशील सोयायटी हरियाणा के पूर्व प्रधान एवं पत्रिका तर्कशील के सम्पादक श्री आर.पी.गांधी जी की याद में 13 जनवरी 2019 को उनके गृह नगर यमुनानगर में एक शोक सभा रखी गइ जिसमें राज्य भर एवं पंजाब से तर्कशील कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। इस अवसर पर श्री आर.पी.गांधी के सुपुत्र श्री नवीन गांधी ने अपने संस्मरण व्यक्त करते हुए बतलाया कि दुर्घटना के कारण फिजीकली चैलेंज हो जाने के कारण वे टूट गए थे, लेकिन इसके बावजूद श्री आर.पी गांधी ने उन्हें एक पिता होने के साथ ही एक शिक्षक की तरह उन्हें सहारा देकर टूटने से बचा लिया था।

सभा में तर्कशील प्रकाशन के संपादक एवं वरिष्ठ तर्कशील मेघराज मित्र ने गांधी जी के बारे अपने संस्मरण व्यक्त करते हुए कहा कि वे अपने आप में एक संस्था थे। उन्हें श्री आर. पी. गांधी की रचित तीन किताबें प्रकाशित करने का अवसर मिला। तर्कशील सोयटी हरियाणा के पूर्व प्रधान राजा राम ने गांधी जी को एक अनथक योद्धा बतलाया जो अंत तक भी तर्कशील आंदोलन से जुड़े रहे। इसी सभा में तर्कशील पत्रिका के संपादक प्रा. बलवंत सिंह ने उनके साथ जुड़ी विभिन्न यादों को साझा किया और उनके तर्कशीलता के प्रति स्दैव समर्पण रहने पर गौरव व्यक्त किया। तर्कशील सोसायटी हरियाणा के अध्यक्ष गुरमीत सिंह ने उन्हें एक आधार स्तम्भ के रूप में व्यक्त किया कि उनकी वजह से सोसायटी लगातार सक्रिय रही। उन्होंने संस्मरण में कहा कि वे सदा किसी का सहारा बनना पसंद करते थे न कि किसी का सहारा लेना। सभा में यमुनानगर से बलबीर सिंह एडवोकेट लक्षमण विनायक, संजीव वालिया ने उन्हें याद कर श्रद्धांजति दी। मंच संचालन यमुनानगर ईकाई के सचिव सुखदेव ने किया।

कलायत के स्कूल में छात्रों को वैज्ञानिक जानकारी दी

दिनांक 7-1-2019 को एम डी एन स्कूल कलायत में चल रहे एन एस एस कैंप में तर्कशील सोसायटी हरियाणा के जिला प्रधान कृष्ण राजौंद ने छात्राओं को सोसाइटी के बारे में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि कैसे तथा कथित बाबा समाज से पाखंड व अंधविश्वास फैलाते हें वे भोले भाले लोगों को अपने चंगुल में फंसा लेते हैं। इसलिए हमें वैज्ञानिक विचारधारा अपनानी चाहिए व बाबाओं द्वारा फैलाए गए जाल से बचने की सलाह दी। बाबाओं द्वारा फलाए गए पाखंड से बाहर कैसे निकला जाए आद जानकारी भी दी।

तर्कशील साथी सुशील मटौर ने बच्चों को दिखाया कि तथाकथित बाबा कैसे बच्चों के छारवे निकालने के नाम पर ठगते हैं। तर्कशील राजेश राजौंद ने बच्चों को जादू की ट्रिक दिखाई और बताया कि जादू कोई चमत्कार नहीं है बल्कि एक कला व हाथ की सफाई व विशेष प्रकार के सामान द्वारा दिखाई गई चालाकी है। अध्यापिकाओं व छात्राओं ने सासायटी द्वारा किये जाने वाले कार्यो की काफी सराहना की।

इस मौके पर एम डी एन स्कूल के संस्थापक व तर्कशील सोसायटी के वरिष्ठ साथी विजय कलायत ने बच्च्ौ। को जीवन में तर्क की कसौटी पर जांचने व परखने के बाद ही विश्वास करने की सलाह दी। इस मौके स्कूल के छात्र, छात्राओं अध्यापक व अध्यापिकाओं में कार्यक्रम के प्रति उत्साह देखने को मिला।

वैज्ञानिक जागरूकता से सामाजिक अंधविश्वास हटेंगे

-डॉ. दिनेश मिश्र

किसी भी व्यक्ति को बचपन से ही अक्षर ज्ञान के साथ सामाजिक अंधविश्वासों व कुरीतियों के संबंध में सचेत किया जाना चाहिए। वैज्ञानिक जागरूकता के विकास से विभिन्न अंधविश्वासों व कुरीतियों का निर्मूलन संभव है, व्यक्ति को अपनी असफलता का दोष ग्रह-नक्षत्रों पर न थोपने की बजाय स्वयं की खामियों पर विश्लेषण करना चाहिए,

ग्राम कोलर, अभनपुर में आयोजित सभा में अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति के अध्यक्ष नेत्र विशेषज्ञ डॉ. दिनेश मिश्र ने कहा हमारे देश के विशाल स्वरूप में अनेक जाति, धर्म के लोग हैं जिनकी परंपराएँ व आस्था भी भिन्न-भिन्न है लेकिन धीरे धीरे कुछ परंपराएँ, अंधविश्वासों के रूप में बदल गई है। जिनके कारण आम लोगों को न केवल शारीरिक व मानसिक प्रताडऩा और ठगी का शिकार होना पड़ता है। कुछ चालाक लोग आम लोगों के मन में बसे अंधविश्वासों, अशिक्षा व आस्था का दोहन कर ठगते हैं। उन अंधविश्वासों व कुरीतियों से लोगों को होने वाली परेशानियों व नुकसान के संबंध में समझा कर ऐसे कुरीतियों का परित्याग किया जा सकता है।

डॉ. मिश्र ने कहा छत्तीसगढ़ में टोनही के नाम पर महिला प्रताडऩा की घटनाएँ आम है जिनमें किसी महिला को जादू-टोना करके नुकसान पहुँचाने के संदेह में हत्या, मारपीट कर दी जाती है जबकि कोई नारी टोनही या डायन नहीं हो सकती, उसमें ऐसी को शक्ति नहीं होती जिससे वह किसी व्यक्ति, बच्चों या गाँव का नुकसान कर सके। जादू-टोने के आरोप में महिला प्रताडऩा रोकना आवश्यक है। अंधविश्वासों के कारण होने वाली टोनही प्रताडऩा/बलि प्रथा जैसी घटनाओं से भी मानव अधिकारों का हनन हो रहा है। अंधविश्वासों एवं सामाजिक कुरीतियों के निर्मूलन के लिये प्रदेश में पिछले बीस वर्षों से को नारी टोनही नहीं अभियान चलाया जा रहा है।

उन्होंने कहा कि समाज में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास अतिआवश्यक है। कई बार लोग चमत्कारिक सफलता प्राप्त करने की उम्मीद में ठगी के शिकार हो जाते हैं, जबकि किसी भी परीक्षा, साक्षात्कार, नौकरी प्रमोशन के लिए कठोर परिश्रम व सुनियिोजित तैयारी आवश्यक है। तुरन्त सफलता के लिए किसी चमत्कारिक अँगूठी, ताबीज, तंत्र-मंत्र कथित बाबाओं के चक्कर में फँसने की बजाय परिश्रम का रास्ता अपनाना ही उचित है। डॉ. मिश्र ने कहा समाज में जादू-टोना, टोनही आदि के संबंध में भ्रमक धारणाएँ काल्पनिक है, जिनका को प्रमाण नहीं है। पहले बीमारियों के उपचार के लिए चिकित्सा सुविधाएँ न होने से लोगों के पास झाड़-फूँक व चमत्कारिक उपचार ही एकमात्र रास्ता था, लेकिन चिकित्सा विज्ञान के बढ़ते कदमों व अनुसंधानों ने कई बीमारियों, संक्रामकों पर नियंत्रण प्राप्त कर लिया है तथा कई बीमारियों के उपचार की आधुनिक विधियाँ खोजी जा रही है। बीमारियों के सही उपचार के लिए झाड़-फूँक, तंत्र-मंत्र की बजाय प्रशिक्षित चिकित्सक से संपर्क करना चाहिए। आमतौर पर अंधविश्वासों के कारण होने वाली घटनाओं की शिकार महिलाएँ ही होती है। अपनी सरल प्रवृत्ति के कारण से सहज ही चमत्कारिक दिखा देने वाली घटनाओं व अफवाहों पर विश्वास कर लेती है व ठगी व प्रताडऩा की शिकार होती है जिससे भगवान दिखाने के नाम पर रूपये, गहने दुगुना करने के नाम पर ठगी की जाती है। अंधविश्वास एवं सामाजिक कुरीतियों के निर्मूलन व सामाजिक जागरण में अपना अमूल्य योगदान विद्याथह्र एवं स्थानीय ग्रामीण भी दे सकते हैं। उन्हें आस-पास के लोगों को इस संदर्भ में विज्ञान सम्मत जानकारी देनी चाहिए। कार्यक्रम में व्याख्यान के बाद चमत्कारों की वैज्ञानिक व्याख्या भी प्रस्तुत की गई व प्रश्नोत्तर हुए। कार्यक्रम को डॉ. अबीर मिश्रा, इशिता मुद्गल, डॉ. सूर ने भी संबोधित किया।

रिपोर्टः 2 डॉ. शैलेष जाधव सचिव

रा.व.मा.विद्यालयें में चमत्कारों का पर्दाफाश

दिनांक 27-2-2019 को रा.व.मा.विद्यालय कनिपला जिला कुरुक्षेत्र में भारती फाऊंडेशन के सहयोग से 'चमत्कारों का पर्दाफाश' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस में ईश्वर नास्तिक, रण सिह तथा बलवंत सिंह द्वारा जादू के ट्रिक दिखा कर उनके पीछे कार्य कर रहे विज्ञान के बारे में जानकारी दी। साथ ही तर्कशील सोसायटी के जनहित में किए गए कार्यो, चुनौती एवं उद्देश्यों के बारे में समझाया गया।

रा.मॉडल व. मा. विद्यालय कुरुक्षेत्र एवं रा.क.व.मा.विद्यालय थानेसर में वैज्ञानिक चिंतन कार्यक्रम

दिनांक 27-2-2019 को दोपहर बाद रा.मॉडल व. मा. विद्यालय कुरुक्षेत्र एवं रा.क.व.मा.विद्यालय थानेसर में भारती फाऊंडेशन के सहयोग से आयोजित एक कार्यक्रम में ईश्वर नास्तिक एवं रण सिंह (रिटा. मुख्याध्यापक) द्वारा चमत्कारों का पर्दाफाश कार्यक्रम प्रस्तुत किया गयां इस जादू के विभिन्न ट्रिक दिखा कर, जादू के पीछे छुपे वैज्ञानिक रहस्यों के बारे में समझाया गया। साथ ही विद्यार्थियों को अंधविश्वासों को त्याग कर वैज्ञानिक चिंतन अपनाने का संदेश दिया गया।

खाबरा कलां स्कूल में अंधविश्वास के विरूद्ध जागरूकता का कार्यक्रम

दिनांक 3 फरवरी, 2019 को एस.बी.एस. पब्लिक स्कूल, खाबरा कलां, जिला फतेहाबाद में एक विज्ञान मेले का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में समाज में फैले हुए अंधविश्वास और सामजिक कुरीतियों के बारे में लोगों को जागरूक किया गया। इस विज्ञान मेले में तर्कशील सोसायटी हरियाणा की इकाई भूना का विशेष योगदान रहा।

कार्याक्रम की शुरूआत सोसायटी सदस्य सुरेंद्र छाबा द्वारा आंखों पर पट्टी बांध कर मोटर साइकिल चलाने से हुई। फरियाद सनियाणा एवं सुरेश आर्य ने चमत्कारों का पर्दाफाश का प्रोग्राम प्रस्तुत करते हुए जादू के विभिन्न ट्रिक दिखा कर उनके पीछे छुपी चालाकी के बारे में जानकारी दी। कार्यक्रम के अंत में सोसायटी के सदस्यों द्वारा नंगे पांव आग के अंगारों पर चल कर दिखाया गया तथा इसके रहस्य को समझाया गया। राम प्रसाद मुगलपुरा ने तर्कशील साहित्य का स्टाल लगाया और लोगों को तर्कशील पथ पत्रिका भी बांटी।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री दयानंद सिहाग डी.ई.ओ., फतेहाबाद तथा अध्यक्षता श्री रवि बैनी वाल (पूर्व सरपंच) श्री विजेन्द्र गोदार (सरपंच प्रतिनिधि), बलजीत बेनीवाल ने की।

वेटिकन के शीर्ष पादरी जॉर्ज पेल बाल यौन शोषण के दोषी

मेलबर्न प्रट्रः वेटिकन के शीर्ष पादरी कार्डिनल जॉर्ज पेल को बाल यौन शोषण मामले में दोषी करार दिया गया है। ऑस्ट्रेलिया में चर्च के सर्वोच्च पादरी जॉर्ज कैथोलिक मुख्यालय वेटिकन में कोषाध्यक्ष रह चुके हैं। वह पोप के नजदीकी लोगों में रहे हैं। 77 साल के जॉर्ज ने 22 साल पहले 13 साल के दो बच्चों का यौन उत्पीड़न किया था। लंबे समय तक चली सुनवाई के बाद मंगलवार को विक्टोरिया काउंटी कोर्ट ने जॉर्ज को यौन शोषण के कुल पांच मामलों में दोषी करार दिया।जॉज को सजा बुधवार को सुनारई जाएगी। दुनिया भर से सामने आ रहे पादरियों के बाल यौन शोषण के मामलों के बीच दो दिन पहले ही पोप फ्रांसिस ने वेटिक में कहा था कि इस अपराध को धरती से मिटा देंगे। आरोपों के खिलाफ लड़ने के लिए पेल को छुट्टी लेकर ऑस्ट्रेलिया जाने की अनुमति दे दी थी। वेटिकन सिटी में रह रहे पेल ने कहा था, 'मैं अदालत पहूंचने का इंतजार कर रहा हूं। मैं इन सभी मामलों में निर्दोष हूं, मेरे लिए यौन शोषण का विचार ही घृणित है।'

अलविदा आर.पी.गांधी !!!'

-गुरमीत अम्बाला

तर्कशीलता को समर्पित एक भरपूर जीवन 91 वर्ष की अवस्था मे श्री आर.पी.गांधी इस संसार को अलविदा कह गए। उनके जीवन का बड़ा हिस्सा तर्कशील आंदोलन को समर्पित रहा। 1 मार्च, 1928 को चक न. 263, तहसील टोबा टेक सिंह, जिला लायलपुर (पाकिस्तान) में मास्टर फतेह चंद और माता चेतन बाई के घर उनका जन्म हुआ। उनके पिता जी पोस्टमास्टर होने के साथ ही हकीम भी थे। वे परिवार की चौथी सन्तान थे। परिवार में उनसे बड़ी दो बहने और एक भाई थे। प्रारम्भिक शिक्षा उन्होंने अपने गृह नगर में ही प्राप्त की। हाई स्कूल के लिए उन्हें खानेवाल 'जिला मुलतान' के डी. ए. वी. स्कूल में दाखिला लिया। अपनी पढ़ाई के दौरान ही उनकी वृति अन्य बच्चों से अलग थी। अन्य बच्चे जहां खेल कूद में मस्त रहते वे तालाब से गीली मिट्टी लाकर खिलौने बनाते या कागज, गत्ते, कपड़ों के फूल, खिलौने बनाते। बचपन से ही स्कूली किताबों के अलावा वे अन्य किताबें भी पढ़ते रहते थे। सम्भवत ये ही समय था जब उन्हें पंजाबी के प्रसिद्ध लेखक गुरुबख्श सिंह प्रीतलडी को पढ़ने का अवसर मिला जिनके यथार्थवादी साहित्य ने उन के जीवन नजरिए को बदल दिया। प्रीतलड़ी पत्रिका के सभी अंक वे तन्मयता से पढ़ने लगे। उनके साहित्य ने उनके चरित्र निर्माण में अहम भूमिका निभाई। सभी धर्मो से मुक्त उनका जीवन मानवतावादी बनने की तरफ अग्रसर हो गया। इसके अलावा बलराज साहनी, अमृता प्रीतम, भीष्म साहनी, मुंशी प्रेमचंद, कृश्न चन्द्र को भी उन्होंने खुब पढ़ा। रूस के लेखक गोर्की भी उनके पसंदीदा लेखक थे। दसवीं की परीक्षा पास करने के उपरांत वे इंजीनियरिंग करने के इच्छुक थे और डायमंड जुबली इंजीनियरिंग कालेज लाहौर में दाखिला लेना चाहते थे, परन्तु तभी 15 अगस्त 1947 को देश आजाद होने के साथ ही भारत पाकिस्तान के रूप में दो मुल्क बन गए। चारों तरफ साम्प्रदायिकता का नँगा नाच होने लगा। विभाजन की इस त्रासदी में उन्हें भी भागना पड़ा और 21 नवम्बर 1947 को कुरुक्षेत्र में वे ट्रेन से पहुंचे। यहां पर बहुत संख्या में शरणार्थी पहुंचे थे, जिस कारण उन्हें कोई स्थान न मिल सका और पास ही लाडवा नामक कस्बे की एक धर्मशाला में उन्होंने शरण ली। इसके बाद जीने के संघर्ष का नया दौर चल पड़ा, जिसके लिए सरकारी छात्रवृर्ति के साथ उन्हें गवर्नमेंट संस्थान अम्बाला में मकैनिक के लिए प्रवेश लिया। जीवन यापन के लिए उन्हें बोरी के टाट को सर्दियों में पहनना पड़ता था।खाने के भी फाके रहते। यहीं पर पढ़ते समय रामजीदास नामक लड़के से उनकी दोस्ती बनी, वे भी पाकिस्तानी शरणार्थी थे,दोनों ने संयुक्त रूप से रहना,खाना आदि की व्यवस्था कर ली। दोनों की आत्मीयता बढ़ी इसी दौरान उनकी मुलाकात सी पी आई के कामरेड ज्ञान सिंह से हुई, जिनके साथ ने उन्हें मार्क्सवादी साहित्य से रुबरु होने का अवसर मिला। किसान मजदूर की मुश्किलें और उनके क्या समाधान हो सकते हैं, ये उन्होंने गहराई से समझा। उन्हें रह रह कर भारत विभाजन की त्रासदी और भयंकर साम्प्रदायिकता बेहद दुःखी करती। अपनी किताबों में उन्होंने अंध-धर्मवाद और अंधविश्वास को बखूबी बयान किया है। इसी कारण वे मानवतावादी बने। अम्बाला से अपनी मकैनिक की ट्रेनिग के बाद वे रेलवे में 1949 में भर्ती हो गए। जल्दी ही 1955 में वे मिस्त्री सुपरवाइजर बन गए, परन्तु वरिष्ठ सुपरवाइजर से विचार भिन्नता और बेवजह के दबाव से वे दुःखी थे। इसी दौरान उन्होंने रेलवे सर्विस कमीशन, इलाहाबाद में नई नौकरी का आवेदन किया जिसमें उनका चयन हो गया। 1956 में लखनऊ,1957 में बीकानेर व 1965 में कालका की रेलवे वर्कशाप में उनकी पोस्टिंग हो गई। रेलवे वर्कशाप कालका में वे मजदूर आंदोलन से जुड़ गए। एक बार चेयरमैन, रेलवेबोर्ड

शिमला जाने के लिए कालका पहुंचे, मजदूरों ने अपनी मांगों को लेकर उनका घेराव किया, इसी दौरान मजदूरों को खदेड़ने के लिए पुलिस ने गोली चला दी और इस पुलिसिया आतंक से 5 मजदूर मारे गए। इस प्रदर्शन में उन्होंने बढ़-चढ़ कर भाग लिया था। उन्होंने रेलवे वर्कशॉप में अपने कार्यकाल के दौरान मजदूरों को अंधविश्वास, धर्म वाद से मुक्त करने के अपने प्रयास जारी रखे। कई आपराधिक और शराबी मजदूरों को जागरूक किया, अनेक वर्कर को आगे पढ़ाई के लिए प्रेरित किया। लखनऊ में रहते हुए भी वे वर्कर्ज यूनियन से जुड़े रहे लेकिन भ्रष्ट नेताओं के आचरण के कारण वे इसमें अपनी आवाज उठाने लगे और सुधारवादी मोर्चा गठित किया। कैंटीन प्रबन्धन में यूनियन की बजाए सुधारवादी मोर्चे को सफलता मिल गई, भृष्ट नेताओं ने दुष्प्रचार कर उन्हें नक्सलवादी घोषित करने लगे। जिस कारण वहाँ से फिर अमृतसर वर्कशाप में उनका स्थान्तरण हो गया, लेकिन वे विरोध स्वरूप अवकाश पर चले गए, इसके उपरांत फोरमैन के रूप में पदोन्नति होने पर उन्हें जोधपुर कार्यभार संभाला, लेकिन शीघ्र ही वे अमृतसर आ गए, जहां पर उनका सबसे ज्यादा मन लगा। जिसकी स्मृतियों को उन्होंने अमृतसर शहर मेरे सपनों का में सहेजा है। वे यहां की सामाजिक और सांस्कृतिक सभाओं से जुड़े और ज्ञान को विस्तार दिया। 1972 को उनका स्थानांतरण रेलवे वर्कशाप जगाधरी में हो गया, जहां पर फिर वे अपनी रिटायरमेंट 28 फरवरी 1986 तक रहे और पी एम ओ के पद से सेवानिवृत्त हुए। इस समय के दौरान उन्होंने सामाजिक और सांस्कृतिक गतिविधियों में बढ़ चढ़ कर भाग लिया। रेलवे में वर्कर्ज़ को लेकर एक भांगड़ा टीम भी बनाई व पौशाक सज्जा का कार्य भी स्वयं करते थे। इस तरह उन्होंने यमुनानगर को ही अपना स्थाई निवास बना लिया, उनकी शादी शांति देवी से हुई जिनसे 6 पुत्रों ने जन्म लिया। वे एक जगह लिखते हैं कि पुत्री होने की चाह में उनका परिवार बड़ा हो गया था। बाद में एक दुःखदायी घटनाक्रम में उनका सबसे छोटा लड़का अकाल मृत्यु को प्राप्त हो गया, जिसका उनके कोमल मन पर बहुत प्रभाव पड़ा। उन्होंने बहुत बार ये ज़िक्र किया कि वे इस सदमे में उदासी रोग तक की चपेट में आ गए थे, और कई शारीरिक बीमारियों ने उन्हें घेर लिया, लेकिन हौसलें से इस सदमे से निकलने के बाद वे सामाजिक और सांस्कृतिक गतिविधियों में जी जान से लग गए। उन्होंने असंगठित मजदूरों को एकजुट करने के प्रयास किए। इसी समय पर तर्कशील आंदोलन पँजाब हरियाणा में संगठित होने लगा था। वे जी जान से इससे जुड़ गए। अथक योद्धा के रूप में वे अंत तक तर्कशील आंदोलन से जुड़े रहे। पाखण्डी तांत्रिकों, बाबाओं के खिलाफ एक बार आंदोलन इस तरह छा गया कि यमुनानगर शहर इससे मुक्त तक हो गया। वे हर रोज पाखंडियों की तलाश में लगे रहते उन्हें सीधे तर्कशील सोसायटी की चुनौती देते। जिस कारण उन्हें कई बार हमलों का भी सामना करना पड़ा। मुकद्दमे बाजी में भी फंस गए और एक बाबा ने झूठा केस बना कर उन्हें एक साल की कैद की सजा भी सुनवा दी। जिसमे उनके लड़के को भी शामिल किया गया। लेकिन जिस महिला के कारण ये केस बना था, वे उनके आगे आ कर रो पड़ी कि उनकी सहायता करने के कारण सजा मिली है। उसने दबाव बना दिया कि वह बाबा से समझौता करेगी और उन्हें जेल जाने से रोकेगी। लेकिन वे कोई समझौता न कर जेल जाने को तत्पर हो गये ें। आखिर महिला ने समझौता कर उन्हें जेल जाने से रोक दिया।

जीवन के सफर में 1994 में उनकी पत्नी सदा के लिए बिछुड़ गई। एक दुर्घटना में उनका मैनेजर पुत्र भी मृत्यु का ग्रास बन गया परन्तु वे अडिग विभिन्न अंधविश्वास पूर्ण घटनाओं में अगवाही करते रहे। गणेश दुग्धपान, मन्दिर में छत से अमृत टपकना, बंगाली मजदूरों के लिंग छोटे होना, महुआ पेड़ की पूजा आदि अंधविश्वास पूर्ण घटनाओं पर वैज्ञानिक पक्ष रख कर जन मानस को जागरूक करते रहे। उनका सबसे प्रिय कार्य था स्कूली बच्चों को वैज्ञानिक चेतना से लैस करना। वे घण्टों भर बच्चों के बीच वक्तव्य देते रहते, उन्हें प्रश्न पूछने को प्रेरित करते। वे लंबे समय तक तर्कशील सोसायटी यमुनानगर के प्रधान रहे। उनके कार्यो की बदौलत

तर्कशील सोसायटी हरियाणा के राज्य प्रधान भी रहे। इसके अतिरिक्त ह्यूमैन हेल्प लाईन, हरियाणा विज्ञान मंच, ज्ञान विज्ञान समिति, रेड क्रॉस, नशा मुक्ति अभियान, गरीब बच्चों के लिए निःशुल्क शिक्षा केन्द्र, क्राइम तहकीकात आदि संस्थाओ में भी सक्रिय भूमिका निभाते रहे। जीवन के अंत तक तर्कशील पथ पत्रिका के मुख्य सम्पादक, मुद्रक, मालिक सभी वे रहे। बृद्धावस्था के कारण वे लिखने में असमर्थ हो गए थे, जिस कारण वे बोल कर अपने लेख लिखवाते थे। यमुनानगर के बहुत साथी उनके पास बैठ कर उनके लेखों को कलमबद्ध करते जो लगातार तर्कशील पथ पत्रिका में छपते रहे और इसी प्रकार वे अपने अनुभव की पांच किताबें लिखीं। मैं कौन हूँ, अतीत के साए, झूठ की पूजा, उजाले की ओर, मानवता का वध और एक किताब दर्पण प्रकाशन अधीन है। उनके अनुभव और कार्य इन किताबों में संकलित हैं, जिन्हें पढ़ कर हमें मार्गदर्शन मिलता है। उनकी स्मृतियां तर्कशील कार्यकर्ताओं के मन पर अमिट हैं। उनका सतत् संघर्ष हम सब की प्रेरणा है।

नामवर सिंह का चले जाना

-गुरमीत अम्बाला

हिंदी साहित्य के चमकते सितारे डा. नामवर सिंह अब हमारे बीच नहीं रहे। 15 जनवरी, 2019 को राते उन्हें गहरी चोट लगी, अस्पताल में भर्ती होने के बाद 19 फरवरी को अपने असंख्य प्रशंसकों को छोड़ कर से सदा के लिए प्रकृति की गोद में विलीन हो गये। हिंदी साहित्य में एक आलोचक के रूप में जो ख्याति उन्हें मिली वह अद्भुत है। वे एक आत्ममुगध लेखक नहीं थे, बल्कि बौद्धिक जगत् के साथ ही छात्रों, नौजवानों, किसानों, मजदूरों के बीच जनतांत्रिक मूल्यों को फैलाते रहे। रूढ़िवादिता, जड़ता, अंधविश्वास, व्यक्तिवाद के खिलाफ चेतना जगाने के लिए वे देश भर में घूमते रहे। उनका जीवन अडिग पर्वत की तरह रहा। वे एक ऐसे वामपंथी चिंतक और आलोचक थे जो सभी खेमों में मान्य थे। वह प्रगतिशील लेखक संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष और पथ-प्रदर्शक थे। यद्यपि उन्हें आलोचक के रूप में उनकी ख्याति रही, मगर वे एक जन कवि भी थे। हाशिए पर के लोगों के लिए उनका मन गहरी संवेदना से भरा था।

मार्क्सवाद को उन्होंने केवल चिंतन के आधार पर ही नहीं देखा, बल्कि उसमें से जीने के अंशों को आत्मसात भी किया। उन्होंने समाज को मानवीय बनाने वाले सौंदर्य सिद्धांत के रूप में मार्क्सवाद को एक वैचारिक ज्ञानराशि के तरह स्वीकार किया। वह एक लेखक के साथ एक प्रखर वक्ता भी थे। एक भरपूर जीवन 93 वर्ष जीने के बाद वे समाज के लिए बहुत कुछ छोड़ कर गये। उनका जाना एक खाली जगह बना गया है। तर्कशील परिवार उनके चले जाने पर गहरी संवेदना व्यक्ति करता है।

स्मृति-शेष

दिनांक 1, फरवरी 2019 को तर्कशील सोसायटी हरियाणा के प्रधान गुरमीत सिंह के पिताजी स. रघुबीर सिंह का निधन हो गया। वे 79 वर्ष के थे। उनके निधन पर सोसायटी की ओर से गुरमीत सिंह व उनके परिवार के प्रति संवेदना प्रकट की जाती है।

तर्कशील सोसायटी हरियाणा के राज्य सचिव राजेश पेगा के चाचा जी, दलबीर सिंह, गांव पेगां (कैथल) का 59 वर्ष की उम्र में बीमारी के चलते दिः 23 जनवरी 2019 को देहांत हो गया। सोसायटी साथी के गम में सहभागी बनते हुए दुःख व्यक्त करती है।

केस रिपोर्ट

दर्द जब हद से गुज़र जाए

बलवंत सिंह, लैक्चरार

सुरेश के घर में कभी कहीं पर तो कभी कहीं पर तीन दिन से लगातार आग लग रही थी। पहले दिन वाशिंग मशीन के पास धोने के लिए रखे गये कपड़ों में अचानक ही आग लग गई। फिर कुछ देर के पश्चात् घर के अंदर चारपाई पर रखे हुए कुछ कपड़ों में आग लग गई। अगले दिन कमरे के अंदर पेटी के ऊपर रखे हुए कपड़ों में आग लग गई। उस से अगले दिन स्टोर में पड़े हुए पुराने सामान को आग लग गई। ज्योही घर में किसी जगह पर आग लगती उसी समय सुरेश की पत्नी सुनीता बेसुधर हो कर गिर जाती। काफी समय के पश्चात् जब सुनीता को होश आता तो वह बताती कि एक आदमी ने मेरा गला दबा कर मुझे गिरा दिया था।

सुरेश और प्रकाश दो भाई थे। दोनों ही शादी शुदा थे। गांव मेंउनकी 8-10 एकड़ कृषि योग्य जमीन थी। सुरेश खेती का काम करता था जबकि प्रकाश किसी प्राईवेट कंपनी में नौकरी करता था।उनके पिता को अधरंग का भयंकर दौरा पड़ जाने के कारण वह चल फिर नहीं सकता था। खेती करने एवं एक भाई के प्राईवेट कंपनी में नौकरी करने से उनका गुजारा बहुत अच्छी तरहसे चल रहा था। चाहे अपने पिता की बीमारी पर काफी खर्च हो चुका था परंतु उनकी अर्थिक स्थिति फिर भी ठीक ठाक थी।

इससे पहले भ ीउनके घर में कभी-कभार आग लग जाने की एवं घर में रखे हुए कपड़े कट जाने की घटनाएं हो जाया करती थीं। इसके इलाज के लिए वे आसपास के बाबाओं के साथ-साथ गंगोह वाले पीर पर और फिर कलियर वाले पीर की मज़ार पर चौकियां भरते रहे थे। पहले तो जब उनके घर में कभी ऐसी घटना घट जाती तो वे किसी बाबा अथवा पीर की चौकी पर चले जाते और दो-चार महीने शांति के साथ गुज़र जाते थे। परंतु अब लगातार ही जब कहीं न कहीं आग लगने लग गई और साथ ही घर की एक बहू भी बेहोश होने लग गई तो वे अत्याधिक परेशान हो गये। वे बाबाओं और पीरों की चौकियों पर जाकर माथा रगड़ते रहे परंतु उनकी समस्या और अधिक विकराल होती चली गई।

ऐसे में उनका एक रिश्तेदार जो कि मेरा परिचित था, उन्हें लेकर मेरे पास मनोरोग परामर्श केंद्र में आ गया। सुनीता भी उनके साथ ही आई थी। मैंने परिवार के अन्य सदस्यों से बारी-बारी से हालात की जानकार ली और फिर सुनीता को बुला लिया। पहले तो मैंने सुनीता को आदमी दिखने एवं आदमी द्वारा उसका गला दबा कर बेसुध करने का मनोवैज्ञानिक ढंग से मनोभ्रम दूर किया जिससे वह अपने शरीर को बिल्कुल हल्का और मन को पूरी तरह से प्रसन्न महसूस करने लग गई। फिर मेरे द्वारा मनो वैज्ञानिक ढंग से पूछने पर उसने स्वीकार किया कि जब वह निराशा और गुस्से से बेकाबू हो जाती है तो उसे पता ही नहीं चलता कि कब वह माचिस के द्वारा घर में आग लगा देती रही है तथा कैंची के द्वारा कपड़ों को काट देती रही है। उसने यह भी बताया कि बाबाओं व पीरों की चौकियों पर जा कर वह 'खेलने' लग जाती थी और 'खेल' की अवस्था में कोई 'चीज' उस के मुंह से हमेशा बोलती थी कि 'मैं इस घर में बहुत तंग हूं, मुझे यहां से मुक्ति दिलाओ।' जब मैंने उसे समझाया कि 'यह तो तुम्हारे अंतर्मन की आवाज़ होती थी, इस घर में तुम्हारी सोच के अनुसार तुम्हारे साथ अवश्य ही कोई न कोई अन्याय होता रहा होगा । तुम सीधे तौर पर उसे बेइंसाफी का विरोध नहीं कर पा रही होगी। तुम्हारे अंतर्मन की यही वेदना बाबाओं की चौकियों पर सिर घुमा कर खेलते समय कोई 'ओपरी चीज' बन कर बोलती रही है। जिसे बाबाओं ने भूत-प्रेत का साया घोषित कर दिया और तुम्हारे परिवार वाले और तुम सभी चेतन तौर

पर मानने लग गये कि तुम्हारे ऊपर किसी भूत-प्रेत का साया है।' मेरे द्वारा ऐसा समझाने पर उसकी आंखें में आंसू आ गये और वह सिसकियां भर कर रोने लग गई। थोड़ी दे आंसू बहाने के पश्चात् जब वह शांत हुई तो उसने ससुराल में उसको दी गई यातनाओं और प्रड़ताड़नाओं के अपने दर्द की व्यथा को इस प्रकार से ब्यान किया जिसके कारण वह लम्बे समय तक कथित भूत-प्रेतों की शिकार बनी रही थीः

सुनीता अपने मां-बाप की लाडली बेटी थी। उस का पिता गांव में ऐ छोटा सा किसान था। अपनी थोड़ी से जमीन पर खेती करके वह अपने परिवार का गुज़ारा चलाता चला आ रहा था। गांव में बारहवीं तक का स्कूल होने के कारण सुनीता ने बारहवींतक की पढ़ाई पूरी कर ली थी। अब मां-बाप को सुनीता की शादी की चिंता होने ली थी। इसी दौरान एक रिश्तेदार ने बीच में बिचौला बन कर सुरेश कुमार के साथ उसका रिश्ता तय करवा दिया और जल्दी ही दोनों की शादी हो गई। शादी में उसके मां-बाप ने अपनी हैसियत के अनुसार दहेज भी दिया था। परंतु वे दहेज में मोटर साईकिल नहीं दे पाये थे। उन दिनों मध्यवर्गी परिवारों में किसी को दहेज में मोटर साईकिल मिलना काफी प्रतिष्ठा की बात होती थी।)

शादी के बाद कुछ दिनों तक तो सब कुछ सामान्य चलता रहा परंतु कुछ समय के पश्चात् सुरेश ने दहेज में मोटर'साईकिल न मिलने की शिकायत करनी शुरू कर दी। कुछ समय तक तो सुनीता ने इसे गंभीरता से नहीं लिया और यह ही समझती रही कि उसके पतिदेव हंसी-मजाक में ही ऐसा कह रहे हैं। परंतु जब उसकी सास ने भी बात-बात पर उसे ताने देने शुरू करदिए तो वह समझ गई कि दहेज में मोटर साईकिल न मिलनेपर ही उसका पति और सास उसे बात-बात पडताड़ित करते रहते हैं।

जब बात हद से ज्यादा बढ़ गई तो उसने सारी बात अपने मां-बाप तक पहुंचा दी। सुनीता की शादी पर किए गए खर्च का कर्ज अभी उतरा भी नहीं था, ऐसे में मोटर साईकिल दहेज के रूप में देने की बात उनके बस से बाहर थी। इसी बात को लेकर एक-दो बाद पंचायत भी हुई परंतु समस्या का कोई समाधान नहीं निकल सका। परेशान हो कर सुनीता के मां-बाप उसे अपने साथ ले गये। जिद के चलते सुनीता के ससुराल वाले उसे लेने नहीं आए और वह भी अपमानित होकर अपने आप अपने ससुराल में जाना नहीं चाहती थी। इसी जिदबाज़ी में कई महीन`बीत गए। इसी दौरान सुनीता ने एक पुत्री को जन्म दे दिया। धीरे-धीरे दोनों ओरसे गुस्सा शांत होता चला गया और इसके काफी अर्से के बाद दोनों परिवारों का पंचायती तौर पर राजीनामा हो गया और सुनीता सम्मान सहित अपने ससुराल में आ गई।

इसी दौरान सुरेश के दूसरे भाई की भी शादी हो गई। अब सुनीता की सास अपनी दूसरी बहू के साथ ज्यादा घुल-मिल कर रहती थी। समय बीतता गया और कुछ महीनों के पश्चात् सुनीता ने एक पुत्र को जन्म दिया और उसके कुछ समय के पश्चात् उसकी देवरानी के घर भी एक पुत्र उत्पन्न हो गया। सारा परिवार अत्यंत प्रसन्न था। कुछ समय तक परिवार में सुख एवं शांति बनी रही, परंतु धीरे-धीरे परिवार बिल्कुल नये प्रकार की समस्याओं से परेशान रहने लगा। अब सुनीता को दौरे पड़ने शुरू हो गये। कई बार तो दौरे के पश्चात् सुनीता लम्बे समय तक बेसुध होकर पड़ी रहती। जब परिवार वाले उसे किसी बाबा अथवा पीर के चौकी पर जाते तो उसे कुछ दिन तक आराम रहता परंतु कुछ दिनों के पश्चात् समस्या और भी गंभीर हो जाती। चौकियों पर जाने के पश्चात् अब कभी-कभी सुनीता सिर घुमा कर खेलने लग जाती और उसके मुंह से भूत-प्रेत बोलने लग जाते। सिर घुमाते हुए ज्यादातर उसकी ज़ुबान से यही बोल निकलते कि 'इस घर में मैं बहुत ही दुखी हूं....)।

धीरे-धीरे उनकी समस्या और भी विकराल होती चली गई। अब सुनीता को दौरा पड़ने से पूर्व घर में कहीं न कहीं आग लग जाती अथवा किसी न किसी के कपड़े अपने आप कट जाते। ये सभी घटनाएं सुनीता ही करती थी, क्योंकि पंचायती तौर पर राजीनामा होने के शर्त अब वे मोटर साईकिल की मांग तो नहीं रखते थे परंतु बात-बात पर उसे परेशान अवश्य किया करते थे। सुरेश अपनी मां की जायज़ व नाजायज़ सभी बातें मान लिया करता था परंतु सुनीता की हर बार को अनसुना कर दिया

करता था। जब सुनीता घर के काम में लगी होती तो उसकी सास अथवा सुरेश बच्चे को नहीं संभालते थे, जबकि सुरेश का भाई अपने बच्चे को गोदी में उठाए फिरता रहता था। इस बात का सुनीता को बहुत रंज होता था। उसे गुस्सा तो बहुत आता था, परंतु वह अपना सारा गुस्सा मन मेंही पी जाती थी। गुस्सा उसके मन में फैलता चला जाता था और वह अवचेतन अवस्था में जाकर कपड़े काटने अथवा जलानेकी घटनाएं कर दिया करती थी।

यदि सुनीता के ससुराल वालों का व्यवहार उसके साथ नकारात्मक न होता तथा वे दहेज के लालची नहोते तो सुनीता के मन पर बोझ न पड़ता और न ही वह इस प्रकार से मनोरोगी बनती। मनोरोगी बनने के कारण से ही वह अवचेतन तौर पर अपना तथा अपने ही घर का नुकसान करती रही। सामाजिक व्यवस्था के ज़ुल्म की चक्की में पिसती हुई जब वह मनोरोगी बन ही गई थी तो उस समय उसके परिवार वाले यदि शुरू में ही वैज्ञानिक चिंतन वालों से उसकी समस्या के बारे में मशवरा ले लेते तो सारे परिवार को ही इस वेदना से गुज़रना न पड़ता और न ही उन का इतना अर्थिक रूप से नुकसान होता।

तब मैंने लगातार तीन-चार बार उसे मनोरोग परामर्श केंद्र पर बुला कर त्रउसके साथ मनोवैज्ञानिक ढंग से काऊंसलिंग करके उसका मनोबल बढ़ाया। तब से वह बिल्कुल ठीक है और उनके घर में कभी भी ऐसी विचित्र घटना नहीं घटी। अब वह अपने मानसिक दर्द से उबर कर पूरे परिवार के साथ प्रसन्नतापूर्वक जीवन व्यतीत कर रही है।

(नोट-यह एक सत्य घटना है, विशेष कारणों से पात्रों के नाम व स्थान बदल दिए गए हैं।)

आ गए हैं चुनाव मेरे देश में

-डॉ. फूल सिंह लुहानी

आ गए हैं चुनाव मेरे देश में
लुटेरे आएंगें नेताओं के भेष
खूब चलेगी शराब, दिखलाएंगे ख्वाब
देंगें खूब धर्म, जाति, क्षेत्र का दबाव
कुछ करवाएंगे दंगे मेरे देश में
गुंडें आएंगें नेताओं के भेष में।
आ गए चुनाव मेरे देश में।

कुछ मुद्दा जात का बनाएंगें
को मुद्दा धर्म का उठाएंगें
कुछ कुनबे अपने को बढ़ाएंगें।
कुछ साम्प्रदायिकता फैलाएंगे अब मेरे देश में।
नेता आएंगें साधुओं के भेष में।
आ गए हैं चुनाव मेरे देश में।

ढूंढ़ेंगें कमियां गत सरकारों की
जुमलेबाजी होगी नए-नए नारों की
साख होगी दांव पर, राजनीतिक सरदारों की।
जहर घोलेंगें नेता शांत-से परिवेश में
आ गए हैं चुनाव मेरे देश में।

करो खत्म सत्ता अब पुश्तैनी परिवारों की।
लाओ अब सरकार, असली के हकदारों की।
लड़नी है लड़ाई अब काम व रोजगारों की।
मुफ्त बिजली-पानी, मुफ्त आटा-दाल
नहीं है ज़रुरत मेरे देश में
आ गए हैं चुनाव मेरे देश में।

कहीं अब गाय कटवाएंगे
कहीं अब धर्म पर भड़काएंगें
कहीं दंगें जाति पर करवाएंगें
ले जाएंगे कुर्सी फिर से दंगें-पंगे व क्लेश में।
आ गए हैं चुनाव मेरे देश में।

सावधान रहना इनकी ओछी-टेढी चालों से।
लूट खाया देश इन्होंने पिछले बहत्तर सालों से।
छीन लो सत्ता अब इन पुश्तैनी कंगालों से।
भावना में बहकर आ न जाना
अब किसी द्वेष में।
आ गए चुनाव मेरे देश में।

लेखकों/पाठकों के लिए :

1. रचना की मूल प्रति ही भेजें, फोटो प्रति स्वीकार्य नहीं होगी।
2. अस्वीकृत रचना की वापसी हेतू पांच रूपये का डाक टिकट लगाकर लिफाफा संलग्न करें।
3. रचना बायीं तरफ हाशिया छोड़कर अशुद्धियों रहित साफ-साफ लिखी या टाईप होनी चाहिए
4. रचना सोसायटी के उद्देश्यों के अनुरूप होनी चाहिए।
5. पत्रिका में छपी रचनाओं पर प्रतिक्रिया साधारण पोस्ट कार्ड से भी भेजी जा सकती है।
6. लेख, कहानी, कविता तथा रचनाओं पर प्रतिक्रिया ईमेल tarksheeleditor @gmail.com अथवा वट्सएप नं. 9416036203 भी भेजी जा सकती है।
7. पत्र व्यवहार करते समय लिफाफे पर पूरे पैसों के टिकट लगाकर ही प्रेषित करें। बैरंग पत्र हो जाने की स्थिति में स्वीकार नहीं किया जाएगा।
8. अनुवादित रचना के साथ मूल लेखक का अनापत्ति पत्र भी संलग्न करें।
9. पत्रिका में छपी किसी भी रचना पर लेखक को मानदेय का प्रावधान नहीं है क्योंकि यह पत्रिका पूर्णतःअव्यवसायिक/अवैतानिक संपादक एवं संपादक मंडल द्वारा अन्धविश्वासों, पाखण्डों, रूढ़ियों के विरूद्ध जागृति लाने हेतु जनहित में प्रकाशित की जाती है।

ठोस नतीजे चाहिए

-रामेश्वर गुप्त

शोषण हो तेरे सपनों का, गर करना स्वीकार नहीं ।
गहन नींद में सोया है तू, ये तेरा अधिकार नहीं।

खुद अपने अधिकर की खातिर, लड़ना सीख, मरना सीख
स्वाभिमान की नैया पे चढ़, साथी पार उतरना सीख,
मुश्किल भी हों राहें तो क्या, अंधेरों से लड़ना सीख,
कर्म पथ पर आके साथी, पग कांटों पे धरना सीख,
परजीवी हो कर के जीना, जीने में शुमार नहीं।

वक्त पुकार रहा है तुझको, अब लामबंद होना होगा,
उच्च शिखर को पाना है तो, तरक्की पसंद होना होगा,
लाठी-गोली खानी होगी, जेलों में बंद होना होगा,
हर तरह की कुर्बानी को, तुझे रजामंद होना होगा,
हक छीन लो आगे बढ़ कर, भीख अगर स्वीकार नहीं।

इंकलाब की सिंह गर्जना, तुम आवाज मिलाओ साथी,
समर पुकार रहा है हमको, मिल कर हाथ उठाओ साथी,
जुल्म सहन नहीं करेंगे, सब को पाठ पढ़ाओ साथी,
आजादी परवानों के संग, अपने कदम मिलाओ साथी,
बंद करो य`धोखे बाज, हम इतने लाचार नहीं।

एक सूत्र में नहीं बंधे तो, बेड़ा पार नहीं होगा,
हमारे सपनों की दुनिया का, वो विस्तार नहीं होगा,
भेड़ चाल से अपना साथी, अब तो उद्धार नहीं होगा।
'रामेश्वर' तू जाग नींद से, वक्त बेकार नहीं होगा,
ठोस नतीजे मिलने चाहिएं, बस खाली प्रचार नहीं।

सहयोग

तर्कशील सोसायटी के व्योवृद्ध साथी आर.पी. गांधी के निधन पर उनकी स्मृति में उनके परिवार की ओर से तर्कशील सोसायटी हरियाणा को 10000/- (दस हजार रूपये) का सहयोग प्राप्त हुआ है। तर्कशील सोसायटी हरियाणा उनका इस सहयोग के लिए हार्दिक आभार प्रकट करती है।

तर्कशील सोसायटी हरियाणा की अपील

हरियाणा के असंध में शीघ्र ही 'तर्कशील केंद्र' के रूप में एक भवन निर्माण की योजना प्रस्तावित है। जिसके लिए सोसायटी के कार्यकर्ता मेहर सिंह विर्क ने असंध जिला करनाल में एक भूखण्ड प्रदान किया है। अतः सभी साथियों से अपील की जाती है कि इस योजना हेतु बढ़-चढ़ कर आर्थिक सहयोग करें। **-राज्य कार्यकारिणी**

तर्कशील सोसायटी पंजाब (रज़ि) के वैज्ञानिक चेतना के प्रचार प्रासार के कार्य को सम्मान प्राप्ति के अविस्मरणीय पल



27 जनवरी 2019 बाल रंग मन्दिर आडिटोरियम पूणे, महाराष्ट्र के सम्मान समारोह में सोसायटी के राज्य प्रभारी राजेन्द्र भदौड़ एवं साथ में महाराष्ट्र के साहित्याकार, कलाकार, बुद्धिजीवी एवं सामाजिक कार्यकर्ता।



प्रसिद्ध प्रगतिशील फिल्मकार अमोल पालेकर से डा. नरेंद्र दाभोलकर स्मृति सम्मान 2018 प्राप्त करते हुए तर्कशील सोसायटी पंजाब रजि की राज्यकार्यकरिणी के सदस्यगण



प्रसिद्ध गज़लकार, वैज्ञानिक गौहर रज़ा को सम्मानित करते हुए तर्कशील सोसायटी के राज्य कार्यकारिणी सदस्यगण

कृष्ण बरगाड़ी स्मृति सम्मान समारोह 2019 : कुछ झलकियां



मीडिया एंव साम्प्रदायिकता विषय पर अपने विचार प्रस्तुत करते हुए गौहर रज़ा एंव शबनम हाशमी



सेमिनार कक्ष, तर्कशील भवन बरनाला (पंजाब) में सम्मान समारोह में उपस्थित तर्कशील कार्यकर्ता एंव स्नेही मित्र।



कृष्ण बरगाड़ी स्मृति सम्मान 2019 प्राध्यापक बलवंत सिंह (सम्पादक तर्कशील पथ एंव पूर्व राज्य प्रधान तर्कशील सोसायटी हरियाणा) को सम्मानित करते हुए आदरणीय राजेन्द्र कौर बरगाड़ी एंव सोसायटी की राज्यकार्यकरिणी

If undelivered please return to :

Tarksheel

Tarksheel Bhawan, Tarksheel Chowk,
Sanghera By Pass, BARNALA-148101
Post Box No. 55
Ph. 01679-241466, Cell. 98769 53561
Web : www.tarksheel.org
e-mail : tarkshiloffice@gmail.com

BOOK POST
(Printed Matter)

To ....

....

....

प्रो. बलवंत सिंह, प्रकाशक, मुद्रक, स्वामी, संपादक मकान न. 1062, आदर्श नगर, पिपली, जिला कुरूक्षेत्र - 136131 (हरियाणा) द्वारा रमणीक प्रिंटरज, नजदीक लक्ष्मी सिनेमा, जिला यमुनानगर - 135001 (हरियाणा) से मुद्रित करके तर्कशील सोसायटी पंजाब व हरियाणा के माध्यम से वितरण हेतु जारी किया।